ॐ अर्हं

जिनागम-ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क २९

[परमश्रद्धेय गुरुदेव पूज्य श्रीजोरावरमलजी महाराज की पुण्य-स्मृति में आयोजित]

श्रुतस्थविरप्रणीत-उपाङ्गसूत्रद्वय

सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति

[मूलपाठ, प्रस्तावना तथा परिशिष्ट युक्त]

प्रेरणा □
(स्व.) उपप्रवर्त्तक शासनसेवी स्वामी श्री ब्रजलालजी महाराज

आद्यसंयोजक तथा प्रधान सम्पादक □
(स्व०) युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी महाराज 'मधुकर'

सम्पादक □
मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'

मुख्य सम्पादक □
स्व. पं. शोभाचन्द्र भारिल्ल

प्रकाशक □
श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

श्री जिनागम ग्रन्थमाला के २९वें ग्रन्थाङ्क का द्वितीय संस्करण आगमप्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इसमें सूर्यप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति दो आगमों का समावेश किया गया है। दोनों का एक साथ मुद्रण कराने का हेतु क्या है, इस विषय में आगम-अनुयोग-प्रवर्तक मुनि श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' ने अपने सम्पादकीय में विस्तृत चर्चा की है, अतएव यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

प्रस्तुत दोनों आगम मूलपाठ एवं परिशिष्ट आदि के साथ ही प्रकाशित किये जा रहे हैं। अर्थ-विवेचन आदि नहीं दिये गये हैं। इसका कारण यह है कि इनमें आए कतिपय पाठों और उनके अर्थ में मतैक्य नहीं हो सका है। इसके अतिरिक्त इनका विषय ज्योतिष है जो सर्वसाधारण के लिए दुरूह है। इस विषय की चर्चा भी सम्पादकीय में की गई है।

प्रस्तुत प्रकाशन के अनेक आगम कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में निर्धारित किये गए हैं। अतएव यह आवश्यक समझा गया कि इनकी उपलब्धि निरन्तर बनी रहे। इस कारण समस्त आगमों में जिनकी प्रतियाँ समाप्त हो रही हैं, उनके द्वितीय संस्करण प्रकाशित करा दिए गए हैं।

सन्तोष का विषय है कि ग्रन्थमाला के इन प्रकाशनों का समाज एवं विद्वद्वर्ग ने पर्याप्त आदर किया है। आशा है भविष्य में इनका और अधिक प्रचार-प्रसार होगा और श्री आगम प्रकाशन समिति का प्रयास अधिक सफल और सुफलप्रदायक सिद्ध होगा।

अन्त में आगम-अनुयोग के विशाल कार्य में व्यस्त होते हुए भी मुनिश्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' ने मूलपाठ का सम्पादन कर व डाक्टर श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी ने महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना लिखकर जो सहयोग प्रदान किया उसके लिए आदरपूर्वक आभार मानते हैं। साथ ही स्व. पं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने इसका आद्योपान्त अवलोकन किया एवं सहयोगी कार्यकर्त्ताओं से सहयोग प्राप्त हुआ तदर्थ उनके भी हम आभारी हैं।

निवेदक

रतनचंद मोदी	अमरचन्द मोदी	सायरमल चोरड़िया
कार्यवाहक अध्यक्ष	मंत्री	महामंत्री

श्री आगम प्रकाशन-समिति ब्यावर

सम्पादकीय

ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति अर्थात् चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति

[प्रथम संस्करण से]

सूर्यप्रज्ञप्ति के सूत्रपाठ

पूर्व प्रकाशित सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रों से प्रस्तुत सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्र यदि अक्षरशः मिलाना चाहेंगे तो नहीं मिलेंगे। क्योंकि इस संस्करण के सूत्रों को कई पूरक वाक्यों से पूरित किया है, फिर भी सूत्रपाठों की प्रामाणिकता यथावत् है।

आगमों के विशेषज्ञ ही सूत्रपाठों की व्यवस्था के औचित्य को समझ सकेंगे।

सामान्य अन्तर के अतिरिक्त चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति सर्वथा समान हैं, इसलिए एक के परिचय से दोनों का परिचय स्वतः हो जाता है।

उपांगद्वय-परिचय

संकलनकर्ता द्वारा निर्धारित नाम—ज्योषिगणराजप्रज्ञप्ति है।

प्रारम्भ में संयुक्त प्रचलित नाम —चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति रहा होगा। बाद में उपांगद्वय के रूप में विभाजित नाम—चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति हो गये हैं, जो अभी प्रचलित हैं।

प्रत्येक प्रज्ञप्ति में बीस प्राभृत हैं और प्रत्येक प्रज्ञप्ति में १०८ सूत्र हैं।

तृतीय प्राभृत से नवम प्राभृत पर्यन्त अर्थात् सात प्राभृतों में और ग्यारहवें प्राभृत से बीसवें प्राभृत पर्यन्त अर्थात् दस प्राभृतों में "प्राभृत-प्राभृत" नहीं हैं।

केवल प्रथम, द्वितीय और दसवें प्राभृत में "प्राभृत-प्राभृत" हैं।

संयुक्त संख्या के अनुसार सतरह प्राभृतों में प्राभृत-प्राभृत नहीं हैं। केवल तीन प्राभृतों में प्राभृत-प्राभृत हैं।

उपलब्ध चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति का विषयानुक्रम वर्गीकृत नहीं है। यदि इनके विकीर्ण विषयों का वर्गीकरण किया जाए तो जिज्ञासु जगत अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकता है।

वर्गीकृत विषयानुक्रम

चन्द्रप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा —

१. चन्द्र का विस्तृत स्वरूप
२. चन्द्र का सूर्य से संयोग
३. चन्द्र का ग्रहों से संयोग
४. चन्द्र का नक्षत्रों से संयोग
५. चन्द्र का ताराओं से संयोग

सूर्यप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा—

१. सूर्य का विस्तृत स्वरूप
२. सूर्य का चन्द्र से संयोग
३. सूर्य का ग्रहों से संयोग
४. सूर्य का नक्षत्रों से संयोग
५. सूर्य का ताराओं से संयोग
१. चन्द्र, सूर्य के संयुक्त सूत्र
२. चन्द्र, सूर्य, ग्रह के संयुक्त सूत्र
३. चन्द्र, सूर्य ग्रह नक्षत्र के संयुक्त सूत्र
४. चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, ताराओं के संयुक्त सूत्र
१. ग्रहों के सूत्र
२. नक्षत्रों के सूत्र
३. ताराओं के सूत्र
१. काल के भेद प्रभेद
२. अहोरात्र के सूत्र
३. संवत्सर के सूत्र
४. औपमिक काल के सूत्र
५. काल और क्षेत्र के सूत्र

दोनों प्रज्ञप्तियों की निर्युक्ति आदि व्याख्याएँ

द्वादश उपांगों के वर्तमान मान्य क्रम में चन्द्रप्रज्ञप्ति छठा और सूर्यप्रज्ञप्ति सातवाँ उपांग है -इसीलिए आचार्य मलयगिरि ने पहले चन्द्रप्रज्ञप्ति की वृत्ति और बाद में सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति रची होगी।

यदि आचार्य मलयगिरिकृत चन्द्रप्रज्ञप्ति-वृत्ति कहीं से उपलब्ध है तो उसका प्रकाशन हुआ है या नहीं ? या अन्य किसी के द्वारा की गई निर्युक्ति चूर्णि या टीका प्रकाशित हो तो अन्वेषणीय है।

आचार्य मलयगिरि ने सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति में लिखा है —सूर्यप्रज्ञप्तिनिर्युक्ति नष्ट हो गई है[1] अतः गुरु कृपा से वृत्ति की रचना कर रहा हूँ।[2]

नामकरण और विभाजन

सभी अंग-उपांगों के आदि या अन्त में कहीं न कहीं उनके नाम उपलब्ध हैं किन्तु इन दोनों उपांगों की उत्थानिका या उपसंहार में चन्द्रप्रज्ञप्ति या सूर्यप्रज्ञप्ति का नाम क्यों नहीं है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

दो उपांगों के रूप में इनका विभाजन कब और क्यों हुआ ? यह शोध का विषय है।

ग्रह, नक्षत्र, तारा ज्योतिष्क देव हैं—इनके इन्द्र हैं चन्द्र-सूर्य ये दोनों ज्योतिषगणराज हैं।

उत्थानिका और उपसंहार के गद्य-पद्य सूत्रों में "ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति" नाम ही उपलब्ध है किन्तु इस नाम से ये उपांग प्रख्यात न होकर चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति नाम से प्रख्यात हुए हैं।

"ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" का संकलनकर्ता ग्रन्थ के प्रारम्भ में "ज्योतिष-गण-राज-प्रज्ञप्ति" इस एक नाम से की गई स्वतन्त्र संकलित वृत्ति को ही कहने की प्रतिज्ञा करता है।

इसका असंदिग्ध आधार चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी हुई तृतीय और चतुर्थ गाथा है।[3]

१. अस्या निर्युक्तिरभूत्, पूर्वं श्री भद्रबाहुसूरिकृता।
कालिदोषात् साऽनेशद् व्याचक्षे केवलं सूत्रम्॥
२. सूर्यप्रज्ञप्तिमहं गुरूपदेशानुसारतः किंचित्।
विवृणोमि यथाशक्ति स्पष्टं स्वपरोपकाराय॥ सूर्य० प्र० वृत्ति० प्र० १
३. गाहाओ—फुड-विसद-पागडत्थं, वुच्छं पुव्वसुय-सार-णिस्संदं॥
सुहुमं गणिणोवइट्ठं जोइसगणराय-पण्णत्ति॥३॥
नामेण इंदभूइत्ति, गोयमो वंदिऊण तिविहेणं॥
पुच्छइ जिणवरवसहं, जोइसरायस्स पण्णत्ति॥४॥

इसी प्रकार चन्द्र और सूर्य प्रज्ञप्ति के अन्त में दी हुई प्रशस्ति-गाथाओं में से प्रथम गाथा के दो पदों में[1] संकलनकर्त्ता ने कहा है—"इस भगवती ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का मैंने उत्कीर्तन किया है।"

इस ग्रन्थ के रचयिता ने कहीं यह नहीं कहा कि "मैं चन्द्रप्रज्ञप्ति या सूर्यप्रज्ञप्ति का कथन करूंगा," किन्तु "ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" यही एक नाम इसके रचयिता ने स्पष्ट कहा है, इस सन्दर्भ में यह प्रमाण पर्याप्त है।

यह उपांग एक उपांग के रूप में कब माना गया ? और इसके दो अध्ययनों अथवा दो श्रुतस्कन्धों को दो उपांगों के रूप में कब से मान लिया गया ? ऐतिहासिक प्रमाण के अभाव में क्या कहा जाय।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के संकलनकर्त्ता

प्रश्न उठता है—"ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" के संकलनकर्त्ता कौन थे ?

इस प्रश्न का निश्चित समाधान सम्भव नहीं है, क्योंकि संकलनकर्त्ता का नाम कहीं उपलब्ध नहीं है।

"चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति को कइयों ने गणधरकृत लिखा है। सम्भव है इसका आधार चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ की चतुर्थ गाथा[2] को मान लिया गया है। किन्तु इस गाथा से गौतम गणधरकृत है, यह कैसे सिद्ध हो सकता है ?

इसके संकलनकर्त्ता कोई पूर्वधर या श्रुतधर स्थविर हैं, जो यह कह रहे हैं कि "इन्द्रभूति" नाम के गौतम गणधर भगवान् महावीर को तीन योग से वंदना करके "ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" के सम्बन्ध में पूछते हैं।

इस गाथा में "पुच्छइ" क्रिया का प्रयोग अन्य किसी संकलनकर्त्ता ने किया है।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का संकलनकाल

भगवान् महावीर और निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुसूरि—इन दोनों के बीच का समय इस ग्रन्थराज का संकलन-काल कहा जा सकता है, क्योंकि भद्रबाहुसूरिकृत "सूर्यप्रज्ञप्ति की निर्युक्ति" वृत्तिकार आचार्य मलयगिरि के पूर्व ही नष्ट हो गई थी, ऐसा वे सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति में स्वयं लिखते हैं।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति एक स्वतन्त्र कृति है

संकलनकर्त्ता चन्द्रप्रज्ञप्ति की द्वितीय गाथा[3] में पाँच पदों को वन्दन करता है और तृतीय गाथा[4] में वह कहता है कि "पूर्वश्रुत का सार निष्यन्द-झरना" रूप स्फुट-विकट सूक्ष्म गणित को प्रकट करने के लिए "ज्योतिष-गण-राज-प्रज्ञप्ति" को कहूँगा। इससे स्पष्ट ध्वनित होता है—यह एक स्वतन्त्र कृति है।

---

१. गाहा—इय एस पागडत्था, अभव्वजणहियय दुल्लभा इणमो।
उक्कित्तिया भगवती, जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥३॥

२. नामेण इंदभूइत्ति, गोयमो वंदिऊण तिविहेणं।
पुच्छइ जिणवरवसहं, जोइसरायस्स पण्णत्ति ॥४॥

३. नमिऊण सुर-असुर गरुल-भुयंगपरिवंदिए गयकिलेसे।
अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहू य ॥२॥

४. फुड-वियड-पागडत्थं, वुच्छं पुव्वसुय-सारणिस्संदं।
सुहुमं गणिणोवइट्ठं, जोइसगणराय-पण्णत्ति ॥३॥

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ में "ता" का प्रयोग है। यह "ता" का प्रयोग इसको स्वतन्त्र कृति सिद्ध करने के लिए प्रबल प्रमाण है।

इस प्रकार का "ता" का प्रयोग किसी भी अंग उपांगों के सूत्रों में उपलब्ध नहीं है।

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के प्रत्येक प्रश्नसूत्र के प्रारम्भ में "भंते !" का और उत्तर सूत्र के प्रारम्भ में 'गोयमा' का प्रयोग नहीं है। जबकि अन्य अंग-उपांगों के सूत्रों में भंते ! और गोयमा ! का प्रयोग प्रायः सर्वत्र है, अतः यह मान्यता निर्विवाद है कि यह कृति पूर्ण रूप से स्वतन्त्र संकलित कृति है।

ग्रन्थ एक, उत्थानिकाएँ दो

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति की एक उत्थानिका चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी हुई गाथाओं की है और एक उत्थानिका गद्य सूत्रों की है।

इन उत्थानिकाओं का प्रयोग विभिन्न प्रतियों के सम्पादकों ने विभिन्न रूपों में किया है—

१. किसी ने दोनों उत्थानिकाएँ दी हैं।
२. किसी ने एक गद्य-सूत्रों की उत्थानिका दी है।
३. किसी ने पद्य-गाथाओं की उत्थानिका दी है।

इसी प्रकार प्रशस्ति गाथायें चन्द्रप्रज्ञप्ति के अन्त में और सूर्यप्रज्ञप्ति के अन्त में भी दी हैं। जबकि ये गाथाएँ ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के अन्त में दी गई थीं।

संभव है ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति को जब दो उपांगों के रूप में विभाजित किया गया होगा, उस समय दोनों उपांगों के अन्त में समान प्रशस्तिगाथाएँ दे दी गई हैं।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति की संकलन-शैली

चिर अतीत में ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का संकलन किस रूप में रहा होगा ? यह तो आगम-साहित्य के इतिहास-विशेषज्ञों का विषय है किन्तु वर्तमान में उपलब्ध चन्द्रप्रज्ञप्ति तथा सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी गई विषय-निर्देशक समान गाथाओं में प्रथम प्राभृत का प्रमुख विषय "सूर्यमण्डलों में सूर्य की गति का गणित" सूचित किया गया है, किन्तु दोनों उपांगों का प्रथम सूत्र मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का है।

सूर्य सम्बन्धी गणित और चन्द्र सम्बन्धी गणित के सभी सूत्र यत्र-तत्र विकीर्ण हैं। यह, नक्षत्र और ताराओं के सूत्रों का भी व्यवस्थित क्रम नहीं है। अतः आगमों के विशेषज्ञ सम्पादक श्रमण या सद्गृहस्थ इन उपांगों को आधुनिक सम्पादन शैली से सम्पादित करें तो गणित की आशातीत वृद्धि हो सकती है।

प्रथम प्राभृत के पाँचवें प्राभृत-प्राभृत में दो सूत्र हैं। सोलहवें सूत्र में सूर्य की गति के सम्बन्ध में अन्य मान्यताओं की पांच प्रतिपत्तियाँ हैं और सत्रहवें में स्वमान्यता का प्ररूपण है।

इस प्रकार अन्य मान्यताओं का और स्वमान्यता का दो विभिन्न सूत्रों में निरूपण अन्यत्र नहीं है।

संकलनकाल

गणधर अंग आगमों को सूत्रागमों के रूप में पहले संकलित करता है और श्रुतधर स्थविर उपांगों को बाद में संकलित करते हैं। यह संकलन का कालक्रम निर्विवाद है।

अंग आगमों को संकलित करने वाला गणधर एक होता है और उपांग आगमों को संकलित करने वाले श्रुतधर विभिन्न काल में विभिन्न होते हैं अतः उनकी धारणाएँ तथा संकलन पद्धति समान संभव नहीं है।

स्थानांग अंग आगम है। इसके दो सूत्रों में[1] चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के नामों का निर्देश दुविधाजनक है, क्योंकि स्थानांग के पूर्व चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति का संकलन होने पर ही उनका उसमें निर्देश सम्भव हो सकता है।

इस विपरीत धारणा के निवारण के लिए बहुश्रुतों को समाधान प्रस्तुत करना चाहिए, किन्तु समाधान प्रस्तुत करने से पूर्व उन्हें यह ध्यान में रखना चाहिए—यह संक्षिप्त वाचना की सूचना नहीं है—ये दोनों अलग-अलग सूत्र हैं।

नक्षत्र-गणनाक्रम में परस्पर विरोध है

चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति दशम प्राभृत के प्रथम प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र-गणनाक्रम की स्वमान्यता का प्ररूपण है—तदनुसार अभिजित के उत्तराषाढ़ा पर्यन्त २८ नक्षत्रों का गणनाक्रम है किन्तु स्थानांग अ. २, उ. ३, सूत्रांक ९५ में तीन गाथाएँ नक्षत्र गणनाक्रम की हैं और यही तीन गाथाएँ अनुयोगद्वार के उपक्रम विभाग में सूत्र १८५ में हैं। इनमें कृत्तिका से भरणी पर्यंत नक्षत्रों का गणनाक्रम है।

स्थानांग अंग आगम है—इसमें कहा गया नक्षत्र-गणनाक्रम यदि स्वमान्यता के अनुसार है तो सूर्यप्रज्ञप्ति में कहे गये नक्षत्र-गणनाक्रम को स्वमान्यता का कैसे माना जाय? क्योंकि उपांग की अपेक्षा अंग आगम की प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है।

यदि स्थानांग में निर्दिष्ट नक्षत्र-गणनाक्रम को किसी व्याख्याकार ने अन्य मान्यता का मान लिया होता तो परस्पर विरोध निरस्त हो जाता किन्तु जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति आदि के आगमपाठों से स्वमान्यता का क्रम अभिजित से उत्तराषाढ़ा पर्यंत का है अन्य क्रम अन्य मान्यता के हैं।

प्राभृत पद का परमार्थ

सूर्यप्रज्ञप्ति-वृत्ति के अनुसार प्राभृत शब्द के अर्थ

इष्ट पुरुष के लिए देशकाल के योग्य हितकर दुर्लभ वस्तु अर्पित करना

अथवा जिस पदार्थ से मन प्रसन्न हो ऐसा पदार्थ इष्ट पुरुष को अर्पित करना, ये दोनों शब्दार्थ हैं।

---

१. (क) स्थानांग अ. २, उ. २, सू. १६० (ख) स्थानांग अ. ४, उ. १, सू. २७७

२. (क) अथ प्राभृतमिति कः शब्दार्थः ?

उच्यते—इह प्राभृतं नाम लोके प्रसिद्धं यदभीष्टाय पुरुषाय देश-कालोचितं दुर्लभ-वस्तु-परिणाम-सुन्दरमुपनीयते।

(क) प्रकर्षेण आ-समन्ताद् ह्रियते-पोह्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्यानेनेति प्राभृतम्।

(ग) विवक्षिता अपि च ग्रन्थपद्धतयः परमदुर्लभा परिणामसुन्दराश्चाभीष्टेभ्यो विनयादिगुणकलितेभ्यः शिष्येभ्यो देश-कालोचित्येनोपनीयन्ते। —सूर्य. सू. ६ वृत्ति-पत्र ७ का पूर्वभाग

श्वेताम्बर परम्परा में चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के अध्ययन आदि विभागों के लिए "प्राभृत" शब्द प्रयुक्त है। दिगम्बर परम्परा के कषायपाहुड आदि सिद्धान्त ग्रन्थों के लिए प्रयुक्त 'पाहुड' शब्द के विभिन्न अर्थ—

१—जिसके पद स्फुट—व्यक्त हैं वह "पाहुड" कहा जाता है।

२—जो प्रकृष्ट पुरुषोत्तम द्वारा आभृत = प्रस्थापित है वह "पाहुड" कहा जाता है।

३—जो प्रकृष्ट ज्ञानियों द्वारा आभृत—धारण किया गया है अथवा परम्परा से प्राप्त किया गया है वह "पाहुड" कहा जाता है। —जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष से उद्धृत

विनयादि गुण सम्पन्न शिष्यों के लिए देश-कालोपयोगी शुभफलप्रद दुर्लभ ग्रन्थ स्वाध्याय हेतु देना।

यहाँ "देश-कालोपयोगी" विशेषण विशेष ध्यान देने योग्य है।

कालिक और उत्कालिक

नन्दीसूत्र में गमिक को "उत्कालिक" और अगमिक को "कालिक" कहा है।

दृष्टिवाद गमिक है।[1] दृष्टिवाद का तृतीय विभाग पूर्वगत है,[2] उसी पूर्वगत से ज्योतिषगणराज-प्रज्ञप्ति (चन्द्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति) का निर्यूहण किया गया है, ऐसा चन्द्रप्रज्ञप्ति की उत्थानिका की तृतीय गाथा से ज्ञात होता है।

अंग-उपांगों का एक दूसरे से सम्बन्ध है, ये सब अगमिक हैं, अतः ये सब कालिक हैं।

उसी नन्दीसूत्र के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति कालिक है[3] और सूर्यप्रज्ञप्ति उत्कालिक है।[4]

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के कतिपय गद्य-पद्य सूत्रों के अतिरिक्त सभी सूत्र अक्षरशः समान हैं, अतः एक कालिक और एक उत्कालिक किस आधार पर माने गये हैं?

यदि इन दोनों उपांगों में से एक कालिक और एक उत्कालिक निश्चित है तो "इनके सभी सूत्र समान नहीं थे" यह मानना ही उचित प्रतीत होता है, काल के विकराल अन्तराल में इन उपांगों के कुछ सूत्र विच्छिन्न हो गये और कुछ विकीर्ण हो गये हैं।

मूल अभिन्न और अर्थ भिन्न

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रों में कितना साम्य है? यह तो दोनों के आद्योपान्त अवलोकन से स्वतः ज्ञात हो जाता है; किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की चन्द्रपरक व्याख्या और सूर्यप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की सूर्यपरक व्याख्या अतीत में उपलब्ध थी। यह कथन कितना यथार्थ है, कहा नहीं जा सकता है, क्योंकि ऐसा किसी टीका, निर्युक्ति आदि में कहीं कहा नहीं है। यदि इस प्रकार का उल्लेख किसी टीका, निर्युक्ति आदि में देखने में आया हो तो विद्वज्जन प्रकाशित करें।

एक श्लोक या एक गाथा के अनेक अर्थ असम्भव नहीं हैं। द्विसंधान, पंचसंधान, सप्तसंधान आदि काव्य वर्तमान में उपलब्ध हैं। इनमें प्रत्येक श्लोक की विभिन्न कथापरक टीकाएँ देखी जा सकती हैं। किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के संदर्भ में बिना किसी प्रबल प्रमाण के भिन्नार्थ कहना उचित प्रतीत नहीं होता।

---

१. नन्दीसूत्र, गमिक अगमिक श्रुत सूत्र ४४.
२. नन्दीसूत्र, दृष्टिवाद श्रुत सूत्र ९०.
३. नन्दीसूत्र, उत्कालिक श्रुत सूत्र ४४.
४. नन्दीसूत्र, कालिक श्रुत सूत्र ४४.

ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इसका विशेषज्ञ शुभाशुभ जानने में सफल हो सकता है।

मानव की सर्वाधिक जिज्ञासा भविष्य जानने की होती है क्योंकि वह इष्ट का संयोग एवं कार्य की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ज्योतिष विषय के उपांग हैं—यद्यपि इनमें गणित अधिक है और फलित अत्यल्प है, फिर भी इनका परिपूर्ण ज्ञाता शुभाशुभ निमित्त का ज्ञाता माना जाता है—यह धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के द्योतक हैं अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक संबंध है।

निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की अगाध श्रद्धा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रों के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवों का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवेत्तर प्राणी-जगत् से चन्द्र आदि ज्योतिषी देवों का शाश्वत संबंध है। क्योंकि वे सब इसी मध्यलोक के स्वयं प्रकाशमान देव हैं और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों को प्रकाश प्रदान करते रहते हैं।

ज्योतिष लोक और मानव लोक का प्रकाश्य-प्रकाशक भाव सम्बन्ध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चदि आह्लादने धातु से "चन्द्र" शब्द सिद्ध होता है।

चन्द्रमाह्लादं मिमीते निर्मिमीते इति चन्द्रमा

प्राणिमात्र के आह्लाद का जनक चन्द्र है, इसलिए चन्द्रदर्शन की परम्परा प्रचलित है।

चन्द्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमें कुछ ऐसे पर्यायवाची हैं जिनसे इस पृथ्वी के समस्त पदार्थों से एवं पुरुषों से चन्द्र का प्रगाढ़ संबंध सिद्ध है।

कुमुदबान्धव—जलाशयों में प्रफुल्लित कुमुदिनी का बन्धु चन्द्र है इसलिए "कुमुदबान्धव" कहा जाता है।

कलानिधि चन्द्र के पर्याय हिमांशु, शुभ्रांशु, सुधांशु की अमृतमयी कलाओं से कुमुदिनी का सीधा सम्बन्ध है।

इसकी साक्षी है राजस्थानी कवि की सूक्ति—

दोहा—जल में बसे कुमुदिनी, चन्दा बसे आकाश।
जो जाहु के मन बसे, सो ताहु के पास॥

औषधीश—जंगल की जड़ी बूटियाँ "औषधि" हैं—उनमें रोग-निवारण का अद्भुत सामर्थ्य सुधांशु की सुधामयी रश्मियों से आता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है, वह औषधियों से प्राप्त होता है—इसलिए औषधीश चन्द्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा = रात्रि का पति—चन्द्र है।

श्रमजीवी दिन में "श्रम" करते हैं और रात्रि में विश्राम करते हैं। आह्लादजनक चन्द्र की चन्द्रिका में विश्रान्ति लेकर मानव स्वस्थ हो जाता है इसलिए मानव का निशानाथ से अति निकट का सम्बन्ध सिद्ध होता है। जैनागमों में चन्द्र के एक "शशि" पर्याय की ही व्याख्या है।[1]

(२) सूर्य शब्द की रचना

सू प्रेरणे धातु से "सूर्य" शब्द सिद्ध होता है।

सुवति-प्रेरयति कर्मणि लोकान् इति सूर्यः—जो प्राणिमात्र को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है वह सूर्य है।

सूरज—ग्रामीण जन "सूर्य" को "सूरज" कहते हैं।

सु+ऊर्ज से सूर्ज या सूरज उच्चारण होता है।

सु श्रेष्ठ—ऊर्ज=ऊर्जा=शक्ति।

सूर्य से श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है।

सूर्य के पर्याय अनेक हैं। इनमें कुछ ऐसे पर्याय हैं, जिनसे सूर्य का मानव के साथ सहज सम्बन्ध सिद्ध होता है।

सहस्रांशु—सूर्य की सहस्र रश्मियों से प्राणियों को जो "ऊष्मा" प्राप्त होती है, वही जगत् के जीवों का जीवन है।

प्रत्येक मानव शरीर में जब तक ऊष्मा=गर्मी रहती है, तब तक जीवन है। ऊष्मा समाप्त होने के साथ ही जीवन समाप्त हो जाता है।

भास्कर, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, द्युमणि, अहर्पति, भानु आदि पर्यायों से "सूर्य" प्रकाश देने वाला देव है।

मानव की सभी प्रवृत्तियाँ प्रकाश में ही होती हैं। प्रकाश के बिना वह अकिंचित्कर है।

---

१. सन्नी सहस्स विसिट्ठुत्थो

प्र. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चई—चंदे ससी, चंदे ससी ?

उ. गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया सोमे कंते सुभए पियदंसणे सुरूवे,

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—"चंदे ससी, चंदे ससी"। —भग. स. १२, उ. ६, सु. ४

शशि शब्द का विशिष्टार्थ

प्र. हे भगवन् ! चंद्र को "शशि" किस अभिप्राय से कहा जाता है ?

उ. हे गौतम ! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिषराज चन्द्र के मृगांक विमान में मनोहर देव, मनोहर देवियां तथा मनोज्ञ आसन-शयन-स्तम्भ-भाण्ड-पात्र आदि उपकरण हैं और ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिषराज चन्द्र स्वयं भी सौम्य, कान्त, सुभग, प्रियदर्शन एवं सुरूप है।

हे गौतम ! इस कारण से चन्द्र को "शशि" (या सशी) कहा जाता है।

सूर्य के ताप से अनेक रोगों की चिकित्सा होती है।

सौर ऊर्जा से अनेक यंत्र शक्तियों का विकास हो रहा है।

इस प्रकार मानव का सूर्य से शाश्वत सम्बन्ध है।

जैनागमों में सूर्य के एक "आदित्य"[1] पर्याय की व्याख्या द्वारा सभी कालविभागों का आदि सूर्य कहा गया है।

(३) गृह-ग्रह की रचना

ग्रह उपादाने धातु से यह ग्रह शब्द सिद्ध होता है।

जैनागमों में छह ग्रह और आठ ग्रह का उल्लेख है।[2]

चन्द्र-सूर्य को ग्रहपति माना है, शेष छः को ग्रह माना है, राहु-केतु को भिन्न न मानकर एक केतु को ही माना है।

अट्ठासी ग्रह भी माने हैं।

अन्य ग्रन्थों में नौ ग्रह माने हैं।

ग्रहों के प्रभाव के सम्बन्ध में वशिष्ठ और बृहस्पति नाम के ज्योतिर्विदाचार्य ने इस प्रकार कहा है—

वशिष्ठ—ग्रहा राज्यं प्रयच्छंति, ग्रहा राज्यं हरन्ति च।
ग्रहैस्तु व्यापितं सर्वं, त्रैलोक्यं सचराचरम्॥

बृहस्पति—ग्रहाधीनं जगत्सर्वं, ग्रहाधीना नरामराः।
कालं ज्ञानं ग्रहाधीनं, ग्रहाः कर्मफलप्रदाः॥

(३२वां गोचर प्रकरण—बृहद्दैवज्ञरंजन, पृ. ८४)

(४) नक्षत्र और नरसमूह

नक्षत्र शब्द की रचना

१. न क्षदते हिनस्ति "क्षद" इति सौत्रो धातुः हिंसार्थ आत्मनेपदी। ष्टन (उ. ४/१५९) नञ्क्षाणनपाद् (६/३/७५) इति नञः प्रकृतिभावः।

---

१ सूर सद्दस्स विसिट्ठत्थो—

प्र. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—"सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे"?

उ. गोयमा! सुरादीया णं समयाइ वा, आवलियाइ वा, जाव ओसप्पिणीइ वा, उस्सप्पिणीइ वा।
से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—"सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे।"—भग. स. १२, उ. ६, सु. ५

सूर्य शब्द का विशिष्टार्थ

प्र. हे भगवन्! सूर्य को "आदित्य" किस अभिप्राय से कहा जाता है?

उ. हे गौतम! समय, आवलिका यावत् अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी काल का आदि कारण सूर्य है।
हे गौतम! इस कारण से सूर्य "आदित्य" कहा जाता है।

२ छ तारग्गहा पण्णत्ता, तंजहा—

१. सुक्को, २. बुहे, ३. बहस्पति, ४. अंगारके, ५. सणिच्छरे, ६. केतू। —ठाणं अ. ६, सु. ४८

अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता तंजहा—

१. चन्दे, २. सूरे, ३. सुक्के, ४. बुहे, ५. बहस्सति, ६. अंगारके, ७. सणिच्छरे, ८. केतू। —ठाणं ८, सू. ६/३

२. णक्ष गतौ (भ्वा. प. से.) नक्षति ।
असि-नक्षि-यजि-वधि-पतिभ्यो त्रन् (उ. ३/१०५) प्रत्यये कृते ।

३. न क्षणोति क्षणु हिंसायाम् (त. उ. से.) (ष्ट्रन्) (उ. ४/१५९) नक्षत्रं ।

४. न क्षत्रं देवत्वात् क्षत्र भिन्नत्वात् ।

जो क्षत = खतरे से रक्षा करे वह "क्षत्र" कहा जाता है । उस "क्षत्र" का जो "रक्षा करना" धर्म है वह "क्षात्र धर्म" कहा जाता है । क्षत्र की सन्तान "क्षत्रिय" कही जाती है ।

इस भूतल के रक्षक नर "क्षत्र" हैं और नभ—आकाश में रहने वाले रक्षक देव "नक्षत्र" हैं । इन नक्षत्रों का नर क्षत्रों से सम्बन्ध नक्षत्रसम्बन्ध है ।

अट्ठाईस नक्षत्रों में से "अभिजित्" नक्षत्र को व्यवहार में न लेकर सत्ताईस नक्षत्रों से व्यवहार किया है ।

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण हैं अर्थात् चार अक्षर हैं । इस प्रकार सत्ताईस नक्षत्रों के १०८ अक्षर होते हैं ।

इन १०८ अक्षरों को बारह राशियों में विभक्त करने पर प्रत्येक राशि के ९ अक्षर होते हैं ।

इस प्रकार सत्ताईस नक्षत्रों एवं बारह राशियों के १०८ अक्षरों से प्रत्येक प्राणी एवं पदार्थों के "नाम" निर्धारित किये जाते हैं ।

वह नक्षत्र और नर समूह का त्रैकालिक सम्बन्ध है ।

चर स्थिर आदि सात, अन्ध काण आदि चार इन ग्यारह संज्ञाओं से अभिहित ये नक्षत्र प्रत्येक कार्य की सिद्धि आदि में निमित्त होते हैं ।

(५) तारामण्डल

तारा शब्द की रचना

तारा शब्द स्त्रीलिंग है ।

तृ प्लवन-तरणयोः धातु से "तारा" शब्द की सिद्धि होती है । तरन्ति अनया इति तारा ।

सांयात्रिक—जहाजी व्यापारियों के नाविक रात्रि में समुद्रयात्रा तारामण्डल के दिशाबोध से करते थे ।

ध्रुव तारा सदा स्थिर रहकर उत्तरदिशा का बोध कराता है । शेष दिशाओं का बोध ग्रह, नक्षत्र और राशियों की नियमित गति से होता रहता है । इसलिए नौका आदि के तिरने में जो सहायक होते हैं, वे तारा कहे जाते हैं ।

रेगिस्तान की यात्रा रात्रि में सुखपूर्वक होती है इसलिए यात्रा के आयोजक रात्रि में तारा से दिशाबोध करते हुए यात्रा करते हैं ।

तारामण्डल के विशेषज्ञ प्रान्त का, देश का शुभाशुभ जान लेते हैं इसलिए ताराओं का पृथ्वीतल के प्राणियों से अतिनिकट का सम्बन्ध सिद्ध है ।

इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा मानव के सुख-दुःख के निमित्त हैं ।

गणितानुयोग का गणित सम्यक्श्रुत है

मिथ्याश्रुतों की नामावली में गणित को मिथ्याश्रुत माना है[1], इसका यह अभिप्राय नहीं है कि—"सभी प्रकार के गणित मिथ्याश्रुत हैं।"

आत्मशुद्धि की साधना में जो गणित उपयोगी या सहयोगी नहीं है, केवल वही गणित "मिथ्याश्रुत" है, ऐसा समझना चाहिए। यहाँ "मिथ्या" का अभिप्राय "अनुपयोगी" है, झूठा नहीं।

वैराग्य की उत्पत्ति के निमित्तों में लोकभावना अर्थात् लोकस्वरूप का विस्तृत ज्ञान भी एक निमित्त है[2], अतः अधो और ऊर्ध्व लोक से सम्बन्धित सारा गणित "सम्यक् श्रुत" है, क्योंकि वह गणित आजीविका या अन्यान्य सावद्य क्रियाओं का हेतु नहीं हो सकता है।

स्थानांग, समवायांग और व्याख्याप्रज्ञप्ति—इन तीनों अंगों में तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति—इन तीनों उपांगों में गणित सम्बन्धी जितने सूत्र हैं वे सब सम्यक्श्रुत हैं। क्योंकि अंग, उपांग सम्यक्-श्रुत हैं।

अन्य मान्यताओं के उद्धरण—स्वमान्यताओं का प्ररूपण

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति में अनेक मान्यताओं के उद्धरण दिये गये हैं, साथ ही स्वमान्यताओं के प्ररूपण भी किये गये हैं।

अन्य मान्यताओं का सूचक "प्रतिपत्ति" शब्द है।

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति में जितनी प्रतिपत्तियाँ हैं, उनकी सूची इस प्रकार है—

सूर्यप्रज्ञप्ति में प्रतिपत्तियों की संख्या

प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति संख्या	प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति संख्या
१	४	१५	६ प्रतिपत्तियाँ	१	८	२०	३ प्रतिपत्तियाँ
१	५	१६	५ प्रतिपत्तियाँ	२	१	२१	८ प्रतिपत्तियाँ
०	०	१७	स्वमत कथन	२	२	२२	२ प्रतिपत्तियाँ
१	६	१८	७ प्रतिपत्तियाँ	२	३	२३	४ प्रतिपत्तियाँ
१	७	१९	८ प्रतिपत्तियाँ	३	०	२४	१२ प्रतिपत्तियाँ
		"एक के समान स्वमान्यता"		४	०	२५	१६ प्रतिपत्तियाँ

प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति संख्या	प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति संख्या
५	०	२६	२० प्रतिपत्तियाँ	१०	१	३२	५ प्रतिपत्तियाँ
६	०	२७	२५ प्रतिपत्तियाँ	१०	२१	५९	५ प्रतिपत्तियाँ
७	०	२८	२० प्रतिपत्तियाँ	१७	०	८८	२५ प्रतिपत्तियाँ
८	०	२९	३ प्रतिपत्तियाँ	१८	०	८९	२५ प्रतिपत्तियाँ
९	०	३०	३ प्रतिपत्तियाँ	१९	०	१००	१२ प्रतिपत्तियाँ

१. नन्दीसूत्र

२. जगत्कायस्वभावौ च संवेग-वैराग्यार्थम्। —तत्त्वार्थसूत्र अ. ७

•	०	३१	२५ प्रतिपत्तियाँ	२०	•	१०२	२ प्रतिपत्तियाँ
०	०	०	२ प्रतिपत्तियाँ[1]	२०	०	१०३	२ प्रतिपत्तियाँ
०	०	०	९६ प्रतिपत्तियाँ				

बहुश्रुतों का कर्तव्य

उपांगद्वय में उद्धृत प्रतिपत्तियों के स्थल निर्देश करना, प्रमाणभूत ग्रन्थ से प्रतिपत्ति की मूल वाक्यावली देकर अन्य मान्यता का निरसन करना और स्वमान्यताओं का युक्तिसंगत प्रतिपादन करना इत्यादि आधुनिक पद्धति की सम्पादन प्रक्रिया से सम्पन्न करके उपांगद्वय को प्रस्तुत करना।

अथवा—किसी शोधसंस्थान के माध्यम से चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति पर विस्तृत शोधनिबन्ध लिखवाना।

किसी योग्य श्रमण-श्रमणी या विद्वान् को शोधनिबन्ध लिखने के लिए उत्साहित करना।

शोधनिबन्ध-लेखन के लिए आवश्यक ग्रन्थादि की व्यवस्था करना। शोधनिबन्ध लेखक का सम्मान करना। ये सब श्रुतसेवा के महान् कार्य हैं।

एक व्यापक भ्रान्ति

दोनों उपांगों के दसवें प्राभृत के सतरहवें प्राभृत-प्राभृत में प्रत्येक नक्षत्र का पृथक्-पृथक् भोजन-विधान है।

इनमें मांसभोजन के विधान भी हैं।

इन्हें देखकर सामान्य स्वाध्यायी के मन में एक आशंका उत्पन्न होती है।

ये दोनों उपांग आगम हैं—इनमें ये मांसभोजन के विधान कैसे हैं ?

यह आशंका अज्ञात काल से चली आ रही है।

सूर्यप्रज्ञप्ति के वृत्तिकार मलयगिरि ने भी इन मांसभोजनविधानों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का ऊहापोह या स्पष्टीकरण नहीं किया है।

एक कृत्तिका नक्षत्र के भोजनविधान की व्याख्या करके शेष नक्षत्रों के भोजन कृत्तिका के समान समझने की सूचना दी है।

शेष नक्षत्रों के भोजनविधानों की व्याख्याएँ न करने के सम्बन्ध में यह कल्पना है कि—मांसवाची शब्दों की व्याख्या क्या की जाय ?

अथवा मांसवाची भोजनों को वनस्पतिवाची सिद्ध करने की कल्पना करना उन्हें उचित नहीं लगा होगा ? या उस समय ऐसी कोई परम्परागत धारणा न रही होगी ?

---

१. (क) इन प्रतिपत्तियों के पूर्व के प्रश्नसूत्र विच्छिन्न हैं।
(ख) इन प्रतिपत्तियों के बाद स्वमत-प्रतिपादक सूत्रांश भी विच्छिन्न हैं।

उपांगद्वय के संकलनकर्त्ता ने प्रतिपत्तियों के जितने उद्धरण दिये हैं, उनके प्रमाणभूत मूल ग्रन्थों के नाम, ग्रन्थकारों के नाम, अध्याय, श्लोक, सूत्रांक आदि नहीं दिये हैं।

स्व. पूज्य श्री घासीलालजी म. ने इस भोजन सूत्र को प्रक्षिप्त सिद्ध किया है और कतिपय मांसनिष्पन्न भोजनों को वनस्पतिनिष्पन्न भोजन भी सिद्ध किया है। ये दोनों परस्पर विरोधी कार्य हैं।

नक्षत्रभोजन का यह सूत्र यदि प्रक्षिप्त है तो मांसनिष्पन्न भोजनों को वनस्पत्यादि निष्पन्न भोजन सिद्ध करने से लाभ ही क्या है ? क्योंकि सूर्यप्रज्ञप्ति के प्ररूपक लौकिक कार्यों की सिद्धि के लिए सावद्य विधि का प्ररूपण ही नहीं कर सकते और सूत्रागमों का गुंथन करने वाले गणधर ऐसे भ्रामक शब्दों का प्रयोग भी नहीं करते, यह निश्चित है। इसलिए हमारे बहुश्रुतों को इस सूत्र के सम्बन्ध में सर्वसम्मत निर्णय घोषित करना ही चाहिए।

जैनागमों में नक्षत्र गणना का क्रम अभिजित से प्रारम्भ होकर उत्तराषाढा पर्यन्त का है।

प्रस्तुत प्राभृत के इस सूत्र में नक्षत्रों का क्रम कृत्तिका से प्रारम्भ होकर भरणी पर्यन्त का है।[1]

उपलब्ध अनेक ज्योतिष ग्रन्थों में भी यह नक्षत्र गणना का क्रम विद्यमान है—अतः यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत नक्षत्रभोजनविधान का क्रम अन्य किसी ज्योतिष ग्रन्थ से उद्धृत है।[2]

---

१. चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति के संकलनकर्ता श्रुतधर स्थविर ने नक्षत्र गणना क्रम की पांच विभिन्न मान्यताओं का निरूपण करके स्वमान्यता का प्ररूपण किया है।

पांच अन्य मान्यताओं का निरूपण—

अट्ठाईस नक्षत्रों का गणना क्रम —

१— कृत्तिका नक्षत्र से भरणी नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

२— मघा नक्षत्र से अश्लेषा नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

३— धनिष्ठा नक्षत्र से श्रवण नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

४— अश्विनी नक्षत्र से रेवती नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

५— भरणी नक्षत्र से अश्विनी नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

स्वमान्यता का प्ररूपण —

अभिजित नक्षत्र से उत्तराषाढा नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र।

—चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति, दशम प्राभृत, प्रथम प्राभृत-प्राभृत, सूत्रांक ३२

नक्षत्र गणना के इस क्रम के विधान से यह स्पष्ट है कि दशम प्राभृत व सप्तदशम प्राभृत-प्राभृत में निरूपित नक्षत्रभोजनविधान सूर्यप्रज्ञप्ति के संकलनकर्त्ता की स्वमान्यता का नहीं है। आश्चर्य यह है कि अब तक सम्पादित एवं प्रकाशित चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्तियों के अनुवादकों आदि ने इस सम्बन्ध में स्पष्टीकरण लिखकर व्यापक भ्रान्ति के निराकरण के लिए साहस नहीं किया।

२. कुल्माषास्तिलतण्डुलानपि तथा मांसंश्च गव्यं दधि ।
स्वाद्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ॥
तद्वत्पायसमेव शाकपललं मार्गं च शाकं तथा ।
षाष्टिक्यं च प्रियङ्गपूपमथवा चिक्राण्डजानां सत्फलम् ॥
कौर्मं सारिकगोधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हया ।
वृक्षे स्यात्कृसरान्नमुद्गमपिना पिष्टं यवानां तथा ॥
मत्स्यान्नं खलु चिञ्चिभथवा दध्यकृमेवं क्रमात् ।
भक्ष्याऽभक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान् भक्षेत्तथाऽऽलोकयेत् ॥

इन उपांगद्वय की संकलन शैली के अनुसार अन्य मान्यताओं के बाद स्वमान्यता का सूत्र रहा होगा, जो विषम काल में प्रभाव से विच्छिन्न हो गया है—ऐसा अनुमान है।

सामान्य मनीषियों ने इस नक्षत्रभोजनविधान को और नक्षत्रगणनाक्रम को स्वसम्मत मानने की बहुत बड़ी असावधानी की है।

इसी एक सूत्र के कारण उपांगद्वय के सम्बन्ध में अनेक चमत्कार की बातें कहकर भ्रान्तियाँ फैलाई गई हैं।

इन भ्रान्तियों के निराकरण के लिए आज तक किसी भी बहुश्रुत ने अपने उत्तरदायित्व को समझकर समाधान करने का प्रयत्न नहीं किया है।

इसका परिणाम यह हुआ कि इन उपांगों का स्वाध्याय होना भी बन्द हो गया।

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति और अन्य ज्योतिषग्रन्थों का तुलनात्मक चिन्तन

दशम प्राभृत के अष्टम प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र संस्थान
नवम प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र, तारा संख्या

नक्षत्रस्वामी-देवता

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति में दशम प्राभृत के बारहवें प्राभृत-प्राभृत के सूत्र ४६ में नक्षत्र देवताओं के नाम हैं।
मुहूर्त चिन्तामणि के नक्षत्र प्रकरण में नक्षत्र देवताओं के नाम हैं।
इन दोनों के नक्षत्र देवता निरूपण में सर्वथा साम्य है। केवल नक्षत्र गणना क्रम का अन्तर है।
इसी प्रकार दशम प्राभृत के तेरहवें प्राभृत-प्राभृत में तीस मुहूर्तों के नाम,
चौदहवें प्राभृत-प्राभृत में पन्द्रह दिनों के और रात्रियों के नाम,
पन्द्रहवें प्राभृत-प्राभृत में दिवस तिथियों और रात्रि तिथियों के नाम,
सोलहवें प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र गोत्रों के नाम,
सत्तरहवें प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र भोजनों के विधान।
बृहद् दैवज्ञरंजनम्, मुहूर्तमार्तण्ड आदि ग्रन्थों में ऊपर अंकित सभी विषय उपलब्ध हैं।

आनन्दानुभूति

श्रुतसेवा के इस महायज्ञ में श्री विनयमुनिजी आदि के सविनय सविवेक विविध सहयोगों से अधिक आनन्दानुभव कर रहा हूँ और सभी सहयोगियों की संयमसाधना सफल हो यह कामना कर रहा हूँ।

आत्मशोधन—सूर्यप्रज्ञप्ति के सम्पादन में जहाँ कहीं प्रमादवश कुछ भी विपरीत या असंगत हुआ हो तो आगमज्ञ बहुश्रुत सुधार कर स्वाध्याय करें और आगामी प्रकाशन के लिए उपयोगी सुझाव प्रेषित करें।

सहकार साभार स्वीकार

सूर्यप्रज्ञप्ति के कतिपय सूत्रों से सम्बन्धित गणित विभाग का संक्षिप्त विवेचन खम्भात सम्प्रदाय के आचार्यप्रवर श्री कान्तिऋषिजी म. सा. के प्रशिष्य स्व. श्री महेन्द्रऋषिजी न्याय-साहित्य-व्याकरणाचार्य ने लिखकर हार्दिक सहयोग किया है।

पण्डित साहब श्री गोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने समय-समय पर अनेक उपयोगी सुझाव देकर प्रस्तुत संस्करण के सम्पादन में सक्रिय सहयोग किया है।

श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी ने सूर्यप्रज्ञप्ति की प्रस्तावना लिखकर जिज्ञासु ज्योतिर्विदों को सूर्यप्रज्ञप्ति के स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया है।

आगम समिति के सूत्रधार सज्जन श्रावकों ने मेरे श्रम की सफलता के लिए जिज्ञासु जनों में इस संस्करण को वितरित किया है।

३१ जनवरी' ८९

—अ. प्र. मुनि कन्हैयालाल 'कमल'
—श्री वर्धमान महावीर केन्द्र,
आबू पर्वत—३०७ ५०१

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण से)

डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी
साहित्य-सांख्य-योगदर्शनाचार्य,
एम. ए. (संस्कृत एवं हिन्दी), पी-एच. डी., डी. लिट्.
निदेशक
ब्रजमोहन बिड़ला शोध केन्द्र, उज्जैन (म. प्र.)

१. धर्मत्रिवेणी और उसका सर्वमान्य साहित्य

भारत के सिद्ध तपस्वी मन्त्रद्रष्टा महर्षि और महान् त्यागी-विरागियों द्वारा प्रदत्त ज्ञानपीयूष के कलश को सुरक्षित रखते हुए उसकी अमृत-बिन्दुओं को प्राणिमात्र के कल्याण के लिए वितरित करने वाले जैन, ब्राह्मण एवं बौद्धाचार्यों ने जिस धार्मिक/सर्वमान्य साहित्य को पुरस्कृत किया, उसकी समता विश्व के समक्ष किसी अन्य साहित्य में उपलब्ध नहीं होती है। 'जैन आगम, ब्राह्मण-वेद तथा बौद्ध-पिटक' के रूप में व्याप्त दिव्य-प्रकाश की किरणों से जन-जन के अन्तर को उज्ज्वल बनाने वाले इस सर्वमान्य साहित्य का हमारे पूर्वाचार्यों ने विशुद्धभाव से लोक-कल्याण की भावना से ही उपदिष्ट किया था, यही कारण है कि यह सुदीर्घ काल से पूर्ण श्रद्धा के साथ समाज में आत्मसात् हुआ है, हो रहा है और निरन्तर [illegible] होता रहेगा। धर्म के [illegible] की समष्टि को चिर-स्थिर रखने वाला यह साहित्य भारत को गौरव प्रदान कराता है, मानव-मात्र को सत्य के दर्शन की प्रेरणा देता है, समुचित मार्ग का निर्देश करता है, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विवेक सिखाता है और सांसारिक-प्रपंचों से मुक्त होकर मोक्ष-पथ का पथिक बनने के लक्ष्य तक पहुँचाता है।

२. एक लक्ष्य 'मोक्ष-प्राप्ति' और उसके क्रमिक सन्दर्भ

भाषा, भाव, कथन की विविधता, वक्ता की और द्रष्टा की भिन्नता एवं श्रोता-संग्रहकर्ता आदि की अनेकता के रहते हुए भी 'आगम, वेद अथवा त्रिपिटकों' के आन्तरिक उपदेशों में ऐक्य नितान्त सुसिद्ध है। समान तात्त्विक सिद्धान्तों के हार्दतत्त्व—१. कर्म-विपाक, २. संसार-बन्धन और ३. मुक्ति, मुख्यतः एक ही ध्येय की पूर्ति करते हैं, वह है—सर्वकर्मों का क्षय करके मोक्ष की प्राप्ति[1]। मोक्ष किसका अपेक्षित है? यह प्रश्न मोक्ष-प्राप्ति के प्रसंग में सहज उठता है तो इसका सभी दर्शनकारों का एक ही उत्तर होता है 'आत्मा का'। इस उत्तर से 'आत्मा क्या है?' यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक हो गया, तब सभी दर्शनकारों ने इस सम्बन्ध में अपनी-अपनी दृष्टि से 'आत्म चिन्तन' की प्रक्रियाएँ प्रस्तुत कीं। इन प्रक्रियाओं के प्रस्तोताओं की भारतीय-वाङ्मय में एक सुदीर्घ परम्परा प्रवर्तित हुई और जैन, बौद्ध एवं वैदिक तथा इनके अवान्तर अनेक चिन्तकों ने अत्यन्त प्रौढ़ता एवं गम्भीरता के साथ वे उपस्थापित कीं। आस्तिक और नास्तिक जैसे परम्परा-पोषक भेदों की बहुलता के कारण

---

१. पुव्वकम्मखयट्ठए इमं देहं.....। —उत्त. अ. ६, गा. १३.

चार्वाक ने जहाँ प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानकर 'भूतात्मवाद और देहात्मवाद' को जन्म दिया वहीं उनके सूक्ष्मरूप से 'मन-आत्मवाद, इन्द्रियात्मवाद (एकेन्द्रियात्मवाद तथा समूहात्मवाद), प्राणात्मवाद, पुत्रात्मवाद, अर्थात्मवाद' के सिद्धान्त भी उभर आये। इसी प्रकार वैदिक-विचारकों में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त के द्वारा भी विभिन्न तर्कापोह-पूर्वक आत्मा की खोज में 'ऋत, चेतन, कर्म, देव, माया, ब्रह्म, जीव, जड़, पुरुष, प्रकृति' आदि अनेक तत्त्वों की साङ्गोपाङ्ग मीमांसा की गई।

जैन-दर्शन में 'अतति/गच्छति इति आत्मा' इस व्युत्पत्ति को लक्ष्य में रखकर, गमनार्थक धातु को ज्ञानार्थक भी मानने की व्याकरण-सम्मत व्यवस्था को स्वीकृत करते हुए यह व्याख्या प्रस्तुत की कि जो 'ज्ञान आदि गुणों में आ-सामन्तात् रहता है, अथवा उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यरूप त्रिक के साथ समग्ररूप में रहता है, वह 'आत्मा' है।[1]

जैनदर्शनकारों ने आत्मा के सम्बन्ध में अनेक दृष्टियों से विचार किया है, इसीलिये जैनदर्शन का अपर-नाम 'अनेकान्तदर्शन' भी प्रसिद्ध है। 'चैतन्यस्वरूप' यह आत्मा का मुख्य विशेषण है। जैनमतानुसार अन्य विशेषण इस प्रकार है—

'चैतन्यस्वरूपः परिणामी कर्ता साक्षाद् भोक्ता देहपरिमाणः प्रतिक्षेत्रं भिन्नः पौद्गलिकादृष्टवांश्चायम्'[2]

३. आत्मा का पर्याय 'जीव' तथा उसका मौलिक विश्लेषण

जैनदर्शन का 'आत्मशास्त्र' अत्यन्त सूक्ष्म है। इसकी विचारणा सम्पूर्ण वैज्ञानिक है। विभिन्न दर्शनकार आत्मा का अस्तित्व तो मानते हैं किन्तु उनमें से कुछ आत्मा का 'अनेकत्व, नित्यत्व अथवा कर्तृत्व-भोक्तादि' नहीं मानते हैं किन्तु जैनदर्शन में आत्मा को नित्य और अविनाशी माना है। आत्मा के अस्तित्व के बारे में 'जीवो उवओगलक्खणो'[3] सूत्र द्वारा वर्धमान महावीर ने उसकी पहचान का मार्ग दिखलाया है।

जैन शास्त्रकार आत्मा के पर्याय रूप में 'जीव' शब्द का प्रयोग करते हैं और वह जीवन, प्राणशक्ति एवं चेतना का द्योतक है। त्रैकालिक जीवन-गुण से युक्त होने के कारण आत्मा की 'जीव' संज्ञा सार्थक है। 'जीवन' के आधार दशविध 'प्राण' बतलाये गये हैं। यह व्यवहारदृष्टि है। निश्चयदृष्टि से जिसमें 'चेतना' पायी जाए वह 'जीव' है।[4] जीव का लक्षण जैनदर्शन के अनुसार 'उपयोग' है। उपयोग, चेतना का अनुविधायी परिणाम होता है। इसके 'ज्ञान' और 'दर्शन' नाम से दो भेद हैं तथा इन दोनों के धारक को 'जीव' कहते हैं। जीव में अचेतन पदार्थों की तरह 'प्रदेश' और 'अवयव' भी माने गये हैं, उसे इसी कारण 'अस्तिकाय' कहा गया है।[5] उसमें प्रतिक्षण परिणमन क्रिया होती रहती है, फिर भी वह अपने मूलरूप/गुण को नहीं छोड़ता। ये 'उत्पाद, व्यय और

---

१. [क] नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं॥ —उत्त. अ. २८, गा. ११
[ख] बृहद् द्रव्यसंग्रह-५७

२. प्रमाणनय-तत्त्वालोक, ७-५६

३. क. उत्त. अ. २८, गा. १०
ख. उपयोगो लक्षणम् —तत्त्वार्थसूत्र अ. २, सू. ८

४. तत्त्वार्थराजवार्तिक, १४७

५. तत्त्वार्थराजवार्तिक, २८१

ध्रौव्य[1] ये पर्याय उसमें सदा पाये जाते हैं। इन कारणों से जीव को भी एक 'द्रव्य' माना गया है। जीव-द्रव्य अनन्त हैं। वे सभी अरूपी और चैतन्य गुण वाले होने से निरन्तर अपने-अपने बाह्य-आभ्यन्तर उभय परिणामों के कर्ता और भोक्ता बनते हैं तथा स्व-पर परिणामों के ज्ञाता भी हैं। जीवद्रव्य के अतिरिक्त अन्य चार 'अजीव-द्रव्य' भी हैं, जो चैतन्य-रहित जड़त्व-गुण से युक्त हैं। इनमें १. 'धर्मास्तिकाय' द्रव्य है, जो 'अरूपी' और 'गति-सहायक' गुण-धर्म वाला है। २. 'अधर्मास्तिकाय' द्रव्य भी अरूपी एवं स्थिति-सहायक गुण-धर्म वाला है। ३. लोकालोक प्रमाण 'आकाशास्तिकाय' द्रव्य भी अरूपी, अवकाश देने के गुण-धर्म वाला है। ४. 'पुद्गलास्तिकाय' द्रव्य स्कन्ध-देश-प्रदेश और परमाणु स्वरूप से पूरण-गलन-स्वभाव वाला और वर्ण-गन्ध-रस और स्पर्शादि धर्म से युक्त होकर रूपी द्रव्य है।[2]

४. जीव तथा अजीव द्रव्य रूप 'जगत्' और उसके ज्ञान की आवश्यकता

सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी श्री वीतराग जिनेश्वर ने समस्त जगत् को जीव और अजीव द्रव्यों का राशि रूप कहा है और यह भी प्ररूपित किया है कि यह जगत् अनादि, अनन्त तथा 'पंचास्तिकायमय' है। अतः जगत् में जो-जो द्रव्य दिखाई देते हैं और विभिन्न स्वरूप में जीव द्रव्यों के भोग-उपभोग में आते हैं, वे सभी पुद्गल द्रव्य हैं तथा जड़-पुद्गल-द्रव्यों के चित्र-विचित्र परिणामों के संयोग-वियोगादि में, जिस-जिस को भिन्न-भिन्न स्वरूप में सुख-दुःखादि का अनुभव होता है वे भिन्न-भिन्न जीव-द्रव्य हैं। क्योंकि जड़ द्रव्यों में सुख-दुःखादि की अनुभव रूप ज्ञान-चेतना

---

१. उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्। —तत्त्वार्थसूत्र अ. ५, सू. २९

२. प. कइ णं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?

उ. गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता,

तं जहा—१. धम्मत्थिकाए, २. अधम्मत्थिकाए,
३. आगासत्थिकाए, ४. जीवत्थिकाए,
५. पोग्गलत्थिकाए। —विया. स. २, उ. १०, सु. १

यद्यपि जैन शासन में द्रव्य पांच ही हैं 'पंचास्तिकायो लोकः' यह सूत्र इसका प्रमाण है, तथापि कहीं-कहीं 'काल' को स्वतन्त्र द्रव्य मानकर 'षड्द्रव्य' भी बतलाये गये हैं।

दव्वाणं आभाइं—

प. से किं तं दव्वणामे ?

उ. दव्व-णामे छव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—१. धम्मत्थिकाए, २. अधम्मत्थिकाए,
३. आगासत्थिकाए, ४. जीवत्थिकाए,
५. पोग्गलत्थिकाए ६. अद्धासमए, अ।

से तं दव्व-णामे।

—अणु. सु. २१८

तत्त्वार्थकार ने भी पांचवें अध्याय के ३०वें सूत्र में स्पष्ट लिखा है कि 'कालश्चेत्येके' अर्थात् कुछ आचार्य काल को भी स्वतन्त्र द्रव्य मानते हैं। जबकि पंचद्रव्यवादी 'काल' को जीव और अजीव का पर्याय-स्वरूप मानते हैं।

नहीं होती। इसीलिए जैन दृष्टि में समस्त जगत् जीव और अजीव ऐसे दो पदार्थों में विभक्त है[1] और अजीव के विविध परिणमनरूप में प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला यह समस्त जगत् नवतत्त्वात्मक स्वरूप से सत् है।[2] जिसकी किसी भी काल में, किसी से उत्पत्ति नहीं हुई और जिसका किसी भी काल में आमूल-सर्वथा विनाश भी नहीं है, ऐसे अनादि-अनन्त, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य परिणामी पांचों अस्तिकाय द्रव्यों में कालादि भेद से जो-जो चित्र-विचित्र पर्याय-परिणमन होते हैं, वे सभी 'स्वतः' और 'परतः' सहेतुक होते हैं। अतः उनसे सम्बद्ध कार्य-कारणभाव का यथार्थ स्वरूप जानना आवश्यक है।

धर्मास्तिकायादि पदार्थ लोकाकाश रूप जगत् में ही व्याप्त हैं। इसी जगत् में जीवों की स्थिति है और जगत् के समस्त जीवों को अनादिकाल से सुख और शान्ति की अपेक्षा रहती ही आयी है। सुख और शान्ति के लिए तड़पते हुए जीवों को सुख-शान्ति का वास्तविक मार्ग बतलाने की दृष्टि से ही परम करुणामूर्ति अरिहन्त तीर्थंकर भगवंतों की प्ररूपणा करते हुए कहते हैं कि 'जिन आत्माओं को सुख एवं शान्ति की अभिलाषा हो, उन्हें अपनी आत्मा में मोक्षाभिलाषरूप 'संवेगभाव' तथा सांसारिक सुख के प्रति अनासक्त भाव रूप 'निर्वेद' प्रकट करना चाहिए, तभी वे सुख-शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।' इसीलिए वाचकप्रवर श्री उमास्वाति ने भी संवेग-निर्वेद की उत्पत्ति का उपाय बतलाते हुए कहा है कि – 'जगत्-कायस्वभावौ च संवेग-वैराग्यार्थम्' और उसी 'तत्त्वार्थसूत्र' में तथा 'नवतत्त्व' में आत्मा में संवरभाव प्रकट करने के लिये बारह भावनाओं के भावने की बात कही गई है। उसमें 'लोक-स्वभाव-भावना' भी एक है। यह 'लोक-स्वभाव-भावना' तभी भावित कर सकता है, जबकि उसे 'लोक का स्वरूप' ज्ञात हो।

"जगत्" का अपर-पर्याय 'लोक' है। लोक का अर्थ दृश्यादृश्य "क्षेत्र" भी होता है। अतः धर्मास्तिकायादि द्रव्य जिस आकाश में विलसित हो रहे हैं, उस क्षेत्र को भी "लोक" कहते हैं। इसी लोक स्वरूप-परिज्ञान करने की आज्ञा जैनागम तथा अन्य शास्त्रों में दी गई है। "आचाराङ्ग-सूत्र" में कहा गया है :

"विदित्ता लोगं वंता लोगसण्णं से मइमं परिक्कमेज्जासि"।[3] इसके अनुसार लोकविषयक ज्ञान के अनन्तर ही विषयासक्ति में त्याग के पराक्रम निर्दिष्ट है। इस प्रकार--

"द्वीप-समुद्र-पर्वत-क्षेत्र-सरित-प्रभृति-विशेषः सम्यक् सकल-नैगमादि-नयेन ज्योतिषां प्रवचन-मूलसूत्रैर्जन्य-मानेन कथमपि भावविवृद्धिः सद्भिः स्वयं पूर्वापरशास्त्रार्थ-पर्यालोचनेन प्रवचन-पदार्थविदुपासनेन चाभियोगादि-विशेषविशेषेण वा प्रपंचेन परिवेद्य इति।"[4] कथन द्वारा श्लोकवार्तिककार ने भी लोक-विषयक सभी पदार्थों के

---

१. (क) दुवे रासी पण्णत्ता,
तं जहा - १. जीवरासी य, २. अजीवरासी य। – सम. सू. १४८
(ख) अत्थि जीवा, अत्थि अजीवा, — उव. सू. ५६
(ग) के अयं लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। के अणंता लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। के सासया लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। ठाणं. अ. २, उ. ४, सू. ११४

२. जीवाजीवा य बंधो य पुण्ण-पावासवा तहा।
संवरो निज्जरा मोक्खो संतेए तहिया नव ॥१४॥ उत्त. अ. २८, गा. १४

३. आचारांगसूत्र—श्रुत. १, अ. ३, उ. १, सू. २५.

४. तत्त्वार्थसूत्र ३/७० पर श्लोकवार्तिक.

ज्ञान करने का आग्रह किया है। वस्तुतः आन्तरिक-सत्ता के ज्ञान के साथ बाह्य-सत्ता का ज्ञान भी आवश्यक माना गया है। इसीलिये जैन और अन्यान्य सभी धर्मानुयायियों के प्रमाणभूत आगमादि ग्रन्थों में "सृष्टि-विज्ञान" को धर्मचर्चा के रूप में प्रस्तुत करते हुए मान्यता दी गई है। साथ ही विज्ञान को सर्वज्ञ जिनेश्वर-प्ररूपित होने के कारण इसे मोक्ष के प्रमुख साधनभूत धर्म के चार भेदों के अन्तर्गत "धर्मध्यान" नामक भेद में लोक के स्वभाव और आकार एवं उसमें स्थित विविध द्वीपादि, क्षेत्र तथा समुद्रादि के स्वरूप-चिन्तन में मनोयोग "संस्थान-विचय" नामक धर्मध्यान होता है—ऐसा कहा गया है।[1] इस प्रकार की लोक-भावना करते हुए आत्मा "संस्थान-विचय" नामक धर्मध्यान में पहुंचने से अपने कर्मों का नाश कर शुक्लध्यान में पहुंचता है और क्षपकश्रेणी में आ जाने से अष्टकर्मक्षय करके अपनी आत्मा को शाश्वत सुख का भागी बनाता है। ऐसे अनेक तथ्यों के कारण ही लोक की "स्थिति और विस्तार" आदि की मीमांसा जैन आगमों में पर्याप्त विस्तार से हुई है, उसके मूल में धर्म-बोध की ही प्रधानता रही है और इसीलिए धार्मिक चर्चाओं में सर्वत्र "लोकविज्ञान, लोकचिन्तन" को भी महत्त्व मिला है। ऐसी एक आवश्यक चर्चा का आध्यात्मिक महत्त्व सर्वोपरि है और वह है –

प्र. एयंसि णं भंते ! एमहालयंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?

उ. नो इणट्ठे समट्ठे।

प्र. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–

"एयंसि णं एमहालयंसि लोगंसि नत्थि केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा न मए वा वि ?"

उ. गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे अयासहस्सस्स एगं महं अयावयं करेज्जा, से णं तत्थ जहण्णेणं एक्कं वा दो वा तिण्णि वा,

उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा,

ताओ णं तत्थ पक्खित्तोयराओ पक्खित्तपाणियाओ,

जहण्णेणं एगाहं वा, दुयाहं वा, तियाहं वा,

उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा।

अत्थि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणएण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहि वा रोमेहि वा सिंगेहि वा खुरेहि वा नहेहि वा अणोक्कंतपुव्वे भवइ ?

उ. णो इणट्ठे समट्ठे।

होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जे णं तासिं अयाणं उच्चारेणं वा जाव नहेहि वा अणोक्कंतपुव्वे

नो चेव णं एयंसि एमहालयंसि लोगंसि लोगस्स य सासयभावं, संसारस्स य अणादिभावं,

जीवस्स य निच्चभावं कम्मबहुत्तं जम्मण-मरणाबाहुल्लं च पडुच्च नत्थि केयि परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे "जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि।"

से तेणट्ठेणं गोयमा ! वुच्चइ–

---

१. ज्ञानार्णव ३४/४-८ तथा हेमयोगशास्त्र ७/१०-१२.

"एयंसि णं एगहालयंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे णं जाए वा न मए वा वि।" विया. स. १२, उ. ७, सु. ३/१-२.

अर्थात् इस लोक का ऐसा कोई प्रदेश नहीं है, जहाँ अनेक बार जीव उत्पन्न हुआ और मरा नहीं। जिस लोक में मानव उत्पन्न हुआ है, उसके स्वरूप-परिज्ञान से वह सोचने लगता है कि "इस लोक के प्रत्येक प्रदेश में मेरे अनन्तबार जन्म और मरण हुए हैं, अतः इस पुनः पुनः जन्म-मरण के चक्र से मुझे मुक्त होना चाहिये।" उसकी यह जागरूकता उसे विभिन्न पुण्य-पाप, सत्कर्म-दुष्कर्म आदि से परिचित कराती है और उनके स्वरूपों से परिचित होकर असत्कर्मों से निवृत्ति एवं सत्कर्मप्रवृत्तिपूर्वक अपने निरापद गन्तव्य का निर्धारण करने में तत्पर हो जाता है। यदि समस्त लोक तथा पृथ्वी पर स्थित द्वीपादि का निरूपण शास्त्रों में नहीं होता तो जीव अपने स्वरूप के परिचय से अपरिचित ही रह जाता और वैसी स्थिति में आत्मज्ञान के प्रति अज्ञान तथा ज्ञानादि की सम्भावनाएँ भी विलुप्त हो जातीं।

जो जीवे वि न याणाति अजीवे वि न याणति।
जीवाऽजीवे अयाणंतो कहं सो नाहीइ संजमं ॥ ३५ ॥

जो जीवे वि वियाणाति अजीवे वि वियाणति।
जीवाऽजीवे वियाणंतो सो हु नाहीइ संजमं ॥ ३६ ॥

जया जीवमजीवे य दो वि एए वियाणई।
तया गइं बहुविहं सव्वजीवाणं जाणई ॥ ३७ ॥

तया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई।
तया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई ॥ ३८ ॥

जया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई।
तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ ३९ ॥

जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोगं सऽब्भिंतरबाहिरं ॥ ४० ॥

जया चयइ संजोगं सऽब्भिंतर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ॥ ४१ ॥

जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं ॥ ४२ ॥

जया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ॥ ४३ ॥

जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥ ४४ ॥

जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई।
तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥ ४५ ॥

जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ॥ ४६ ॥

जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जइ ।
तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ ४७ ॥

जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो भवइ सासओ ॥ ४८ ॥ —दस. अ. ४, गा. ३५-४८

इन्हीं सब कारणों से लोक-सम्बन्धी ज्ञान अत्यावश्यक माना गया है और इस ज्ञान की उपलब्धि के लिए आगम-साहित्य सदैव परिशीलनीय माना गया है ।

५. लोक और उसमें "सूर्य"—

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि "लोक-विज्ञान" का निदर्शन जैन-आगमों में विस्तार से हुआ है । वहां उसका परिचय "१. समग्र, २. विभिन्न अंग और ३. अंग-विशेष" के रूप में निर्दिष्ट होकर उत्तरकाल के आचार्यों द्वारा भाष्य, टीका-निर्युक्ति, चूर्णी, वृत्ति आदि के रूप में उसे और भी पल्लवित एवं पुष्पित किया गया है । ऐसे साहित्य में

लोक परिचय के लिए

१. **आचारांग सूत्र** १ श्रुतस्कन्ध, २ अध्ययन, १ उद्देशक[1] ।
२. **स्थानांग सूत्र**, १ स्थान[2] ।
३. **समवायांग सूत्र**—प्रथम समवाय[3] ।
४. **भगवतीसूत्र** ११ शतक, १० उद्देशक[4] ।

---

१. इच्चत्थं गढिए लोए वसे पमत्ते अहो य राओ य परितप्पमाणे कालाकालसमुट्ठायी संजोगट्ठी अट्ठालोभी आलुंपे सहसक्कारे विणिविट्ठचित्ते एत्थ सत्थे पुणो पुणो । —आचा. श्रु. १, अ. २, उ. १, सू. ६३

२. ठाणं. अ. १, सु. ५

३. सम. अ. १, सु. ३

४. प्र. कइविहे णं भंते १. लोए पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते,
तं जहा – १. दव्वलोए, २. खेत्तलोए, ३. काललोए, ४. भावलोए ।
प्र. खेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा १. अहेलोयखेत्तलोए, २. तिरियलोयखेत्तलोए, ३. उड्ढलोयखेत्तलोए ।
प्र. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते,
प्र. तं जहा —रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए जाव अहेसत्तमपुढविअहेलोयखेत्तलोए ।
तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? [शेष अगले पृष्ठ पर]

५. १३ शतक, ४ उद्देशक।[1] तथा अन्य सूत्रों में प्रासंगिक रूप से चर्चित विषयों का अध्ययन किया जाये तथा —

२. लोक के आकार-ज्ञान के लिये —

१. आचारांगसूत्र श्रुत १. अ. ८, उ. (२) द्रष्टव्य हैं।

लोक-विषयक विचारणा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। जैन आगमों में लोक का अभिप्रेतार्थ "रज्जुलोक" है, क्योंकि यह चौदह विभागों में विभाजित है, अतः इसे **"चौदह रज्जुलोक"** के नाम से भी पहचाना जाता है। वैसे वैदिक-धर्मग्रन्थों में भी "चौदह रज्जुलोक" की मान्यता एवं वर्णन मिलते हैं।

एक रज्जुलोक का प्रमाण "कोई देव एक हजार भार वाले लोहे के गोले को अपनी समस्त शक्तिपूर्वक आकाश में फेंके और वह लोहगोलक ६ माह, ६ दिन, ६ घड़ी, ६ पल में जितना क्षेत्र लांघ जाए, उतना क्षेत्र

उ. गोयमा ! असंखेज्जइविहे पण्णत्ते,
तं जहा — जंबुद्दीवतिरियलोयखेत्त लोए जाव सयंभुरमणसमुद्दतिरियलोयखेत्तलोए।

प्र. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

उ. गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते,
तं जहा — [illegible] जाव [illegible]उड्ढलोयखेत्तलोए।
गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्त लोए अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए
इसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए। — विया. स. ११, उ. १०, सु. २-६

१. प. कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स असंखेज्जइभागं एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।
प. कहि णं भंते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स साइरेगं अद्धं ओगाहित्ता, एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।
प. कहि णं भंते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे, एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।
प. कहि णं भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! जम्बुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ णं तिरियलोयमज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति,
तं जहा-पुरत्थिमा पुरत्थिमदाहिणा एवं जहा दसमसते जाव नामधेज्ज त्ति।
— विया. स. १३, उ. ४, सु. १०-१५

२. अत्थि लोए, णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, सादिए लोए, अणादिए लोए, सपज्जवसिए लोए, अपज्जवसिए लोए, सुकडे ति वा दुकडे ति वा कल्लाणे ति वा पावए ति वा साधू ति वा असाधू ति वा सिद्धी ति वा असिद्धी ति वा निरए ति वा अनिरए ति वा।
— आचा. श्रु. १, अ. ८, उ. १, सु. २००

एक रज्जुलोक कहलाता है। चौदह रज्जुलोक का आकार दोनों पैर सीधे करके कटि के दोनों पार्श्वों पर हाथ रखकर खड़े हुए पुरुष के समान है। आगम साहित्य में इसे लोक पुरुष की संज्ञा दी गई है। इसी में धर्मास्तिकायादि (काल द्रव्य, सहित) छह द्रव्य हैं।

लोक के बाहर जो आकाशास्तिकाय है, उसमें इन छह द्रव्यों के न होने से उसे "अलोक" कहते हैं। अलोक का विस्तार लोक की अपेक्षा अनन्त गुना विशाल है।

लोक के "ऊर्ध्व", "अधः" और "तिर्यक्" ऐसे तीन विभाग हैं। इनमें "रत्नप्रभा" से नौ सौ योजन ऊपर तथा नौ सौ योजन नीचे इस प्रकार कुल अठारह सौ योजन मोटाई वाला, एक रज्जु चौड़ा ऐसा "तिर्यक् लोक" है। यहाँ से नौ सौ योजन न्यून सात रज्जु प्रमाण "अधोलोक" है और "ऊर्ध्वलोक" भी नौ सौ योजन न्यून सात रज्जु प्रमाण है।

संक्षेप में यह लोक का सामान्य परिचय है। विशेष ज्ञान के लिये गणितानुयोग का आद्योपान्त अवलोकन "लोक-प्रकाश", क्षेत्रसमास आदि दर्शनीय हैं।

६. सूर्य का आलोक और उसका स्वरूप

तिर्यक्लोक में जो प्रकाश व्याप्त है, वह सूर्यों के द्वारा ही प्राप्त है। मनुष्यलोक के अन्दर और बाहर के विभागों को प्रकाशित करने वाले सूर्य पृथक्-पृथक् हैं और इस दृष्टि से सूर्यों की अनेकता सिद्ध है। इस मध्यलोक के प्रकाशक सूर्य और इनके सहयोगी अन्य देव, जो कि "ज्योतिष्क देव" के रूप में पहचाने जाते हैं—इन सबका परिचय आगमों में इस प्रकार है

जम्बूद्वीप के मध्य में स्थित "मेरुपर्वत की समतल भूमि से ऊपर ७९० योजन की ऊँचाई के पश्चात् ज्योतिश्चक्र का क्षेत्र प्रारम्भ होता है जो कि ११० योजन प्रमाण है अर्थात् ज्योतिश्चक्र की स्थिति इसी मध्यलोक में है। इन ११० योजनों में से १० योजन छोड़कर उसके ऊपर मेरु की समतल भूमि से ८०० योजन की ऊँचाई पर सूर्य के विमान हैं। उससे ८० योजन की ऊँचाई पर चन्द्र के विमान हैं। वहाँ से २० योजन तक अर्थात् मेरु की समतल भूमि से ९०० योजन की ऊँचाई तक की परिधि में ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्ण तारागण हैं। तारासमूह को प्रकीर्ण कहने का कारण यह है कि अन्य कतिपय तारे अनियतचारी होने से कभी सूर्य और चन्द्र के नीचे भी चलते हैं तथा कभी ऊपर भी। इन सब ज्योतिष्कों की स्थिति भी इसी मध्यलोक में है। मनुष्यलोक की सीमा में जो ज्योतिष्क हैं वे भ्रमण करते रहते हैं। इसलिये उन्हें "चर ज्योतिष्क" कहते हैं। चर ज्योतिष्कों की गति की अपेक्षा से ही मुहूर्त, प्रहर, अहोरात्र, पक्ष, मास, अतीत, वर्तमान आदि तथा संख्येय-असंख्येय आदि काल का व्यवहार है। मनुष्य-लोक की सीमा से बाहर ज्योतिष्कों के विमान स्थिर हैं। स्वभावतः वे एक स्थान पर स्थिर रहते हैं, भ्रमण नहीं करते। अतः उनका उदय-अस्त न होने से उनका प्रकाश भी एक समान पीतवर्णी और लक्ष योजन-प्रमाण रहता है। इसलिये उन्हें "स्थिर ज्योतिष्क" कहा है।

सभी ज्योतिष्क पांच यूथों में विभाजित होते हैं और वे सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। केवल मनुष्य सृष्टि के लिये ही ये सतत गतिशील रहते हैं ऐसा प्रतीत होता है, यहाँ सूर्य-चन्द्र की बहुलता के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण जैन सिद्धान्त की लाक्षणिकता के लिये आवश्यक है। मुख्यतः जम्बूद्वीप (मध्यलोक) में दो सूर्य, दो चन्द्रों का होना माना जाता है। समय विभाजन इन ज्योतिर्मय देवों की गति से ही निर्धारित होता है।

जैनदर्शन की दृष्टि से जगत् में व्याप्त दृष्ट-अदृष्ट सभी पदार्थ जिन षड् द्रव्यों में विभक्त हैं उनमें "काल" को भी एक द्रव्य माना है। चेतन और जड़ पुद्गल तीनों कालों में सक्रिय रहते हैं। जीव तथा पुद्गल की

सक्रियता की समयमर्यादा निश्चित करने का एक मात्र आधार काल-द्रव्य है। सामान्यतः जगत् में "काल" नामक कोई स्वतन्त्र पदार्थ नहीं है तथापि उपर्युक्त जड़ और चेतन पदार्थ के सम्बन्ध में अत्यन्त उपकारक होने से शास्त्रकारों ने इसको औपचारिक द्रव्य भी कहा है। काल का अर्थ यहाँ समय (सैकण्ड, मिनिट, घण्टे, दिन, पक्ष, मास और वर्ष आदि) का सूचक है। इस समय को यदि कोई भी निश्चित कर देने वाले साधन हैं, तो वे हैं "सूर्य-चन्द्र"।

अनन्तज्ञानी तीर्थंकर परमात्मा ने सूर्य-चन्द्र दोनों ही असंख्य कहे हैं और इनमें परस्पर तनिक भी न्यूनाधिकता नहीं है। वस्तुतः ये चार प्रकार के देवों में "ज्योतिषी देव" हैं। इनके विमानों में जटित विशिष्ट रत्नों के प्रकाश से जगत् के सर्व पदार्थ प्रकाशित होते हैं। सूर्यविमान के रत्नों में वर्तमान एकेन्द्रिय जीवों को आतप नामकर्म से उष्ण प्रकाश का अनुभव होता है और चन्द्र विमान के रत्नों में वर्तमान एकेन्द्रिय जीवों को उद्योत नामकर्म से शीत प्रकाश का अनुभव होता है।

असंख्य सूर्य ज्योतिषी-निकाय के इन्द्र हैं और इन असंख्य सूर्य इन्द्रों के रहने के विमान भिन्न-भिन्न होते हैं। उसी प्रकार चन्द्रों के भी विमान भिन्न-भिन्न हैं। सूर्य का प्रत्येक विमान पूर्वदिशा में ४००० सिंह रूप, दक्षिण में ४००० हस्ति रूप, पश्चिम में ४००० वृषभ रूप तथा उत्तर में ४००० अश्व रूप इस प्रकार कुल १६००० आभियोगिक (सेवकादि) देव इन विमानों का वहन करते हैं। सूर्य के विमान पृथ्वी से ८०० योजन ऊँचे हैं तथा वे शाश्वत हैं। शाश्वत पदार्थों का १ योजन ३६०० मील जितना होता है। जम्बूद्वीप और उसके बाद वाले असंख्य द्वीप-समुद्रों में सूर्य-चन्द्र सदा हर समय प्रकाश फैला रहे हैं। यथा:

जम्बूद्वीप में	२ सूर्य	—	२ चन्द्र
लवणसमुद्र में	४ सूर्य	—	४ चन्द्र
धातकीखण्ड में	१२ सूर्य	—	१२ चन्द्र
कालोदधिसमुद्र में	४२ सूर्य	—	४२ चन्द्र
अर्ध-पुष्करद्वीप में	७२ सूर्य	—	७२ चन्द्र
	१३२ सूर्य		१३२ चन्द्र

इन सूर्य-चन्द्रों के सम्बन्ध में अन्य ज्ञातव्य इस प्रकार है—

मनुष्यलोक के सूर्य-चन्द्र

१. अस्थिर (परिभ्रमणशील)
२. इनके विमान की पीठिका अर्ध कोष्ठकाकार
३. चन्द्र विमान $\frac{56}{61}$ योजन (लम्बाई-चौड़ाई)
४. चन्द्र विमान की ऊँचाई $\frac{28}{61}$ योजन
५. सूर्य विमान $\frac{48}{61}$ योजन (लम्बाई-चौड़ाई)
६. सूर्य विमान की ऊँचाई $\frac{24}{61}$ योजन।

मनुष्यलोक से बाहर के सूर्य-चन्द्र

१. स्थिर (परिभ्रमणरहित)

२. चतुरस्र इष्टकाकार
३. चन्द्र विमान $\frac{56}{61}$ योजन (लम्बाई-चौड़ाई)
४. चन्द्र विमान की ऊँचाई $\frac{28}{61}$ योजन
५. सूर्य विमान $\frac{48}{61}$ योजन (लम्बाई-चौड़ाई)
६. सूर्य विमान की ऊँचाई $\frac{24}{61}$ योजन।

जम्बूद्वीप में एक चन्द्र, एक सूर्य ४८ घण्टे में प्रत्येक मण्डल को पूर्ण करता है। जम्बूद्वीप में एक सूर्य दक्षिणदिशा में भरतक्षेत्र में होता है तब दूसरा सूर्य उत्तरदिशा में ऐरवत क्षेत्र में रहता है। उसी समय एक चन्द्र पूर्व महाविदेह में होता है तब दूसरा चन्द्र पश्चिम महाविदेह में रहता है। जहाँ सूर्य होता है वहाँ दिन और जहाँ चन्द्र होता है वहाँ रात्रि होती है। अतः प्रत्येक क्षेत्र में जो सूर्य-चन्द्र आज दिखाई देते हैं, वे दूसरे दिन नहीं दिखाई देते। इस प्रकार सूर्य-चन्द्र का परिभ्रमण सतत चालू है। अढ़ाई द्वीपवर्ती सभी सूर्य-चन्द्र द्वीपवर्ती मेरुपर्वतों के चारों ओर सतत परिभ्रमण कर रहे हैं। इस प्रकार कुल १३२ सूर्य-चन्द्र अढ़ाई द्वीपों के मध्यस्थ मेरु की परिक्रमा कर रहे हैं, वे दो विभाग में विभक्त ६६-६६ संख्या में रहते हैं और इनकी पंक्ति सदा एक साथ ही परिक्रमा करती है। सूर्य परिभ्रमण करते हुए जैसे-जैसे आगे बढ़ता है वैसे उस क्षेत्र में सूर्योदय कहलाता है और वह गति करता हुआ पिछले क्षेत्र में अन्तिम दिखाई देता है तब सूर्यास्त कहलाता है।

वस्तुतः जैन आगमों में वर्णित सूर्य-चन्द्रादि ज्योतिष्क देवों की विचारणा इतनी महत्त्वपूर्ण एवं सूक्ष्मता से परिपूर्ण है कि उसका वर्णन करना यहाँ सम्भव नहीं है। भगवतीसूत्र, जीवाभिगम, सूर्य-प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, ज्योतिष्करण्डक, क्षेत्रलोकप्रकाश, बृहत्संग्रहणी, क्षेत्रसमास (लघु एवं बृहत्) तथा त्रिलोकसारादि में यह विषय विस्तार से समझाया गया है।

इतना ही नहीं, अन्य धर्मों के प्रमुख ग्रन्थों में भी सूर्य की सर्वोपरि सत्ता को बहुत ही आदर के साथ सराहा गया है। वेदों में सूर्य को "क्षणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः, विभ्राट्, बृहत्, विश्वाय दृशे सूर्यम्, सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च," और "आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंश्च। हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्" इत्यादि अनेक मन्त्रों से विविधरूप में व्यक्त किया है। सर्वाराध्य गायत्री मन्त्र में भी सवितृ देवता की ही महिमा और प्रार्थना है। सूर्य के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अनेक विवेचन वैदिक मन्त्रों में अभिव्यक्त हैं, जिनके भाष्यों में आचार्यों ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म परीक्षणात्मक प्रयोगों के निर्देश भी दिये हैं।

सूर्य सप्ताश्वरथ में स्थित होकर जगत् को प्रकाशित करता है। ऋग्वेद में "सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रं" कहते हुए जगत् को सप्तवर्गी ही बतलाया है। ये सात वर्ग पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, दिक् और काल हैं। सौर-परिवार के नौ सदस्य नवग्रह हैं। सूर्य आदि ग्रहों के बिम्बों का व्यास, गति, द्युति, ग्रहण आदि के वर्णन पुराणों तथा ज्योतिष के ग्रन्थों में व्यापकरूप से आये हैं। "वृद्ध गर्गसंहिता" में "महासंलिताध्याय" के उत्तरार्ध में "ग्रहकोषाध्याय, नक्षत्रकर्मगणाध्याय" आदि में वैज्ञानिक विषयों का विस्तृत वर्णन भी दर्शनीय है। इस प्रकार सूर्य की अखण्ड सत्ता सनातन धर्मग्रन्थों में भी विस्तार से स्वीकृत है।

ऐसी ही सूर्य की सार्वत्रिक महिमा को वैज्ञानिक दृष्टि से समन्वित चिन्तन-प्रधान असाधारण विवेचना के द्वारा व्यक्त करने वाला एक महान् ग्रन्थ "सूर्य-प्रज्ञप्ति" है। जिसका परिचय इस प्रकार है:

७. सूर्य-प्रज्ञप्ति का आगम साहित्य में स्थान

जैन आगम-साहित्य प्राचीनतम वर्गीकरण के अनुसार 'पूर्व' और 'अंग' के रूप में वर्गीकृत हुआ था जिसे श्रमण भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती बतलाया है। इसके पश्चात् 'पूर्वश्रुत' को सरल रूप में ग्रथित कर उसमें 'दृष्टिवाद'

को सम्मिलित करने से आचारादि ग्यारह अंगों को 'द्वादशांगी' कहा गया। आचारांग आदि के प्ररूपक महावीर की श्रुतराशि 'चौदह पूर्व' अथवा 'दृष्टिवाद' के नाम से पहचानी जाती थी। इसका वर्गीकरण 'अंगप्रविष्ट' और 'अंगबाह्य' ऐसे दो भागों में किया गया। इनमें प्रथम 'गणधर द्वारा सूत्र में निर्मित' और द्वितीय 'स्थविरकृत' समाविष्ट हैं। इनके अतिरिक्त एक और सूक्ष्म विवेचन करते हुए नन्दीसूत्र में "आवश्यक, आवश्यक-व्यतिरिक्त, कालिक और उत्कालिक" रूप में आगम की सम्पूर्ण शाखाओं का परिचय दिया है। इनके अतिरिक्त दिगम्बर मान्यता के अनुसार "अंगप्रविष्ट" आगमों का एक वर्गीकरण दृष्टिवाद के १. परिकर्म, २. सूत्र, ३. प्रथमानुयोग, ४. पूर्वगत एवं ५. चूलिका के रूप में हुआ है। श्री आर्यरक्षित ने आगमों को अनुयोगों के अनुसार चार भागों में विभाजित किया जिनके "१. चरण-करणानुयोग, २. धर्मकथानुयोग, ३. गणितानुयोग तथा ४. द्रव्यानुयोग" ये नाम दिये हैं। इन्हीं ने व्याख्याक्रम की दृष्टि से १. अपृथक्त्वानुयोग और २. पृथक्त्वानुयोग के रूप में आगमों के दो रूप भी बतलाये। इन सबके अतिरिक्त नन्दीसूत्र की चूर्णि में एक दृष्टि और उद्घाटित हुई जिसमें द्वादशांगी को "श्रुत पुरुष" के अंगों की संज्ञा से अभिहित किया गया। साथ ही द्वादश उपांगों का भी विनियोग हुआ और प्रत्येक अंग के साथ एक-एक उपांग (अंगों में कहे गये अर्थों का स्पष्ट बोध कराने वाले सूत्र) भी निर्धारित हुए।

इन और ऐसे ही अन्य भेदों में श्रुतस्थविर-विरचित "सूर्य-प्रज्ञप्ति" सूत्र क्रमशः अंग, दृष्टिवाद, अंगबाह्य, आवश्यक व्यतिरिक्त में उत्कालिक, दृष्टिवाद का प्रथम भेद परिकर्म, गणितानुयोग, पृथक्त्वानुयोग और श्रुतपुरुष के ज्ञाताधर्मकथांग के उपांग में अपना स्थान रखती है। बत्तीस आगमों के क्रम में यह उपांगगत २२वीं संख्या पर है। कुछ ग्रन्थों में इसे पांचवां और कहीं छठा उपांग बतलाया गया है।

८. सूर्य-प्रज्ञप्ति का स्वरूपात्मक परिचय

जैन-आगम वाङ्मय में "सूर्य और ज्योतिष्कचक्र" का व्यवस्थित दिग्दर्शन कराने वाला यह उपांग ग्रन्थ मुख्यतः ज्ञान एवं विज्ञान की संश्लिष्ट पद्धति से विचारों को व्यक्त करता है। गणित और ज्योतिष की महत्त्वपूर्ण विवेचना इसमें अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इसकी रचना में १०८ गद्य-सूत्र और १०३ पद्य-गाथाएँ प्रयुक्त हैं। इसमें एक अध्ययन, २० प्राभृत और उपलब्ध मूलपाठ २२०० श्लोक परिमाण है।

"सूर्य-प्रज्ञप्ति" अति प्राचीन ग्रन्थ है, क्योंकि इसका उल्लेख श्वेताम्बर, दिगम्बर और स्थानकवासी—तीनों में मान्य रहा है। इसी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि इसकी स्थिति तीनों के विभाजन से पूर्व थी। इसका समय विक्रम पूर्व का होना चाहिए।

विषय विस्तार की दृष्टि से इसके २० प्राभृतों में खगोलशास्त्र की जितनी सूक्ष्म विचारणाएँ प्रस्तुत हुई हैं, उतनी अन्यत्र कहीं एक साथ प्रस्तुत नहीं हुई हैं। इसका उपक्रम मिथिला नगरी में जितशत्रु के राज्य में नगर से बाहर मणिभद्र चैत्य में वर्धमान महावीर के पधारने पर धर्मोपदेश के पश्चात् गणधर गौतम की जिज्ञासा के समाधान हेतु हुआ है। इसमें —"मण्डलगतिसंख्या, सूर्य का तिर्यक् परिभ्रमण, प्रकाश्य क्षेत्र परिमाण, प्रकाश संस्थान, लेश्या प्रतिघात, ओजः संस्थिति, सूर्यावरक उदयसंस्थिति, पौरुषी छायाप्रमाण, योगस्वरूप, संवत्सरों के आदि और अन्त, संवत्सर के भेद, चन्द्र की वृद्धि अपवृद्धि, ज्योत्स्नाप्रमाण, शीघ्रगति निर्णय, ज्योत्स्ना लक्षण, च्यवन और उपपात, चन्द्र सूर्य आदि की ऊँचाई, उनका परिमाण एवं चन्द्रादि के अनुभाव आदि" विषयों की विस्तृत चर्चा है। अतः यह ग्रन्थ खगोलशास्त्र के चिन्तकों के लिये पर्याप्त उपयोगी तथ्य उपस्थापित करता है।

उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री ने अपने महनीय ग्रन्थ "जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा" में सूर्य-प्रज्ञप्ति का विस्तृत परिचय देते हुए लिखा है। सारांश इस प्रकार है—

प्रथम प्राभृत में—"दिन व रात्रि में ३० मुहूर्त, नक्षत्रमास, सूर्यमास, चन्द्रमास और ऋतुमास के मुहूर्तों की वृद्धि, [illegible] अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल पर्यन्त सूर्य की गति के काल का प्रतिपादन एवं अन्तिम मंडल में सूर्य की एक बार तथा शेष मण्डलों में सूर्य की दो बार गति होना, आदित्य-संवत्सर के दक्षिणायन और उत्तरायन में अहोरात्र के जघन्य तथा उत्कृष्ट मुहूर्त एवं अहोरात्र के मुहूर्तों की हानिवृद्धि के कारण भरत और ऐरावत क्षेत्र के सूर्य का उद्योत क्षेत्र, आदित्यसंवत्सर के दोनों अयनों में प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम पर्यन्त एक सूर्य की गति का अन्तर, अन्तर के सम्बन्ध में छह अन्य मान्यताएँ, सूर्य द्वारा द्वीपसमुद्रों के अवगाहन सम्बन्ध में एक अहोरात्र में सूर्य के परिभ्रमण का परिमाण एवं मण्डलों की रचना तथा विस्तार वर्णित हैं।"

द्वितीय प्राभृत में—"सूर्य के उदय और अस्त का वर्णन करके अन्यतीर्थिकों के मतों का उल्लेख किया है, जिसमें—

१. सूर्य का पूर्वदिशा में उदित होकर आकाश में चला जाना,

२. सूर्य को गोलाकार किरणों का समूह बतलाकर सन्ध्या में नष्ट होना,

३. सूर्य को देवता बतलाकर उसका स्वभाव में उदयास्त होना,

४. सूर्य के देव होने से उसकी सनातन स्थिति रहना,

५. प्रातः पूर्वदिशा में उदित होकर सायं पश्चिम में पहुँचना तथा वहाँ से अधोलोक को प्रकाशित करते हुए नीचे की ओर लौट जाना आदि प्रमुख हैं। अन्त में "सूर्य के एक मण्डल से दूसरे मण्डल में गमन का और वह एक मुहूर्त में कितने क्षेत्र में परिभ्रमण करता है ? इसका विचार व्यक्त करते हुए स्वमत का भी प्रतिपादन हुआ है। अन्यधर्मावलम्बी पृथ्वी का आकार गोल मानते हैं किन्तु जैनधर्म की मान्यता उससे भिन्न है, यह भी इससे संकेतित है।"

तृतीय प्राभृत में—चन्द्र, सूर्य द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले द्वीप एवं समुद्रों का वर्णन है। इसी प्रसंग में बारह मतान्तरों का भी निर्देश हुआ है।

चतुर्थ प्राभृत में—चन्द्र और सूर्य के १. विमान संस्थान तथा २. प्रकाशित क्षेत्र के संस्थान और उनके सम्बन्ध में १६ मतान्तरों का उल्लेख है। यहीं स्वमत से प्रत्येक मण्डल में उद्योत तथा ताप क्षेत्र का संस्थान बतलाकर अन्धकार के क्षेत्र का निरूपण किया गया है। सूर्य के ऊर्ध्व, अधः एवं तिर्यक् ताप-क्षेत्र के परिमाण भी यहीं वर्णित है।

पांचवें प्राभृत में—सूर्य की लेश्याओं का वर्णन है।

छठे प्राभृत में— सूर्य का ओज वर्णित है अर्थात् सूर्य सदा एक रूप में अवस्थित रहता है अथवा प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहता है ? इस सम्बन्ध में २५ प्रतिपत्तियाँ हैं। जैनदृष्टि से व्यक्त किया है कि जम्बूद्वीप में प्रतिवर्ष केवल ३० मुहूर्त तक सूर्य अवस्थित रहता है तथा शेष समय में अनवस्थित रहता है। क्योंकि प्रत्येक मण्डल पर एक सूर्य ३० मुहूर्त रहता है। इसमें जिस-जिस मण्डल पर वह रहता है, उस दृष्टि से वह अवस्थित है और दूसरे मण्डल की दृष्टि से वह अनवस्थित है, यह स्पष्ट किया है।

सातवें प्राभृत में - सूर्य अपने प्रकाश से मेरुपर्वतादि को और अन्य प्रदेशों को प्रकाशित करता है, यह बतलाया है।

आठवें प्राभृत में —जो सूर्य पूर्व-दक्षिण में उदित होता है, वह मेरु के दक्षिण में स्थित भरतादि क्षेत्रों को प्रकाशित करता है और जो मेरु के पश्चिम-उत्तर में उदित होता है, वह मेरु के उत्तर में स्थित ऐरावतादि क्षेत्रों

को प्रकाशित किया है। इस प्रकार दो सूर्यों की सत्ता प्रतिपादित हुई है और इसी से दिन-रात्रि की व्यवस्था स्पष्ट की गई है। साथ ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल का कथन भी इसी प्राभृत में वर्णित है।

नौवें प्राभृत में—पौरुषी छाया का प्रमाण बतलाते हुए सूर्य के उदयास्त के समय ५९ पुरुष-प्रमाण छाया होती है, यह बतलाया है और इस सम्बन्ध में अनेक मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमतानुसार पौरुषी-छाया के सम्बन्ध में स्थापना की है।

दसवें प्राभृत में— नक्षत्रों में आवलिका क्रम, मुहूर्त की संख्या, पूर्व-पश्चिम भाग तथा उभयभागों से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, युगारम्भ में योग करने वाले नक्षत्रों का पूर्वादि विभाग, नक्षत्रों के कुल, उपकुल तथा कुलोपकुल, १२ पूर्णिमा और अमावस्याओं में नक्षत्रों के योग, समान नक्षत्रों के योग वाली पूर्णिमा तथा अमावस्या, नक्षत्रों के संस्थान, उनके तारे, वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म ऋतुओं में मासक्रम के नक्षत्रों का योग तथा पौरुषी प्रमाण, दक्षिण-उत्तर एवं उभयमार्ग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, नक्षत्र रहित चन्द्रमण्डल, सूर्यरहित चन्द्रमण्डल, नक्षत्रों के देवता, ३० मुहूर्तों के नाम, १५ दिन, रात्रि और तिथियों के नाम, नक्षत्रों के गोत्र, नक्षत्रों में भोजन का विधान, एक युग में चन्द्र व सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग, एक संवत्सर के महीने और उनके लौकिक तथा लोकोत्तर नाम, पाँच प्रकार के संवत्सर, उनके ५-५ भेद और अन्तिम शनैश्चर-संवत्सर के २८ भेद, दो चन्द्र, नक्षत्रों के द्वार, दो सूर्य और उनके साथ योग करने वाले नक्षत्रों के मुहूर्त परिमाण, नक्षत्रों की सीमा तथा विष्कम्भ आदि का प्रतिपादन विस्तार के साथ इसके २२ उप-अध्यायों में हुआ है।

ग्यारहवें प्राभृत में—संवत्सरों के आदि, अन्त और नक्षत्रों के योग का वर्णन है।

बारहवें प्राभृत में— नक्षत्र, चन्द्र, ऋतु, आदित्य और अभिवर्धित ५ संवत्सरों का वर्णन, छह ऋतुओं का प्रमाण, ६-६ क्षमाधिक तिथियाँ, एक युग में सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ और उस समय नक्षत्रों के योग और योगकाल आदि का वर्णन है।

तेरहवें प्राभृत में— कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की हानि-वृद्धि, ६२ पूर्णिमा तथा ६२ अमावस्याओं में चन्द्र-सूर्यों के साथ राहु का योग, प्रत्येक अयन में चन्द्र की मण्डल-गति आदि का वर्णन किया गया है।

चौदहवें प्राभृत में—कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ज्योत्स्ना और अन्धकार का प्रमाण वर्णित है।

पन्द्रहवें प्राभृत में—चन्द्रादि ज्योतिष्क देवों की एक मुहूर्त की गति है, यह बतलाकर नक्षत्रमास में चन्द्र, सूर्य, ग्रहादि की मण्डल गति और ऋतुमास तथा आदित्यमास में भी मण्डल गति का निरूपण किया है।

सोलहवें प्राभृत में—चन्द्रिका, आतप और अन्धकार के पर्यायों का वर्णन है।

सत्रहवें प्राभृत में—सूर्य के च्यवन तथा उपपात के सम्बन्ध में अन्य २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करने के पश्चात् स्वमत का संस्थापन किया है।

अठारहवें प्राभृत में—भूमि से सूर्य-चन्द्रादि की ऊँचाई का परिमाण बताते हुए अन्य २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करके स्वमत का प्रतिपादन किया है। चन्द्र-सूर्य के विमानों के नीचे, ऊपर तथा सम विभाग में ताराओं के विमान होने के कारण एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार, मेरुपर्वत से ज्योतिष्कचक्र का अन्तर, जम्बूद्वीप में सर्व बाह्य-आभ्यन्तर, ऊपर-नीचे चलने वाले नक्षत्र, चन्द्र-सूर्यादि के संस्थान, आयाम, विष्कम्भ और

बाहुल्य, उनको वहन करने वाले देवों की संख्या और उनके दिशाक्रम से रूप, शीघ्र-मन्द गति, अल्पबहुत्व, चन्द्र-सूर्य की अग्रमहिषियों का परिवार, विकुर्वणा, शक्ति एवं देव-देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति आदि विषयों पर विस्तार से विचार हुआ है।

उन्नीसवें प्राभृत में—चन्द्र और सूर्य सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करते हैं अथवा लोक के एक विभाग को ? यह प्रश्न उठाकर इस सम्बन्ध में बारह मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमत का निरूपण किया है। साथ ही लवणसमुद्र का आयाम, विष्कम्भ और चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र एवं ताराओं का वर्णन है। उसी प्रकार धातकीखण्ड के संस्थान, कालोदधिसमुद्र और पुष्करार्धद्वीप तथा मनुष्य क्षेत्र आदि का विवरण प्रस्तुत हुआ है। इसी प्राभृत में यह भी बतलाया गया है कि—इन्द्र के अभाव में व्यवस्था, इन्द्र का जघन्य और उत्कृष्ट विरहकाल, मनुष्य क्षेत्र के बाहर चन्द्र की उत्पत्ति और गति तथा अन्त में स्वयम्भूरमण समुद्र तक द्वीपसमुद्रों के आयाम, विष्कम्भ, परिधि आदि का वर्णन है।

बीसवें प्राभृत में—चन्द्रादि का स्वरूप, राहु का वर्णन, राहु के दो प्रकार तथा जघन्य-उत्कृष्ट काल का वर्णन है। यहीं चन्द्र को शशि और सूर्य को आदित्य कहने का कारण बतलाते हुए स्पष्ट किया है कि ज्योतिष्कों के इन्द्र—चन्द्र का मृग (शश) के चिह्नवाला 'मृगाङ्क-विमान' है और सूर्य समय, आवलिका आदि से लेकर अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल का आदि-कर्ता है। चन्द्र और सूर्य की अग्रमहिषियों और चन्द्र-सूर्य के कामभोगों की मानवीय कामभोगों के साथ तुलना भी यहाँ प्रस्तुत हुई है तथा अन्त में ८८ ग्रहों के नाम बताये गये हैं। इन प्राभृतों के भी अन्य लघु प्राभृतों के रूप में विभाजन हैं।

उपर्युक्त विषयों के अवलोकन से सहज ही यह अनुमान किया जा सकता है कि सूर्य-प्रज्ञप्ति के आयाम में न केवल सूर्य और उससे सम्बद्ध विषयों का ही इसमें विमर्श हुआ है, अपितु समग्र ज्योतिष्क-परिवार का प्रसंगानुसार सूक्ष्म एवं स्थूल विमर्श समावृत हो गया है। इतना ही नहीं, यहाँ प्राचीन ज्योतिष-सम्बन्धी मूल मान्यताओं का भी सङ्कलन आ गया है। इसमें चर्चित विषय अन्यान्य धर्मों के मान्य-ग्रन्थों में चर्चित विषयों से भी कुछ अंशों में साम्य रखते हैं।

९. सूर्य-प्रज्ञप्ति की निर्युक्ति एवं अन्य विवेचनाएँ

सूर्य-प्रज्ञप्ति के व्यापक विषय-विवेचन से प्रभावित होकर निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहु ने दस आगमों पर निर्युक्तियों की रचना की थी, उनमें सूर्य-प्रज्ञप्ति भी थी। किन्तु दुर्भाग्य से अब वह अनुपलब्ध है। किन्तु आचार्य मलयगिरि की वृत्ति में इसका निर्देश हुआ है। उन्होंने यहाँ लिखा है "भद्रबाहुसूरि कृत निर्युक्ति का नाश हो जाने से मैं केवल मूल सूत्र का ही व्याख्यान करूँगा।" इसके बीच के काल में भाष्य और चूर्णियाँ भी लिखी गईं किन्तु सूर्य-प्रज्ञप्ति पर किसी ने लिखा हो, ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता।

आचार्य मलयगिरि का स्थितिकाल १५वीं शती माना जाता है। इनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थों में "सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग टीका" ९५०० श्लोक प्रमाण उपलब्ध होती है। इसी का अपरनाम "सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति" प्रचलित है। आचार्य ने यहाँ प्रारम्भ में मिथिला नगरी, मणिभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी देवी और भगवान् महावीर का साहित्यिक वर्णन किया है। तदनन्तर गणधर इन्द्रभूति गौतम का वर्णन है। वैसे सूर्यप्रज्ञप्ति के बीसों प्राभृतों का विवेचन मननीय है और उसमें यत्र-तत्र विशिष्ट चिन्तन, आलोचना एवं स्वमत-निरूपण को भी स्थान दिया है।

यद्यपि अधिकांश आचार्य, जिन्होंने आगम-ग्रन्थों पर भाष्य, निर्युक्ति, चूर्णि या टीकाएँ लिखने में पर्याप्त उदारता व्यक्त की है, परन्तु सूर्य-चन्द्र सम्बन्धी प्रज्ञप्तियों पर प्रायः नहीं लिखा है। इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि सीधे अध्यात्म एवं आचार-उपासना जैसे विषयों के प्रति उनकी रुचि विशेष रही होगी। अथवा यह भी कहा जा सकता है कि इन प्रज्ञप्तियों के विषय विज्ञान के अतिनिकट होने से क्लिष्ट जानकर छोड़ दिये हों।

उत्तरकाल में कुछ आचार्यों ने इस कमी को समझा और पुनः इस पर टीका लिखने का उपक्रम किया। इनमें स्थानकवासी आचार्य मुनि धर्मसिंहजी (१८वीं शती) ने "सूर्य-प्रज्ञप्ति के यन्त्र" निर्मित किये और इसी परम्परा के अन्य आचार्य श्री घासीलालजी महाराज ने ३२ आगमों पर जो संस्कृत भाषा में टीकाएँ लिखी हैं उनमें सूर्य-प्रज्ञप्ति पर "प्रमेयबोधिनी" /सूर्य प्रज्ञप्ति-प्रकाशिका नामक टीका/व्याख्या महत्त्वपूर्ण है। इसमें आचार्य श्री ने मूलसूत्र की संस्कृत छाया और संस्कृत व्याख्या की है। इसका हिन्दी और गुजराती भाषा में अनुवाद दो भागों में प्रकाशित भी हुआ है, जिसका नियोजन पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी ने किया है। हिन्दी और गुजराती अनुवादकर्ताओं का नामोल्लेख नहीं हुआ है। आचार्य श्री अमोलकऋषिजी ने भी प्रज्ञप्ति का हिन्दी अनुवाद किया है इसका प्रकाशन हैदराबाद से हुआ है तथा और भी कुछ विद्वान् आचार्यों ने इस पर विवेचन किये हैं।

सूर्य-प्रज्ञप्ति के सम्बन्ध में देश-विदेश के विचारक मनीषियों ने भी बहुत से अभिमत भिन्न-भिन्न लेखों में व्यक्त किये हैं। भारतीय ज्योतिष के क्षेत्र में बहुमान्य वराहमिहिर[1] निर्युक्तिकार भद्रबाहु के भ्राता थे, उन्होंने अपने ग्रन्थ "वराहसंहिता" में सूर्य-प्रज्ञप्ति के कतिपय विषयों को आधार बनाकर उन पर लिखा है। इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कर ने सूर्य-प्रज्ञप्ति की कुछ मान्यताओं को लेकर अपने खण्डनात्मक विचार व्यक्त किये हैं जो "सिद्धान्तशिरोमणि" ग्रन्थ में द्रष्टव्य हैं। इसी प्रकार ब्रह्मगुप्त ने "स्फुट-सिद्धान्त" ग्रन्थ में भी खण्डन का आधार बनाया है। किन्तु इस युग में वैदेशिक विद्वानों ने सूर्य-प्रज्ञप्ति के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसे विज्ञान का ग्रन्थ माना है, डॉ. विन्टरनित्ज उनमें प्रथम हैं। डॉ. शुब्रिंग ने तो यहाँ तक कहा है कि "सूर्य-प्रज्ञप्ति के अध्ययन के बिना भारतीय ज्योतिष के इतिहास को सही रूप से नहीं समझा जा सकता।" बेबर ने सन् १८६८ में "उबेर डी सूर्य-प्रज्ञप्ति" नामक निबन्ध प्रकाशित किया था। डॉ. सिबो ने "ऑन द सूर्य-प्रज्ञप्ति" नामक अपने शोधपूर्ण लेख में ग्रीक लोगों के भारतवर्ष में आगमन से पूर्व वहाँ "दो सूर्य और दो चन्द्र" का सिद्धान्त सर्वमान्य था, ऐसा प्रतिपादित किया है तथा उन्होंने अतिप्राचीन ज्योतिष के वेदांग ग्रन्थ की मान्यताओं के साथ सूर्य-प्रज्ञप्ति के सिद्धान्तों की समानता भी बतलाई है।

१०. प्रस्तुत प्रकाशन और कुछ प्रश्न : कुछ समाधान

उपर्युक्त "सूर्य-प्रज्ञप्ति" की गरिमा से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि ऐसे ग्रन्थ का सर्वाधिक स्वाध्याय हो, मनन हो और गम्भीरता-पूर्वक इसमें वर्णित विषयों का स्व-पर कल्याण की दृष्टि से पुनः पुनः विचार हो। सम्भवतः इसी कल्याणमयी भावना से इसका प्रकाशन किया गया है, जो कि अभिनन्दनीय है।

यद्यपि यह ग्रन्थ मूल रूप में ही प्रकाशित है किन्तु इसके सम्पादनकर्ता मुनि श्री कन्हैयालालजी "कमल" ने परिश्रमपूर्वक इसके पाठों को विशुद्धरूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। साथ ही पाद-टिप्पणियों में अनेक प्रश्नों को भी उठाया है तथा उनके समुचित समाधानों की कामना भी की है। मैंने जब इसका अवलोकन किया

---

१. द्रष्टव्य, गच्छाचार की वृत्ति.

तो मेरे मन में भी कुछ प्रश्न उभर आये। उन सबका क्रमिक विचार भी यहाँ प्रस्तुत करना अनुचित न होगा। यहाँ उन प्रश्नों की उपस्थापना के साथ ही उनके यथोपलब्ध समाधान भी प्रस्तुत हैं :

प्रश्न १. सूर्यप्रज्ञप्ति ग्रन्थ वस्तुतः खण्डित है फिर यह ग्रन्थ कैसे पूर्ण हुआ ?

समाधान : ऐसा कहा जाता है कि इसके पाठों में और चन्द्रप्रज्ञप्ति के पाठों में प्रायः साम्य है। अतः पूर्वाचार्यों ने ही इसे परस्पर पाठानुसंधान द्वारा वर्तमान रूप दिया है।

प्रश्न २. वर्तमान सूर्यप्रज्ञप्ति के मूलपाठों में अब भी पाठान्तर क्यों हैं ? यह स्थिति इस संस्करण से पूर्व प्रकाशित "सूर्यप्रज्ञप्ति" ग्रन्थों से मिलाने से स्पष्टतः प्रतीत हो जाती है। जैसे प्रारम्भ में "वीरस्तुति" नहीं दी है। कहीं गद्यपाठ में कुछ अंश त्याग दिये हैं तो यत्र-तत्र पाठगत शब्दों में व्यत्यय भी हुआ है, आदि।

समाधान : सम्भवतः यह इसलिए किया गया होगा कि सम्पादक-वर्ग को ऐसी अन्य पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई हों। साथ ही उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री के शब्दों में यह भी सम्भव है कि जैन आगम "शब्द" की अपेक्षा "अर्थ" को अधिक महत्त्व देते हैं। वेदों की तरह शब्दवादी नहीं हैं। अतः ऐसा पाठभेद हुआ होगा। एक यह भी कारण हो सकता है कि स्थविरों के द्वारा संग्रह होने के पश्चात् इनकी जो भिन्न-भिन्न कालों में वाचनाएँ हुई हैं, उनमें वैसी व्यवस्था हुई हो।

प्रश्न ३. इस ग्रन्थ में एक और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है नक्षत्र-भोजन में मांसादि के भोजन का ? यह जैनधर्म के सर्वथा प्रतिकूल कथन इसमें कैसे आया ?

समाधान : इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न समाधान प्राप्त होते हैं। यथा —

१. यह पाठ प्रक्षिप्त है। २. इस पाठ से पूर्व और भी कुछ पाठ था, जो विच्छिन्न हो गया है। ३. इस सम्बन्ध में आगमप्रभाकर पुण्यविजयजी का अभिमत था कि "इसके पहले के कुछ वाक्य खण्डित हो गये हैं, जिनमें यह भगवान् महावीर के द्वारा कथित न होकर किसी प्रश्न के उत्तर में उद्धरण के रूप में अन्य मतों का प्रदर्शन किया गया है।[1] ४. अन्य आचार्यों का कथन है कि यहाँ प्रयुक्त "मांस" शब्द का अर्थ प्राण्यङ्ग मांस नहीं है, अपितु यह अत्यन्त प्राचीनकाल में प्रयुक्त होने वाले अर्थ "वनस्पतिजनित फल, मेवा" आदि के अर्थ में व्यवहृत है। इसी प्रकार मांस के पर्यायवाची अन्य शब्द "पिशित, तरस्, पलल, क्रव्य और आमिष" शब्द भी प्राण्यङ्गजन्य मांस के सूचक न होकर अन्य अर्थों के ही सूचक हैं। अमरकोष के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने जो धातुप्रत्यय जनित शब्द की व्युत्पत्ति दी है, उससे "पिशित = अवयववान्, तरस = बलवान्, मांस = मानकारक, पलल = गमनकारक, क्रव्य = भयकारक अथवा गतिकारक और आमिष = किंचित् स्पर्धाकारक अथवा सेचन अर्थ का ही प्रतिपादन होता है। कोशकारों के अतिरिक्त आयुर्वेद के ग्रन्थों में भी ऐसे अनेक शब्दों को वनस्पतियों के अर्थों में ही प्रयुक्त किया है। ५. वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् और अन्य संहिता-ग्रन्थों में भी ऐसे मांसादि शब्दों के प्रयोग निर्विवादरूप से प्राण्यङ्गजनित मांस के लिए कदापि प्रयुक्त नहीं हैं। ६. तन्त्रग्रन्थों में भी यही स्थिति है। वहाँ ऐसे शब्दों को वस्तुतः आध्यात्मिक अर्थों में ही सूचित किया है किन्तु वामाचार के नाम पर जिह्वालोलुपवर्ग अपनी लिप्साओं के अनुसार अर्थ करके विकृतमार्ग का अनुसरण करते हैं। प्राचीन महर्षियों की कथन-पद्धति का वास्तविक तथ्य एवं प्रक्रिया का पारम्परिक बोध न होने से मनमाना अर्थ लगाकर समाज में दूषण फैलाने वाले अथवा आक्षेपसिद्धि के लिये दुर्वृत्ति के लोग ऐसा करते हैं।

---

१. यह बात उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्रीजी ने कही थी, जबकि उन्होंने इसके लिये स्वयं आगमप्रभाकरजी से पूछा था।

"जैन-साहित्य में प्रयुक्त मांस-मत्स्यादि शब्दों के वास्तविक अर्थ" आधुनिक व्यवहार में प्रचलित अर्थ कथमपि नहीं हैं, यह निश्चित है। इस तथ्य को "मानव-भोज्य-मीमांसा" ग्रन्थ के द्वितीय प्रकरण में अत्यन्त विस्तार से पंन्यास श्री कल्याणविजयजी गणी ने स्पष्ट किया है। प्रसिद्धार्थ और अप्रसिद्धार्थ का विवेक नहीं रखने से ही अल्पज्ञ वर्ग ऐसी दुर्भावनाएँ फैलाते हैं। सूर्य-प्रज्ञप्ति में "नक्षत्र-भोजन" की बात नक्षत्रों के दोष से मुक्त होने के लिये उनकी तुष्टि करने वाले पदार्थों के भोजन से सम्बन्ध है। ज्योतिषशास्त्र में वारदोष, तिथिदोष, ग्रहदोष, शकुनदोष, दुर्योग आदि की निवृत्ति के लिये ऐसे उपाय बहुधा दिखाये गये हैं, उन्हीं को यहाँ भी उदाहरण के रूप में प्रसङ्गपूर्वक संक्षेप में दिया होगा। यह धारण अवश्य ही स्वीकरणीय है।

"मुहूर्त-चिन्तामणि" में भी ऐसे नक्षत्रों के दोष से छुटकारा पाने के लिये खाद्य-वस्तुओं का कथन हुआ है। उनमें भी "मांस" शब्द प्रयुक्त है। किन्तु उसके प्रसिद्ध टीकाकार गोविन्द ज्योतिर्विद् ने अपनी "पीयूषधारा" टीका में स्पष्ट लिखा है कि —"नक्षत्रदोहदं कुलाचारनित्यादिकमिदं भक्ष्याभक्ष्यं वर्णभेदेन देशभेदेन वा भक्ष्यमेतदभक्ष्यमिति विचार्य भक्ष्यसम्भवे भक्षयेत्, अभक्ष्यसम्भवे आलोकयेत् पश्येत् स्पृशेद वेत्यपि ध्येयम्। (पृ० ३९०, निर्णयसागर बम्बई प्रकाशन)। इसका सारांश यह है कि —"नक्षत्रदोहद के पालन में वर्णभेद और देशभेद के आधार पर भक्ष्याभक्ष्य का विचार करके जैसा उचित हो वह करे। यदि भक्ष्य न हो तो उसको देखे अथवा स्पर्श करे" वहीं नारद के किसी ग्रन्थ का तथा वसिष्ठ, कश्यप, श्रीपति और भट्ट उत्पल द्वारा भी नक्षत्र-दोहद कथन का संकेत दिया है। अपने कथन के प्रमाण में टीकाकार ने "गुरु" के वचनों को उद्धृत करते हुए बतलाया है कि --"अत्र यदभक्ष्यं दुष्प्राप्यं वा तत् स्मृत्वा दृष्ट्वा दत्त्वा गन्तव्यमित्याह गुरुः।" इससे स्पष्ट है कि ये दोहद-भक्ष्य जनसाधारण को लक्ष्य में रखकर सूचित किये थे और उनमें विवेक को प्रधानता दी थी।

आचार्य श्रीमलयगिरि ने इस प्रसंग की व्याख्या में सामान्य अर्थ के रूप में "कृत्तिका में प्रारब्ध कार्य निर्विघ्न सिद्ध हो, तदर्थ दधिमिश्रित ओदन का भोजन किया जाता है" इतना कहकर "शेष सूत्रों में देखें" कह दिया है।

आचार्य श्री घासीलालजी महाराज ने अपनी व्याख्या प्रमेय-बोधिनी में (दशम प्राभृत के सत्रहवें प्राभृत-प्राभृत में) "नामैकदेशग्रहणेन नामग्रहणं भवतीति नियमात्" कहकर "वृषभमांस से अतूरे का सार अथवा चूर्ण ग्राह्य है" ऐसा बतलाया है तथा मृगमांस का अर्थ इन्द्रावरुणी वनस्पति, दीपकमांस = अजवाइन का चूर्ण, मण्डूकमांस = मण्डूकपर्णी का चूर्ण, नखीमांस = वाघनखी का चूर्ण, वराहमांस = वाराहीकन्द का चूर्ण, जलचरमांस = जलचर कुम्भिका का चूर्ण, तिन्तिणीकमांस = इमली का चूर्ण ऐसे अर्थ स्पष्ट किये हैं।[1]

आचार्य श्री अमोलकऋषिजी ने भी अपनी व्याख्या में ऐसे ही अर्थों को व्यक्त किया है, जिसकी तालिका इस प्रकार है—

नक्षत्र-भोजन-तालिका

१. कृत्तिका	दही	दधि
२. रोहिणी	वसहमंस	घृत
३. मिगसिर	मिगमंस	कस्तूरी
४. आर्द्रा	णवणीय	नवनीत (मक्खन)

१. द्रष्टव्य, टीका ग्रन्थ, पृ. १०४८ से १०५२ तक। श्री सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रम् (प्रथम भाग), अ. भा. श्वे. स्था. जैन शास्त्रोद्धार समिति, अहमदाबाद से प्रकाशित।

५. पुनर्वसु	घय	घृत
६. पुष्य	खीर	
७. अश्लेषा	दीवगमंस	कच्चसिग अथवा कमल
८. मघा	कक्कारि	केशर (?) अथवा केसार
९. पूर्वाफाल्गुनी	मेहगमंस	एलायची अथवा आलू
१०. उत्तराफाल्गुणी	णक्खिमंस	लसूणकंद अथवा आलू
११. हस्त	वत्थाणिएग	सिंघाड़ा
१२. चित्रा	मगसूए	मूंग की दाल
१३. स्वाति	फल	
१४. विशाखा	आलिसिया	आठली अथवा शाक
१५. अनुराधा	मासा करेण	मिथ कुरो धान्य
१६. ज्येष्ठा	कोलट्ठिय	कोला-कद्दू
१७. मूल	मूलक	मूली अथवा मोगरे का शाक
१८. पूर्वाषाढा	आमलग	आंवला
१९. उत्तराषाढा	बिल्ल	बिल्व फल अथवा पक्का नीबू
२०. अभिजित	पुप्फ	पुष्प
२१. श्रवण	खीर	
२२. धनिष्ठा	जूस	करेला अथवा सक्कर कोला
२३. शतभिषा	तुम्बरात	तूंबा
२४. पूर्वाभाद्रपदा	कारियए	करेला
२५. उत्तरभाद्रपदा	वराहमंस	कपूर
२६. रेवती	जलयरमंस	जलचर फूलन अथवा पानी
२७. अश्विनी	तित्तरमंस	सीताफल
२८. भरणी	तिल तंदुल	तिल्ली का तेल अथवा चावल

इस तरह अट्ठाईस नक्षत्रों के भोजन का विषय जैसा अन्य स्थान में देखने में आया है वैसा ही लिखा है। टीकाकार श्री मलयगिरि आचार्य ने इसकी टीका नहीं की है। तत्त्व केवलिगम्य।

—आचार्य अमोलकऋषि जी म.

आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज द्वारा सम्पादित—सूर्यप्रज्ञप्ति पा. १० अन्तरपाहुड-१७ पृ. २२०-२२३.

११. उपसंहार एवं कर्तव्य-बोध

इन सब विवेचनों के द्वारा हम एक ही निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि "विश्व की सर्वांश में सर्वज्ञ ही जानते हैं। बुद्धिजीवी जगत् इसकी समग्रता को पहचानने में सदैव अक्षम ही रहा है। दुर्विज्ञेय आधिभौतिक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आधिदैविक और आध्यात्मिक भूमिकारूढ हुए बिना जीव-जगत् की जिज्ञासा पूर्ण नहीं हो सकती। अलौकिक तत्त्वोपलब्धि अथवा सत्य का साक्षात्कार, आगमों के द्वारा ही सम्भव है। यही कारण है कि विश्व-विद्याओं के निधान आगमों का प्रत्येक अक्षर सभी के लिए बहुमान्य है। सर्वज्ञ की वाणी होने से उसका प्रत्येक अंश सत्य है, श्रद्धेय है और उपास्य है और साथ ही यह भी ध्यातव्य है कि "आगम-साहित्य के वास्तविक तत्त्वों को समझने के उनके लिए मर्मज्ञ मनीषियों से पारम्परिक सम्प्रदायार्थ का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, तभी हम कुछ जान सकते हैं। सूर्य-प्रज्ञप्ति भी एक ऐसा ही आगम ग्रन्थ है, जिसके रहस्यार्थ का परिज्ञान आधुनिक परिभाषाओं

की अपेक्षा प्राचीन गाणितिक एवं खगोलीय परिभाषाओं को समझे बिना तुष-कुट्टन के समान ही निष्फल हो सकता है।

अन्त में मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि भारतीय संस्कृति के इन अपूर्व ग्रन्थ-रत्नों के चिरन्तन सत्य के परिचायक तत्त्वों की खोज में विद्वान् गवेषकों एवं चिन्तकों को जैन, वैदिक और बौद्ध परम्परा के ग्रन्थों का संयुक्त रूप से परिशीलन करना चाहिये, क्योंकि ये तीनों धाराएँ प्रारम्भ से ही एक ही लक्ष्य से बही हैं किन्तु बीच के साम्प्रातिक काल में कुछ तो स्वयं के दुराग्रहों से और कुछ पराये लोगों के बहकावे के कारण विशृंखलित हो गई हैं। जब तक परस्पर मिलकर एक-दूसरे की न्यूनताओं को पूर्ण नहीं किया जाएगा तब तक पूर्णता की प्राप्ति आकाश-पुष्प ही बनी रहेगी। अतः—

यूयं यूयं वयमिह वयं सर्वदैवं ब्रुवद्भि-
र्हन्ता हन्ताग्रह-निपतितैश्चंशितं नैव किं किम्।
सञ्चिन्त्यातः पुनरपि निजं स्वत्वमुद्धर्तुमार्या,
यूयं ये ते वयमिति मिथः स्वात्मना संवदन्तु॥

यही निवेदन है, कामना है और प्रार्थना है॥ॐ॥

विषयानुक्रम

प्रथम प्राभृत

प्रथम प्राभृतप्राभृत

वीरत्थुई ६
पंचपयवंदणं जोइसरायपण्णत्तिपरूवणपइण्णा य ३
पाहुडाणं विसयपरूवणं ४
पढमपाहुडगय अट्ठपाहुडपाहुडसुत्ताणं विसयपरूवणं ४
पढमपाहुडस्स पडिवत्तिसंखा ४
बितियपाहुडस्स विसयपरूवणं ४
" पडिवत्तिसंखा ४
दसमे पाहुडे बावीसं पाहुडपाहुडाणं विसयपरूवणं ५
मासस्स मुहुत्ताणं वड्ढीऽवड्ढी ५
सव्वसूरमंडलमग्गे सूरस्स गमणागमणे राइंदियप्पमाणं ६
सूरमंडलेसु सूरस्स सइं दुक्खुत्तो वा चारं ६
आइच्चसंवच्छरे अहोरत्तप्पमाणं ८
उपसंहारसुत्तं

द्वितीय प्राभृतप्राभृत

सूरस्स दाहिणा अद्धमंडलसंठिई ९
सूरस्स उत्तरा अद्धमंडलसंठिई १०

तृतीय प्राभृतप्राभृत

सूरियाणं संचरण-खेत्तं १३

चतुर्थ प्राभृतप्राभृत

सूरियाणं अण्णमण्णस्स अंतरचारं १५

पंचम प्राभृतप्राभृत

सूरस्स दीवसमुद्द-अवगाहणाणंतरं चारं १८

षष्ठ प्राभृतप्राभृत

सूरस्स एगमेगे राइंदिए मंडलाओ मंडलसंकमणखेत्तचारं २१

सप्तम प्राभृतप्राभृत

चंद-सूरमंडल-संठिई २४

अष्टम प्राभृतप्राभृत

सूरस्स सव्वमंडलाणं बाहल्लं आयाम-विक्खंभ-परिक्खेवं च २५
सव्वसूरमंडलाणं बाहल्ल अंतरं अद्धापमाणं च २८

द्वितीय प्राभृत

प्रथम प्राभृतप्राभृत
सूराणं तेरिच्छगई ३०

द्वितीय प्राभृतप्राभृत
सूरस्स मंडलाओ मंडलान्तरसंकमणं ३२

तृतीय प्राभृतप्राभृत
सूरस्स मुहुत्तगइपमाणं ३३

तृतीय प्राभृत

चंदिम-सूरियाणं ओभासखेत्तं उज्जोयखेत्तं पगासखेत्तं च ३८

चतुर्थ प्राभृत

सेयाते संठिई ४१
चंदिम-सूरियसंठिई ४१
सूरियस्स तावक्खेत्तसंठिती ४३
तावक्खेत्तसंठिइए बाहाओ ४४

पंचम प्राभृत

सूरियस्स लेस्सापडिघायगा पव्वता ४८

षष्ठ प्राभृत

सूरियस्स ओयसंठिई ५१

सप्तम प्राभृत

सूरिएण पगासिया पव्वया ५६

अष्टम प्राभृत

सूरस्स उदयसंठिई ५७
वासा उउ ६३
हेमंत उउ ६३
गिम्ह उउ ६४
अयणाइ ६४
उस्सप्पिणी-ओसप्पिणी ६५
लवणसमुद्दो ६५
धायइसंडो ६५
अब्भंतरपुक्खरद्धो ६६

नवम प्राभृत

पोरिसिच्छायनिव्वत्तणं ६७
पोरिसिनिवत्तणं ६७
पोरिसिपमाणं ७१

दशम प्राभृत

प्रथम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं आवलिया-णिवायजोगो य ७४

द्वितीय प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं चंदेण जोगकालो ७५

णक्खत्ताणं सूरेण जोगकालो ७६

तृतीय प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं पुव्वाइभागा खेत्त-कालप्पमाणं च ७७

चतुर्थ प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं चंदेण जोगारंभकालो ७८

पंचम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं कुलोवकुलाइं ८५

षष्ठ प्राभृतप्राभृत

दुवालसासु पुण्णमासिणीसु कुलाइ-णक्खत्त-जोगसंखा ८७

दुवालसासु अमावासासु णक्खत्तजोगसंखा ९०

दुवालसासु अमावासासु कुलाइ-णक्खत्त-जोगसंखा ९१

सप्तम प्राभृतप्राभृत

दुवालस पुण्णिमासु अमावासासु य चंदेण-णक्खत्तसंजोगो ९४

अष्टम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं संठाणं ९५

नवम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं तारग्गसंखा ९८

दशम प्राभृतप्राभृत

वास-हेमंत-गिम्ह-राइंदियाणं १०३

ग्यारहवां प्राभृतप्राभृत

चंदमग्गो णक्खत्तजोगसंखा १०७

रवि-ससि-णक्खत्तेहिं अविरहियाणं, विरहियाणं सामण्णाण य चंदमंडलाणं संखा १०८

बारहवां प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं देवया ११०

तेरहवां प्राभृतप्राभृत

मुहुत्ताणं णामाइं ११३

चौदहवां प्राभृतप्राभृत

दिवसराईणं णामाइं ११४

पन्द्रहवां प्राभृतप्राभृत
तिहीणं णामाइं ११५
सोलहवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताणं गोत्ता ११६
सत्तरहवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताणं भोयणं कज्जसिद्धी य ११९
अठारहवां प्राभृतप्राभृत
एगे जुगे आदिच्च-चंदचारसंखा १२१
उन्नीसवां प्राभृतप्राभृत
एगसंवच्छरस्स मासा १२२
बीसवां प्राभृतप्राभृत
संवच्छराणं संखा लक्खणं च १२३
लक्खणसंवच्छरस्स भेया १२४
इक्कीसवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताणं दाराइं १२५
बाबीसवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताणं सरूवपरूवणं १२८
णक्खत्तमंडलाणं सीमाविक्खंभो १३०
णक्खत्ताणं चंदेण जोगो १३१
चंदस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो १३२
सूरस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो १३३
चंदस्स अमावासासु जोगो १३४
सूरस्स अमावासासु जोगो १३५
पुण्णिमासिणीसु चंदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताणं जोगो १३६
अमावासासु चंदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताणं जोगो १३७
चंदेण च सूरेण य णक्खत्ताणं जोगकालो १३८
चंद-सूर-गह-णक्खत्ताणं गइसमावण्णत्तं १३९
चंद-सूर-गह-णक्खत्ताणं जोगो १३९

ग्यारहवां प्राभृत

पंचण्हं संवच्छराणं पारंभ-पज्जवसाणकालं, चंद-सूराण-णक्खत्तसंजोगकालो च १४१
पढमं चंदसंवच्छरं १४१
बितियं चंदसंवच्छरं १४१
ततियं अभिवड्ढियं संवच्छरं १४२
चउत्थं चंदसंवच्छरं १४२
पंचमं अभिवड्ढियं संवच्छरं १४३

बारहवां प्राभृत

पंचण्हं संवच्छराणं मासाणं च राइंदियमुहुत्तप्पमाणं १४४
पढमं णक्खत्तसंवच्छरं १४४
बितियं चंदसंवच्छरं १४४
ततियं उडुसंवच्छरं १४५
चउत्थं आइच्चसंवच्छरं १४५
पंचमं अभिवड्ढियसंवच्छरं १४६
एगस्स जुगस्स अहोरत्त-मुहुत्तप्पमाणं १४६
पंचण्हं संवच्छराणं पारंभ-पज्जवसाणकालस्स समत्तपरूवणं १४७
उडूणं णामाइं कालप्पमाणं च १४८
अवम-महरित्तरत्ताणं संखा हेऊ च १४८
वासिकियासु आवट्टियासु चंदेण सूरेण य णक्खत्तजोगकालो १४९
हेमंतियासु आवट्टियासु चंदेण सूरेण य णक्खत्तजोगकालो १५०
जोगाणं चंदेण सद्धिं जोग-परूवणं १५१

तेरहवां प्राभृत

चंदमसो कट्ठोऽवड्ढी १५२
एगमुगे पुण्णिमासिणीओ अमावासाओ १५२
चंदाइच्च अद्धमासे चंदाइच्चाणं मंडलचारं १५३
पढमे चंदायणे १५३
दोच्चे चंदायणे १५४
तच्चे चंदायणे १५५

चौदहवां प्राभृत

वीसिया अंधयारस्स य बहुलकारणं १५७

पन्द्रहवां प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराणं गइपरूवणं १५८
चंद-सूर-णक्खत्ताणं विसेसगइपरूवणं १५९
चंदस्स णक्खत्ताण य जोगगइपरूवणं १५९
चंदस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवणं १५९
सूरस्स णक्खत्ताण य जोग-गइकालपरूवणं १६०
सूरस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवणं १६०
क—णक्खत्तमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं १६०
ख—चंदमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं १६०
ग—उडुमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तमासस्स य मंडलचारं १६१
घ—आइच्चमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं १६१
ङ—अभिवड्ढियमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं १६१
एगमेगे अहोरत्ते चंद-सूर-णक्खत्ताणं मंडलचारं १६१
एगमेगे मंडले चंद-सूर-णक्खत्ताणं अहोरत्ते चारं १६२
एगमेगजुगे चंद-सूर-णक्खत्ताणं मंडल चारं १६२

सोलहवां प्राभृत

दोसिणाइयाणं लक्खणा १६१

सत्तरहवां प्राभृत

चंद-सूरियाणं चवणोववाया १६४

अठारहवां प्राभृत

चंदाइच्चाईणं भूमिभागाओ उड्ढत्तं १६७
ताराणं अणुत्ते तुल्लत्ते कारणाइं १६८
चंदस्स गह-णक्खत्त-ताराणं परिवारो १६९
मंदरपव्वयाओ जोइसचारं १७०
लोअंताओ जोइसठाणं १७०
णक्खत्ताणं अब्भंतराइं चारं १७०
चंद-सूर-गह-णक्खत्तविमाणाणं संठाणाइं १७१
चंद-सूर-गह-णक्खत्त-तारा-विमाणाणं आयाम-विक्खंभ-परिक्खेव-बाहिल्लाइं १७२
चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराणं विमाणपरिवहणं १७३
जोइसियाणं सिग्घ-मंदगइपरूवणं १७७
जोइसियाणं अप्प-महिड्ढिपरूवणं १७७
ताराणं अबाहा अंतरपरूवणं १७७
चंदस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवार विउव्वणा य १७८
सूरस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवार विउव्वणा य १७९
जोइसियाणं देवाणं ठिई १७९
जोइसियाणं अप्पबहुत्तं १८०

उन्नीसवां प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराणं परिमाणं १८१
जम्बुद्दीवो-जंबुद्दीवे जोइसियपरिमाणं १८२
लवणसमुद्दो १८२
धायईसंडदीवे १८३
कालोए समुद्दे १८४
पुक्खरवरदीवे १८६
माणुसुत्तरे पव्वए १८७
अब्भिंतर-पुक्खरद्धे १८७
समयखेत्ते १८८
अंतोमणुस्सखेत्ते जोइसियाणं उड्ढोववण्णगाइपरूवणं १९२
पुव्वपुंदस्स चवणाणंतरं अण्णइंदस्स उववज्जणं १९२
माणुसखेत्तस्स बहिया जोइसियाणं उड्ढोववण्णगाइपरूवणं १९३
लेसाणं दीव-समुद्दाणं आयामाइ १९३

बीसवाँ प्राभृत

चंदिम-सूरियाणं अणुभावो	१९७
राहु-कम्मपरूवणं	१९८
राहुस्स णव णामाइं	१९९
राहुस्स विमाणा पंचवण्णा	१९९
राहुस्स दुविहत्तं	२००
चंदस्स ससी-अभिहाणं	२०१
सूरस्स आइच्चाभिहाणं	२०१
चंद-सूराई णं काम-भोगपरूवणं	२०१
[illegible]	२०४
संगहणीगाहाओ	२०५
उवसंहारो	२०६
सुयधरिसणीयं चंदपण्णत्तिसुत्तं	२०७
परिशिष्ट	
श्री सूर्य-चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र का गणितविभाग	२१०
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र २० व २४ का परिशिष्ट	२३९

प्रथम प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

थोरत्थुई

जयइ नव-नलिण-कुवलय, विअसिय-सयवत्त-पत्तल-दलच्छो ।।
वीरो गइंद-मयंगल, सललिय-गयविक्कमो भयवं ।। १ ।।

पंच-पय-वंदणं जोइसगणराय-पण्णत्ति-परूवण-पइण्णा य

नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयंग-परिवंदिए गयकिलेसे ।।
अरिहे सिद्धायरिय-उवज्झाए सव्वसाहू य ।। २ ।।

फुड-वियड-पागडत्थं, वुच्छं पुव्व-सुय-सार-णिस्संदं ।।
सुहुमं गणिणोवइट्ठं, जोइसगणराय-पण्णत्तिं ।। ३ ।।

नामेण "इंदभूइ" त्ति, गोयमो वंदिऊण तिविहेणं ।।
पुच्छइ जिणवरवसहं, जोइसरायस्स पण्णत्तिं ।। ४ ।।

१-२. तेणं कालेणं तेणं समएणं "मिहिला" णामं णयरी होत्था, वण्णओ ।

तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं "माणिभद्दे" णामं चेइए होत्था, वण्णओ ।

तीसे णं मिहिलाए "जिएसत्तू" राया परिवसइ, वण्णओ ।

तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो "धारिणी" णामं देवी होत्था, वण्णओ ।

तेणं कालेणं, तेणं समएणं तंमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, वण्णओ ।

[क] परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ ।

[ख] परिसा पडिगया ।

[ग] राया जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए ।

तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी "इंदभूई" णामं अणगारे जाव पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

बीस पाहुडाणं विसयपरूवणं

३. गाहाओ—१. कइ मंडलाइ वच्चइ, २. तिरिच्छा किं च गच्छइ ॥
३. ओभासइ केवइयं, ४. सेयाइ किं ते संठिई ॥ १ ॥
५. कहिं पडिहया लेसा, ६. कहिं ते ओयसंठिई ॥
७. के सूरियं वरयंति, ८. कहं ते उदयसंठिई ॥ २ ॥
९. कइ कट्ठा पोरिसिच्छाया, १०. जोके किं ते व आहिए ॥
११. किं ते संवच्छरेआइं, १२. कहं संवच्छराइ य ॥ ३ ॥
१३. कहं चंदमसो वुड्ढी, १४. कया ते दोसिणा बहू ॥
१५. के सिग्घगई वुत्ते, १६. कहं दोसिण-लक्खणं ॥ ४ ॥
१७. चयणोववाय, १८. उच्चत्ते, १९. सूरिया कह आहिया ॥
२०. अणुभावे के व संवुत्ते, एवमेयाइं वीसई ॥ ५ ॥

पढमपाहुडगय अट्ठपाहुडपाहुडसुत्ताणं विसयपरूवणं

४. गाहाओ—१. वड्ढी वड्ढी मुहुत्ताण, २. मंडलसंठिई ॥
३. के ते खिण्णं परियरइ, अंतरं किं चरंति य ॥ १ ॥
५. ओगाहइ केवइयं, ६. केवइयं च विकंपइ ॥
७. मंडलाण य संठाणे, ८. विक्खंभो-अट्ठ पाहुडा ॥ २ ॥

पढमपाहुडस्स पडिवत्तिसंखा

५. गाहा — ४. छ, ५. पंच य, ६. सत्तेव य, ७. अट्ठ, ८. तिन्नि य हवंति पडिवत्ती ॥
पढमस्स पाहुडस्स, हवंति एयाउ पडिवत्ती ॥ १ ॥

बितियपाहुडस्स विसय-परूवणं

६. गाहाओ– पडिवत्ताओ उदए, तह अत्थमणेसु य ॥
२. भेयग्घाए कण्णकला, ३. मुहुत्ताणं गती ति य ॥ १ ॥
निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगई हय ॥
चुलसीइ सयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥ २ ॥

पडिवत्तिसंखा

गाहा—१. उदयंमि अट्ठ भणिया, २. भेयग्घाए दुवे य पडिवत्ती ॥
३. चत्तारि मुहुत्तगईए, हुंति तइयंमि पडिवत्ती ॥ ३ ॥

दसमे पाहुडे बावीसं पाहुड-पाहुडाणं विसयपरूवणं

७. गाहाओ--१. आवलिय, २. मुहुत्तग्गो, ३ एवं भागा य, ४. जोगस्स ॥
५. कुलाइं, ६. पुण्णमासी य, ७. सन्निवाए य ८. संठिई ॥ १ ॥
९. तारग्गं, च, १०. नेता य, ११. चंदमग्गत्ति, यावरे ॥
देवता य अज्झयणे, १३. मुहुत्ताणं नामाइ य ॥ २ ॥
१४. दिवसा-राइवुत्ता य, १५. तिहिं, १६. गोत्ता, १७. जोयणाणि य ॥
१९. आइच्चचार, १९. मासा य, २०. पंच संवच्छराइ य ॥ ३ ॥
२१. जोइस्स य, दाराइं, २२. नक्खत्ता विजये वि य ॥
दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुड-पाहुडा ॥ ४ ॥

"मासस्स" मुहुत्ताणं वड्ढोऽवड्ढी

८. ता कहं ते वड्ढोऽवड्ढी मुहुत्ताणं आहिए त्ति, वदेज्जा ?

ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसए सत्तावीसं च सट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वदेज्जा ।[1]

---

१. (क) मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का यह सूत्र यहाँ कैसे दिया गया है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है ।

सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में उत्थानिका के बाद बीस प्राभृतों के प्राथमिक विषयों की प्ररूपक पांच गाथाएँ हैं । उनमें से प्रथम गाथा में प्रथम प्राभृत के प्रथम प्राभृतप्राभृत की प्राथमिक विषयसूचक गाथा का "कइ मंडलाइ वच्चइ" यह प्रथम पद है । इसके अनुसार "एक वर्ष में सूर्य कितने मंडलों में एक बार और कितने मण्डलों में दो बार गति करता है ।" यह विषय है ।

वृत्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करते हैं --"प्रथमे प्राभृते—सूर्यो वर्षमध्ये कति मण्डलान्येकवारं, कति वा मण्डलानि द्विःकृत्वा व्रजतीत्येतन्निरूपणीयम् । किमुक्तं भवति ? एवं गौतमेन प्रश्ने कृते तदनन्तरं सर्वं तद्विषयं निर्वचनं प्रथमे प्राभृते वक्तव्यमिति ।" किन्तु प्रथम प्राभृत के आठ प्राभृतप्राभृतों की विषयप्ररूपक दो गाथाओं में से प्रथम गाथा के प्रथम पद में "वड्ढोऽवड्ढी मुहुत्ताणं" यह पद है । इसके अनुसार प्रथम प्राभृत के प्रथम प्राभृतप्राभृत में प्रथम सूत्र में वृत्तिकार के अनुसार चार प्रकार के मासों के मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का प्ररूपण है ।

वृत्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—"प्रथमस्य प्राभृतस्य सत्के प्रथमे प्राभृतप्राभृते मुहूर्तानां दिवस-रात्रिगतानां वृद्ध्यपवृद्धी वक्तव्ये ।"

विषयप्ररूपक संग्रहणी गाथाओं की रचना के पूर्व एवं वृत्तिकार के पूर्व यह व्युत्क्रम हो गया है ।

वृत्तिकार स्वयं उक्त व्युत्क्रम की उपेक्षा कर गए तो अन्य सामान्य श्रुतधरों का तो कहना ही क्या ?

यह सूत्र क्रमानुसार कहाँ होना चाहिए, इस सम्बन्ध में आगे यथास्थान लिखने का संकल्प है ।

(ख) मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का यह सूत्र भी खण्डित प्रतीत होता है, क्योंकि प्रस्तुत सूत्र के प्रश्नसूत्र में मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का प्रश्न है किन्तु उत्तरसूत्र में केवल नक्षत्रमासों के मुहूर्तों का ही कथन है ।

सव्वसूरमंडलमग्गे सूरस्स गमणागमण-राइंदियप्पमाणं

९. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

एस णं अद्धा केवइयं राइंदियग्गे णं आहिते त्ति वदेज्जा ?

ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गे णं आहिते त्ति वदेज्जा ।

सूरमंडलेसु सूरस्स सइं वुक्खुत्तो वा चारं

१०. ता एताए अद्धाए सूरिए कति मंडलाइं चरइ ?

ता चुलसीयं मंडलसयं चरइ ।

बासीइ मंडलसयं वुक्खुत्तो चरइ, तं जहा—णिक्खममाणे चेव, पवेसमाणे चेव ।

दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरइ, तं जहा—सव्वब्भंतरं चेव मंडलं, सव्वबाहिरं चेव मंडलं ।

आइच्चसंवच्छरे अहोरत्तप्पमाणं

११. जइ खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,

सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

पढमे छम्मासे-अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे,

अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

बोच्चे छम्मासे-अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई,

अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

पढमे छम्मासे वा बोच्चे छम्मासे वा णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ ।

तत्थ णं कं हेउं वदेज्जा ?

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयण-सयसहस्समायाम-विक्खंभे णं, तिन्नि जोयण-सयसहस्साइं दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं, च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवे णं पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतर-मण्डलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवछरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगसट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतर तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराणंतरं मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे दो दो एगट्ठिभाग मुहुत्ते एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगे णं तेसीए णं राइंदियसए णं तिण्णि छावट्ठे एगसट्ठि भागमुहुत्तसए दिवस-खेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणि-खेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे दो दो एगसट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगे णं तेसीए णं राइंदियसए णं तिन्नि छावट्ठे एगसट्ठिभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दुच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

उपसंहारसुत्तं

एवं खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

पढमे छम्मासे—अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे,

अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई ।

दोच्चे वा छम्मासे—अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई ।

अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे—नत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, नत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, नत्थि राइंदियाणं वड्ढीवड्ढीए, मुहुत्ताण वा खयोवचएणं नण्णत्थ वा अणुकायगईए,

गाहाओ भाणियव्वाओ ।[1]

१. अत्र अनन्तरोक्तार्थसंग्राहिका अस्या एव सूर्यप्रज्ञप्तेर्भद्रबाहुस्वामिना या निर्युक्तिः कृता तत्प्रतिबद्धा अन्या वा काश्चन ग्रन्थान्तरसुप्रसिद्धा गाथा वर्तन्ते ता "भणितव्वा" पठनीया, ताश्च सम्प्रति क्वापि पुस्तके न दृश्यन्तइति व्यवच्छिन्ना सम्भाव्यन्ते ततो न कथयितुं "व्याख्यातुं वा शक्यन्ते ।" — सूर्य. टीका.

प्रथम प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दाहिणा अद्धमंडलसंठिई

१२. ता कहं ते अद्धमंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे दुवे अद्धमंडलसंठिई पण्णत्ता, तं जहा—

१. दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिई, २. उत्तरा चेव अद्धमंडलसंठिई ।

ता कहं ते दाहिणा अद्धमंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ?

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम—विक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साविपदेसाए अभिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलं संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अभिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्तेहिं दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साविपदेसाए अभिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अभिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरमंडलस्स तंसि

तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे संकममाणे बाहिणाए अंतराए भागाए तस्साविपदेसाए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साविपदेसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणअद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साविपदेसाए बाहिरंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरंसि तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे संकममाणे उत्तराए अंतराए भागाए तस्साविपदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

सूरस्स उत्तरा अद्धमंडलसंठिई

१३. ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिई आहितेति वदेज्जा ?

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयण-सयसहस्समायाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भंतराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भंतराणंतरं दाहिणं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भिंतराणंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरई ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे संकममाणे उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे संकममाणे दाहिणाए अंतराए मागाए तस्साइपएसाए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

प्रथम प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरियाणं संचरण-खेत्तं

१४. ता किं ते चिण्णं पडिचरंति आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, तं जहा—भारहे चेव सूरिए । एरवए चेव सूरिए ।

ता एए णं दुवे सूरिया पत्तेयं पत्तेयं—

तीसाए तीसाए मुहुत्तेहिं एगमेगं अद्धमंडलं चरइ,

सट्ठीए सट्ठीए मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं संघातयति ।

ता निक्खममाणे खलु एते दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति,

पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति तं सयमेगं चोयालं,

प.—तत्थ णं को हेतु, त्ति वदेज्जा ?

उ. ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता-दाहिण-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउतिय सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

उत्तर-पच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइयं सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

तत्थ णं अयं भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

दाहिण-पच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइयं सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

तत्थ णं अयं एरवए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउइयं सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

बाहिण-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

तत्थ णं अयं एरवए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणायताए उदीण-दाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता बाहिण-पच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भाग-मंडलंसि बाणउइय सूरियमयाएं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

उत्तर-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

ता निक्खममाणा खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति ।

पविसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति सयंभगं चोयालं ।

प्रथम प्राभृत

[चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

सूरियाणं अण्णमण्णस्स अंतर-चारं

१५. ता केवइयं एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, आहितेति वएज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

१. तत्थ एगे एवमाहंसु—

ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु ।

२. एगे पुण एवमाहंसु—

ता एगं जोयणसहस्सं एगं च बोत्तीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

३. एगे पुण एवमाहंसु—

ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

४-१. एगे पुण एवमाहंसु—

ता एगं दीवं, एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

५-२. एगे पुण एवमाहंसु—

ता दो दीवे, दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

६-३. एगे पुण एवमाहंसु—

ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे, अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा वा, निवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा,

तत्थ णं को हेउ ? आहितेति वदेज्जा,

ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरसय-अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

१. ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

तया णं णवणउइं जोयणसहस्साइं, छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितेति वदेज्जा,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

२. ते निक्खममाणा सूरिया णवं संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

तया णं णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहितेति वदेज्जा,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

३. ते निक्खममाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

तया णं णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च इक्कावण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, आहितेति वदेज्जा,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणा संकममाणा पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा अभिवड्ढेमाणा, सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

२. ते पविसमाणा सूरिया बोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छत्तीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

३. ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अट्ठाणे जोयणसए अट्ठाणं च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणा संकममाणा पंच पंच जोयणाइं पणतीसे च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं निवड्ढेमाणा निवड्ढेमाणा सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति,

ता जया णं दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडल उवसंकमित्ता चारं चरंति,

तया णं णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते, उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं बोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

प्रथम प्राभृत

[पंचम प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दीव-समुद्द-ओगाहणाणंतरं चारं

१६. १७. ता केवइयं ते दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु

१. ता एगं जोयण-सहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं, दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं, चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता एगं जोयण-सहस्सं, एगं च चउत्तीसं जोयणसयं, दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

३. ता एगं जोयण-सहस्सं, एगं च पणतीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

४. ता अवड्ढं दीवं वा, समुद्दं वा, ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ एगे एवमाहंसु,

५. एगे पुण एवमाहंसु

ता नो किंचि एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं वा, समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

१. ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं, दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

ते एवमाहंसु—

क ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं जंबुद्दीवं दीवं एगं जोयणसहस्सं, एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख- ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं लवणसमुद्दं एगं जोयणसहस्सं, एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

२. एवं चउत्तीसेऽवि जोयणसयं,

३. पणतीसेऽवि एवं चेव भाणियव्वं,

४. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

ता अवड्ढं दीवं वा, समुद्दं वा, ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

ते एवमाहंसु

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं अवड्ढं जंबुद्दीवं दीवं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एवं सव्वबाहिरे मंडलेऽवि, णवरं—"अवड्ढं लवणसमुद्दं" तया णं-"राइंदियं" तहेव,[1]

५. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

ता नो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता चारं चरइ,

ते एवमाहंसु

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं नो किंचि दीवं वा, समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एवं सव्वबाहिरे मंडले वि, णवरं—'नो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, राइंदियं तहेव[2],

१. ऊपर अंकित सूत्र के समान है।

२. ऊपर अंकित सूत्र के समान है।

वयं पुण एवं वयामो—

क—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं जंबुद्दीवं दीवं असीयं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख—ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणियव्वाओ।

प्रथम प्राभृत

[छठा प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स एगमेगे राइंदिए मंडलाओ मंडलसंकमणखेत्तचारं

१८. ता केवइयं ते एगमेगे णं राइंदिए णं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता दो जोयणाइं अद्धछत्तालीसे तेसीइं सयभागे जोयणस्स एगमेगेणं, राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता तिभागूणाइं तिन्नि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता तिण्णि जोयणाइं अद्धसीतालीसं च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५. ता अद्धुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

६. ता चउब्भागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

७. ता चत्तारि जोयणाइं अद्धबावण्णं च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ,

तत्थ णं को हेऊ ? इति वदेज्जा ।

ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

१. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ—

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

२. से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता विकंपइत्ता चारं चरइ,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

३. से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता विकंपइत्ता चारं चरइ,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे दो दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे विकंपमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं पंचदसुत्तरजोयणसए विकंपइत्ता विकंपइत्ता चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१. से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं दो दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरइ,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

२. से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं पंचजोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता विकंपइत्ता चारं चरई,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाऽणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे विकंपमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगे णं तेसीए णं राइंदियसएणं पंचदसुत्तरे जोयणसए विकंपइत्ता चारं चरइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे।

प्रथम प्राभृत

[सप्तम प्राभृतप्राभृत]

चंद-सूर-मंडल-संठिई

१९. ता कहं ते मंडल-संठिई आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता सव्वा वि णं मंडलावता समचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता सव्वा वि णं मंडलावता विसमचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता सव्वा वि णं मंडलावता समचउक्कोणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

४. ता सव्वा वि णं मंडलावता विसमचउक्कोणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु-

५. ता सव्वा वि णं मंडलावता समचक्कवालसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

६. ता सव्वा वि णं मंडलावता विसमचक्कवाल-संठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

७. ता सव्वा वि णं मंडलावता चक्कद्धचक्कवालसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

८. ता सव्वा वि णं मंडलावता छत्तागारसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

ता सव्वा वि णं मंडलावता छत्तागारसंठिया पण्णत्ता,

एएणं णएणं णायव्वं, णो चेव णं इयरेहिं । पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ।

प्रथम प्राभृत

[अष्टम प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स सव्वमंडलाणं बाहल्लं आयाम-विक्खंभ-परिक्खेवं च

२०. ता सव्वा वि णं मंडलवया--
केवइयं बाहल्लेणं ?
केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
केवइयं परिक्खेवेणं ? आहितेति वदेज्जा ।

तत्थ खलु इमा तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा –

तत्थेगे एवमाहंसु

१ ता सव्वा वि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं,
एगं जोयणसहस्सं एगं तेत्तीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं,
तिण्णि जोयणसहस्साइं तिण्णि य णवणउई जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता एगे एवमाहंसु,
एगे पुण एवमाहंसु –

२ ता सव्वा वि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं
एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं,
तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि विउत्तराइं जोयणसयाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

३ ता सव्वा वि णं मंडलवया जोयणं बाहल्लेणं
एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं,
तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि पंचुत्तराइं जोयणसयाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो –
ता सव्वा वि णं मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,
अणियया आयाम-विक्खंभ-परिक्खेवेणं, आहितेति वदेज्जा,
तत्थ णं को हेऊ ? त्ति वदेज्जा ।

ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयण-

सहस्समायाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

१. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

णवणउइ जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगूणणउई जोयणाइं किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं,[1]

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

२. से निक्खम्ममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

णवणउई जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगं चउत्तरं जोयणसयं किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं,

---

१. सूर्यप्रज्ञप्ति तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सूत्रों में सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ कहा गया है किन्तु समवायांग सूत्र में केवल विष्कम्भ ही कहा गया है। इसका समाधान यह है कि वृत्ताकार का आयाम-विष्कम्भ सदा समान होता है, सूर्यमण्डल वृत्ताकार है, अतः केवल विष्कम्भ कहने से आयाम और विष्कम्भ दोनों समझ लेने चाहिए।

सूर्यप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का बाहल्य एक योजन के इकसठ भागों में से अड़तालीस भाग जितना कहा गया है।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का बाहल्य एक योजन के इकसठ भागों में से चौबीस भाग जितना कहा गया है।

इन दो प्रकार के बाहल्य प्रमाणों में से कौन सा वास्तविक है, यह शोध का विषय है।

सूर्यप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि बाह्याभ्यन्तर मण्डलों की अपेक्षा अनियत है, ऐसा लिखा है किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का आयाम, विष्कम्भ और परिधि अनियत नहीं लिखी है।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि जो कही है वह आभ्यन्तर या बाह्य-मण्डलों की है? क्योंकि सूर्यप्रज्ञप्ति में कथित बाह्याभ्यन्तर मण्डलों के आयाम-विष्कम्भप्रमाणों में जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्तिकथित आयाम-विष्कम्भपरिधि का प्रमाण मिलता नहीं है।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

३. से निक्खम्ममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

णवणउइ जोयणसहस्साइं छच्च एकावन्ने जोयणसए णव य एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

४. एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खम्ममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे अट्ठारस अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

एगं च जोयणसयसहस्साइं छच्चसट्ठे जोयणसए आयामविक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्सं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१. से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पणे जोयणसए छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

२. से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोण्णि य एगूणासीए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं निवुड्ढेमाणे निवुड्ढेमाणे अट्ठारस जोयणाइं परिरयवड्ढिं निवुड्ढेमाणे निवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरससहस्साइं एगूणणउइं च जोयणाइं किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

सव्वसूरमंडलाणं बाहल्लं अंतरं अद्धा पमाणं च

ता सव्वा वि णं मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

सव्वा वि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं,

एस णं अद्धा तेसीय सयपडुप्पण्णे पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वएज्जा,

ता अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिरं मंडलवयं बाहिराओ वा मंडलवयाओ अब्भिंतरं मंडलवयं, एस णं अद्धा केवइयं आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वएज्जा,

अब्भिंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलवया—एस णं अद्धा केवइयं आहिए त्ति वएज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिया,

ता अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिरमंडलवया बाहिराओ मंडलवयाओ अब्भिंतर-मंडलवया एस णं अद्धा केवइयं आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचनवुत्तरे जोयणसए तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिए त्ति वदेज्जा,

अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिरा मंडलवया, बाहिराए मंडलवयाए अब्भिंतर-मंडलवया—एस णं अद्धा केवइया आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वदेज्जा ।

द्वितीय प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

सूराणं तेरिच्छगई

२१. ता कहं ते तेरिच्छगई आहिए ? त्ति वएज्जा ।

तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा -

तत्थेगे एवमाहंसु--

१. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ मरीची आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायंसि आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

२. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु -

३. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविओ उट्ठेइ, से णं इमं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि विद्धंसइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

५. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए, पुढवीओ उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायं अणुपविसइ अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उट्ठेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

६. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

७. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि पविसइ, पविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरसू-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु

८. ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेई, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता उत्तरड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमं उत्तरड्ढलोयं तिरियं करेइ, करित्ता दाहिणड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिण-उत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ, करित्ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ, एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वयामो—

ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणायय-उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिण-पुरत्थिमंसि उत्तर-पच्चत्थिमंसि य चउब्भाग-मंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता-एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगासाओ उत्तिट्ठंति,

ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीव-भागाइं तिरियं करेंति, करेंतित्ता पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइं जंबुद्दीव-भागाइं तामेव राओ,

ते णं इमाइं पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेंतित्ता दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव राओ,

ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेंतित्ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणायय-उदीण दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता दाहिण पुरत्थिमंसि उत्तर-पच्चत्थिमंसि य चउब्भाग-मंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता-एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठंति।

द्वितीय प्राभृत
[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मंडलाओ मंडलांतर-संकमणं

२२. ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए चारं चरइ आहिए ? त्ति वएज्जा,

तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकामइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ, एगे एवमाहंसु,

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

१. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए भेयघाएणं[1] संकामइ, तेसि णं अयं दोसे,

"ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे भेयघाएणं संकामइ-एवइयं च णं अद्धं पुरओ न गच्छइ, पुरओ पुरओ अगच्छमाणे मंडलकालं परिहवेइ" तेसि णं अयं दोसे ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

२. ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ, तेसि णं अयं विसेसे,

ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं[2] निव्वेढेइ, एवइयं च णं अद्धं पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मंडलकालं न परिहवेइ, तेसि णं अयं विसेसे,

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ एएणं णएणं णेयव्वं, णो चेव णं इयरेणं,

---

१. मण्डलादपरमण्डलं संक्रामन् संक्रमितुमिच्छन् सूर्यो भेदघातेन संक्रामति, **भेदो** मण्डलस्य मण्डलस्यापान्तराले तत्र **घातो** – गमनं, एतच्च प्रागेवोक्तं, तेन संक्रामति,
किमुक्तं भवति ? विवक्षिते मण्डले सूर्येणापूरिते सति तदन्तरमपान्तरालगमनेन द्वितीयं मण्डलं संक्रामति संक्रम्य च तस्मिन् मण्डले चारं चरति ।

२. मण्डलान्मण्डलं संक्रमान् संक्रमितुमिच्छन् सूर्यस्तदधिकृतं मण्डलं प्रथमक्षणादूर्ध्वमारभ्य कर्ण-कलं निर्वेष्टयति मुंचति,
इयमत्र भावना-'भारत ऐरावतो वा सूर्यः स्व-स्वस्थाने उद्गतः
सन् अपरमण्डलगतं कर्णं प्रथमकोटिभागरूपं लक्ष्यीकृत्य शनैःशनैरधिकृतं
मण्डलं तया कयाचनापि **कलया** मुंचन् चारं चरति' येन तस्मिन्नहोरात्रेऽतिक्रान्ते सति अपरानन्तरमण्डलस्यारम्भे वर्तते इति ।
कर्णकलमिति च क्रियाविशेषणं द्रष्टव्यं, तच्चैवं भावनीयं **कर्णं-अपरमण्डलगतप्रथमकोटिभागरूपं** लक्ष्यीकृत्याधिकृतमण्डलं प्रथमक्षणादूर्ध्वं क्षणे क्षणे कलयाऽतिक्रान्तं यथा भवति तथा निर्वेष्टयतीति । —सूर्य. टीका.

द्वितीय प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मुहुत्त-गइ-पमाणं

२३. ता केवइयं ते खेत्तं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु -

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

(२) ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु--

एगे पुण एवमाहंसु

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

(४) ता छ वि, पंच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं, मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु--

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु-

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि एगं जोयणसयसहस्सं अट्ठ य जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तंसि च दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(२) ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि नउइ जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि सट्ठि जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु--

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरि जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि अडयालीसं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(४) ता छ वि, पंच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु—

ता सूरिए णं उग्गमणमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सिग्घगई भवइ, तया णं छ छ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

मज्झिमं तावक्खेत्तं समासाएमाणे समासाएमाणे सूरिए मज्झिमगई भवइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

मज्झिमं तावक्खेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगई भवइ, तया णं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तंसि च दिवसंसि एक्काणउइ जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते तया णं छ वि, पंच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वयामो—

ता साइरेगाइं पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

प्र. तत्थ को हेऊ ? त्ति वएज्जा ।

उ. – ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खंभेणं, तिन्नि जोयणसयसहस्साइं दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयण-सहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसयाइं एगूणतीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स सोयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहिं य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए सीयालीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स सोयालीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता एगूणवीसाए चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पंच य सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीओलीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे अट्ठारस अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे चुलसीइं चुलसीइं सीयाइं जोयणाइं पुरिसच्छायं निव्वड्ढेमाणे निव्वड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयण-सहस्साइं तिन्नि य पंचुत्तरे जोयणसए पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ।

तया णं इहगयस्स मणुसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं पंच पंच जोयण-सहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसए सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ।

तया णं इहगयस्स मणुसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहि य सोलसुत्तरेहिं जोयणसएहिं एगूणचत्तालीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता सट्ठीए चुण्णिया भागेहिं, सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं पंच पंच जोयण-सहस्साइं तिन्नि य चउरुत्तरे जोयणसए एगूणचत्तालीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ।

तया णं इहगयस्स मणुसस्स एगाहिएहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे अट्ठारस अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे साइरेगाइं पंचासीइ पंचासीइ जोयणाइं पुरिसच्छायं अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अट्ठतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे णं मुहुत्ते णं गच्छइ ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य बावट्ठेहिं जोयणसएहिं य एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

तृतीय प्राभृत

चंदिम-सूरियाणं ओभासखेत्तं उज्जोयखेत्तं तावखेत्तं पगासखेत्तं च

२४. प. ता केवइयं खेत्तं चंदिम-सूरिया ओभासंति, उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति ? आहिएत्ति वएज्जा,

उ. तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिम-सूरिया ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति, पगासेंति[1] एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

२. ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

३. ता अद्धचउत्थे दीवे, अद्धचउत्थे समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

४. ता सत्तदीवे, सत्तसमुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति, जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

५. ता दसदीवे, दससमुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

६. ता बारसदीवे, बारससमुद्दे चंदिम-सूरया ओभासेंति, जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु--

७. ता बायालीसं दीवे, बायालीसं समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति एगे एवमाहंसु,

---

१. अवभासयन्ति, तत्रावभासो ज्ञानस्यापि व्यवह्रियते अतस्तद्व्यवच्छेदार्थमाह-उद्योतयन्ति, स चोद्योतो यद्यपि लोके भेदेन प्रसिद्धो यथा सूर्यगत आतप इति, चन्द्रगतः प्रकाश इति, तथाप्यातपशब्दश्चन्द्रप्रभायामपि वर्तते, यदुक्तम् 'चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना, तथा चन्द्रगतःस्मृतः इति' प्रकाशशब्दः सूर्यप्रभायामपि, एतच्च प्रायो बहूनां सुप्रतीतं-तत एतदर्थप्रतिपत्त्यर्थमुभयसाधारणं भूयोऽप्येकार्थकद्वयमाह तापयन्ति प्रकाशयन्ति आख्याता इति ।

—संस्कृतटीका

एगे पुण एवमाहंसु

८. ता बावत्तरिं दीवे, बावत्तरिं समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पभासेंति, एगे एवमाहंसु.

एगे पुण एवमाहंसु,

९. ता बायालीसं दीवसयं बायालीसं समुद्दसयं चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पभासेंति, एगे एवमाहंसु—

एगे पुण एवमाहंसु –

१०. ता बावत्तरिं दीवसयं बावत्तरिं समुद्दसयं चंदिम-सूरिया ओभासेंति, जाव पभासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

११. ता बायालीसं दीवसहस्सं, बायालीसं समुद्दसहस्सं चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पभासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

१२. ता बावत्तरं दीवसहस्सं, बावत्तरं समुद्दसहस्सं चंदिम-सूरिया ओभासंति जाव पभासेंति, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम —विक्खंभे णं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

से णं एगाए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते सा णं जगई अट्ठ-जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता,

एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव,[1]

एवामेव सपुव्वावरे णं जंबुद्दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीति-मक्खायं,

जंबुद्दीवे णं दीवे पंच चक्कभागसंठिए ? आहिएत्ति वएज्जा,

प.—ता कहं जंबुद्दीवे दीवे पंच चक्कभागसंठिए ? आहिए त्ति वएज्जा,

१. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के प्रथम वक्षस्कार सूत्राक ४ से षष्ठ वक्षस्कार सूत्राक १२५ पर्यन्त के सभी सूत्रों के पाठ यहाँ समझने की सूचना है।

उ.—ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वभंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स तिण्णि पंच चक्कभागे ओभासेंति जाव पगासेंति, तं जहा

ता एगे वि सूरिए एगं दिवड्ढं पंच चक्कभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एगं दिवड्ढं पंच चक्कभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स दोण्णि पंच चक्कभागे ओभासेंति जाव पगासेंति,

ता एगे वि सूरिए एगं पंच चक्कवालभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एगं पंच चक्कवालभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

चतुर्थ प्राभृत

सेयाते संठिई

प. —ता कहं ते सेआते[1] संठिई[2] आहिताति वदेज्जा ?

उ.—तत्थ खलु इमा दुविहा संठिती पण्णत्ता, तं जहा—

१. चंदिम-सूरियसंठिती य ।

२.—ताक्खेत्तसंठिती य ।

चंदिम-सूरियसंठिई

प. ता कहं ते चंदिम-सूरियसंठिती आहिताति वदेज्जा ?

उ.- तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ ।

१. तत्थेगे एवमाहंसु—
ता समचउरंससंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

२. एगे पुण एवमाहंसु
ता विसमचउरंससंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णता, एगे एवमाहंसु ।

३. एगे पुण एवमाहंसु
ता समचउक्कोणसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

४.—एगे पुण एवमाहंसु —
ता विसमचउक्कोणसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

५. —एगे पुण एवमाहंसु—
ता समचक्कवालसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

६.—एगे पुण एवमाहंसु—
ता विसमचक्कवालसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

---

१. वृत्तिकार ने 'श्वेतता' की व्याख्या इस प्रकार की है
'इह श्वेतता चन्द्र-सूर्यविमानानामपि विद्यते, तत्कृततापक्षेत्रस्य च, ततः श्वेततायोगादुभयमपि श्वेतताशब्देनोच्यते ।

२. चन्द्र-सूर्य विमानों के संस्थान अन्यत्र कहे गये हैं । अतः चन्द्र-सूर्य विमानों की संस्थिति के सम्बन्ध में प्रश्नकर्ता के अभिप्राय का स्पष्टीकरण वृत्तिकार ने इस प्रकार किया है -
'इह चन्द्र-सूर्यविमानानां संस्थानरूपा संस्थितिः प्रागेवाभिहिता तत इह चन्द्र-सूर्यविमान-संस्थितिश्चतुर्णामपि अवस्थानरूपा पृष्टा द्रष्टव्या ।'

७.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता चक्कद्धचक्कवालसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

८.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता छत्तागारसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

९.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता गेहसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१०.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता गेहावणसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

११.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता पासायसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१२.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता गोपुरसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१३.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता पेच्छाघरसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१४.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता वलभीसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१५.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता हम्मियतलसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१६.—एगे पुण एवमाहंसु—

ता वालग्गपोतियासंठिया[1] चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

ता समचउरंस-संठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता,

एएणं णएणं णेयव्वं णो चेव णं इमरेहिं[2] ।

---

१. बालाग्रपोतिकाशब्दो देशीशब्दत्वादाकाशतडागमध्ये व्यवस्थितं क्रीडा-स्थानं लघुप्रासादम् । - सूर्य. वृत्ति

२. परतीर्थिकों की इन सोलह प्रतिपत्तियों में से केवल एक प्रतिपत्ति सूत्रकार की मान्यतानुसार है इस विषय में वृत्तिकार का कथन यह है —

'तत्थेत्यादि-तत्र तेषां षोडशानां परतीर्थिकानां मध्ये ये ते वादिन एवमाहुः' समचतुरस्रसंस्थिता चन्द्रसूर्य-संस्थितिः प्रज्ञप्ता इति,

एतेन नयेन, नेतव्यं एतेनाभिप्रायेणास्मन्मतेऽपि चन्द्र-सूर्यसंस्थितिरवधार्येति भावः, तथाहि -- 'इह सर्वेऽपि कालविशेषाः सुषमसुषमादयो युगमूलाः ।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सूरियस्स तावक्खेत्तसंठिती

प. ता कहं ते तावक्खेत्तसंठिती ? आहिएत्ति वएज्जा ।

उ.—तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा तत्थ णं--

१. एगे एवमाहंसु
ता गेहसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

२.—एगे पुण एवमाहंसु --
गेहावणसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

३.—एगे पुण एवमाहंसु -
पासायसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

४. एगे पुण एवमाहंसु--
गोपुरसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

५. एगे पुण एवमाहंसु —
पिच्छाघरसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

६. —एगे पुण एवमाहंसु —
वलभीसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

७. एगे पुण एवमाहंसु --
हम्मियतलसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

८. एगे पुण एवमाहंसु—
वालग्गपोतियासंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

युगस्य चादौ श्रावणे मासे बहुलपक्षप्रतिपदि प्रातरुदयसमये एकः सूर्यो दक्षिणपूर्वस्यां दिशि वर्तते, तद्द्वितीयस्तत्वपरोत्तरस्यां,

चन्द्रमा अपि तत्समये एको दक्षिणापरस्यां दिशि वर्तते, द्वितीय उत्तरपूर्वस्यामत एतेषु युगस्यादौ चन्द्र-सूर्याः समचतुरस्रसंस्थिता वर्तन्ते ।

यत्त्वत्र मण्डलकृतं वैषम्यं यथा सूर्यो सर्वाभ्यन्तरमण्डले वर्तते, चन्द्रमसो सर्वबाह्ये इति तदल्पमितिकृत्वा न विवक्ष्यते ।

तदेवं यतः सकलकालविशेषाणां सुषमासुषमादिरूपाणामादिभूतस्य युगस्यादौ समचतुरस्रसंस्थिताः सूर्य-चन्द्रमसो भवन्ति, ततस्तेषां संस्थितिः समचतुरस्रसंस्थानेनोपवर्णिता, अन्यथा वा यथासम्प्रदायं समचतुरस्रसंस्थितिः परिभावनीयेति ।

नो चेव णं इयरेहिं ति—नो चेव नैव इतरैः -शेषैर्नैयश्चन्द्र-सूर्यसंस्थितिर्ज्ञातव्या,

तेषां मिथ्यारूपत्वात् तदेवमुक्ता चन्द्र-सूर्यसंस्थितिः ।

९.—एगे पुण एवमाहंसु—

जस्संठिए जंबुद्दीवे तस्संठिए तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१०.—एगे पुण एवमाहंसु ।

जस्संठिए भारहे वासे तस्संठिए तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

११.—एगे पुण एवमाहंसु—

उज्जाणसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१२.—एगे पुण एवमाहंसु—

निज्जाणसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१३.—एगे पुण एवमाहंसु—

एगओ णिसधसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१४.—एगे पुण एवमाहंसु—

दुहओ णिसधसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१५.—एगे पुण एवमाहंसु—

सेयणगसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१६.—एगे पुण एवमाहंसु—

सेयणगपट्ठसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वदामो—

ता उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता ।

अंतो संकुचिया, बाहिं वित्थडा ।

अंतो वट्टा, बाहिं पिधुला ।

अंतो अंकमुहसंठिया,[1] बाहिं सत्थियमुहसंठिया ।[2]

तावक्खेत्तसंठिइए दुवे बाहाओ

उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ[3] भवंति, पणयालीसं पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं ।

---

१. अंतर्मेरुदिशि अंक-पद्मासनोपविष्टस्योत्संगरूप आसनबन्धः तस्य मुखं अग्रभागोर्द्ध्वलयाकारस्तस्येव संस्थितं संस्थानं यस्य सा ।

२. तथा बहिर्लवणदिशि स्वस्तिकमुखसंस्थिता, स्वस्तिकः सुप्रतीतः तस्य मुखम्-अग्रभागः तस्येवातिविस्तीर्णतया संस्थितं-संस्थानं यस्या सा ।

३. 'ये द्वे बाहे ते आयामेन-जम्बूद्वीपगतमायाममाश्रित्यावस्थिते भवतः ।' सूरिय. वृत्ति.

तीसे दुवे बाहाओ अणवट्ठिआओ[1] भवंति, तं जहा—

१.—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा ।

२.—सव्वबाहिरिया चेव बाहा ।

प. - तत्थ को हेउ त्ति ? वएज्जा ।

उ. - ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे

सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए, सव्वखुड्डाए ।

वट्टे तेल्लापूय-संठाण-संठिए ।

वट्टे रहचक्कवाल-संठाण-संठिए ।

वट्टे पुक्खरकण्णिया-संठाण-संठिए ।

वट्टे पडिपुण्णचंद-संठाण-संठिए ।

एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं ।

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

तावक्खेत्तसंठिइए परिक्खेवो

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तया णं उद्धीमुहकलंबुआ-पुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिई आहितात्ति वएज्जा, अंतो संकुडा, बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा, बाहिं पि थुला, अंतो अंकमुहसंठिया, बाहिं सत्थियमुहसंठिया, दुहओ पासेणं तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया चेव बाहा ।

(क) तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा = मंदरपव्वयं तेणं णव जोयणसहस्साइं चत्तारि य छलसीए जोयणसए णव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा ।

प. - ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. - ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं, तिहिं गुणित्ता, दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे = एस णं परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।

---

१. 'द्वे च बाहे अनवस्थिते भवतः

तद्यथा सर्वाभ्यन्तरा, सर्वबाह्या च ।

(क) तत्र या मेरुसमीपे विष्कम्भमधिकृत्य बाहा सा सर्वाभ्यन्तरा ।

(ख) या तु लवणदिशि जम्बूद्वीपपर्यन्ते विष्कम्भमधिकृत्य बाहा सा सर्वबाह्यबाहा ।

(ग) आयामश्च-दक्षिणायततया प्रतिपत्तव्यो,

विष्कम्भः पूर्वापरायततया ।

(ख) तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा=लवणसमुद्दं तेणं, चउणउइं जोयणसहस्साइं, अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए, चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा।[1]

प. ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता जे णं जंबुद्दीव-दीवस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता, दसहिं छेत्ता, दसहिं भागे होरमाणे=एस णं परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा।[2]

तावखेत्तस्स अंधकारखेत्तस्स य आयामाईणं परूवणं

प. ता तीसे णं तावक्खेत्ते केवइयं आयामेणं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता अट्ठुत्तरं जोयणसहस्साइं, तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे च आयामेणं, आहिए त्ति वएज्जा।

प. तया णं किंसंठिया अंधकारसंठिई ? आहिय त्ति वएज्जा।

उ. उद्धीमुह-कलंबुआपुप्फसंठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा।

तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं छज्जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं, आहिय त्ति वएज्जा।

प. ता तीसे णं परिक्खेवविसेसे ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे णं तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता, दसहिं छित्ता दसहिं भागे होरमाणे, एस णं परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा।

तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दं तेणं तेवट्ठिं जोयणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले जोयसए छच्च दस भागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा।

प. ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागेहिं होरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे, आहिए त्ति वएज्जा।

प.—ता से णं अंधकारे केवइयं आयामेणं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ.—ता अट्ठुत्तरं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च आयामेणं, आहिए त्ति वएज्जा।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति।

१. मेरु की परिधि ३१,६,२३ योजन की है, इसे तीन से गुणा करने पर ९४,८,७९ योजन हुए, इन के दश का भाग देने पर ९,८,८६६, लब्ध होते हैं—यह सर्व आभ्यन्तर बाहा की परिधि है।

२. जंबूद्वीप की परिधि ३,१६,२,२७ योजन तीन कोस २८ धनुष १३ अंगुल तथा आधे अंगुल से कुछ अधिक है।
इसमें दश का भाग देने पर ९४, ८, ६८ योजन और एक योजन के दस भागों में से चार भाग जितनी सर्व-बाह्य बाहा की परिधि विशेष है।

जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

प. - ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं किंसंठिया तावखेत्तसंठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ. - ता उद्धमुह-कलंबुयापुप्फसंठिया तावखेत्तसंठिई आहिय त्ति वएज्जा, एवं जं अब्भिंतर-मंडले अंधकारसंठिईए पमाणं तं बाहिरमंडले तावखेत्तसंठिईए, जं तहिं तावखेत्तसंठिईए तं बाहिर-मंडले अंधकारसंठिईए भाणियव्वं, जाव

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

सूरियाणं तावखेत्तपमाण-परूवणं

प. ता जंबुद्दीवे दीवे सूरिया केवइयं खेत्तं उड्ढं तवंति, केवइयं खेत्तं अहे तवंति, केवइयं खेत्तं तिरियं तवंति ?

उ. —ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया एगं जोयणसयं उड्ढं तवंति ।

अट्ठारस जोयणसयाइं अहे पतवन्ति ।

सीयालीसं जोयणसहस्साइं दुन्नि य तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरियं तवंति ।

पंचम प्राभृत

सूरियस्स लेस्सा पडिघायगा पव्वया

२६. ता कस्सि णं सूरियस्स लेस्सा पडिहया ? आहिय ति वएज्जा ।

तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता मंदरंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु-

२. ता मेरुंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता मणोरमंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता सुदंसणंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५. ता सयंपभंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु-

६. ता गिरिरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

७. ता रयणुच्चयंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

८. ता सिलुच्चयंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

९. ता लोगमज्झंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१०. ता लोगनाभिसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

११. ता अच्छंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१२. ता सूरियावत्तंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१३. ता सूरियावरणंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१४. ता उत्तमंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१५. ता दिसादिसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१६. ता अवयंसंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१७. ता धरणिखीलंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१८. ता धरणिसिगंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१९. ता पव्वइंवंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२०. ता पव्वयरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो,

जंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, से ता मंदरे वि पवुच्चइ जाव पव्वयराया वि पवुच्चइ,[1]

[क] ता जे णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति,

[ख] अविट्ठा वि णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति,

चरिमलेस्संतरगया वि पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति।

---

१. मंदरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा गाहाओ—

१. मंदर २. मेरू ३. मणोरम ४. सुदंसण ५. सयंपभे य ६. गिरिराया।
७. रयणुच्चय ८. पियदंसण ९-१९. मज्झे लोगस्स, नाभी य ॥ १ ॥
११. अच्छे य १२. सूरियावत्ते १३. सूरियावरणे ति य।
१४. उत्तमे य १५. दिसादी य १६. वडेंसेइ य सोलसे ॥ २ ॥

क—सम. सं. १६, सु. ३

ख—जंबू. वक्ख. ४, सु. १०९

इन दोनों गाथाओं में 'मंदर पर्वत' के सोलह नाम गिनाये हैं, यहाँ इनके अतिरिक्त चार औपमिक नाम और भी हैं।

मन्दर पर्वत के इन बीस पर्यायवाची नामों को अन्यान्य मान्यतावाले भिन्न भिन्न पर्वत मानते हैं। किन्तु सूर्यप्रज्ञप्ति के संकलनकर्ता ने समवायांग और जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति के अनुसार मन्दर पर्वत के ये बीस पर्यायवाची नाम मानकर सभी अन्य मान्यताओं का 'समन्वय' किया है।

छठा प्राभृत

सूरियस्स ओयसंठिई

प.— ता कहं ते ओयसंठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ. —तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता अणुसमयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु —

२. ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता अणुराइंदियमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु —

४. ता अणुपक्खमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

५. ता अणुमासमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु —

६. ता अणुउउमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

७. ता अणुअयणमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

८. ता अणुसंवच्छरमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु —

९. ता अणुजुगमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१०. ता अणुवाससयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

११. ता अणुवाससहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१२. ता अणुसाग-सय-सहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु –

१३. ता अणुपुव्वमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु –

१४. ता अणुपुव्व-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१५. ता अणुपुव्वसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१६. ता अणुपुव्वसयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१७. ता अणुपलिओवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे, एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु –

१८. ता अणुपलिओवमसयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१९. ता अणुपलिओवमसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२०. ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२१. ता अणुसागरोवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु-

२२. ता अणुसागरोवम-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२३. ता अणुसागरोवम-सहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२४. ता अणुसागरोवम-सयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२५. ता अणुउस्सप्पिणि-ओसप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।[1]

वयं पुण एवं वयामो—

(क) ता तीसं तीसं मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिया भवइ तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठिया भवइ ।

(ख) छम्मासे सूरिए ओयं णिव्वुड्ढेइ ।
छम्मासे सूरिए ओयं अभिवुड्ढेइ ।

(ग) निक्खममाणे सूरिए देसं णिव्वुड्ढेइ ।
पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ ।

प.— तत्थ को हेऊ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ.—ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्व खुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खंभे णं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवे णं पण्णत्ते ।

१. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

२. से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखित्तस्स निव्वुड्ढित्ता रयणि-खित्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

---

१. इन प्रतिपत्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि जैनागमों के अतिरिक्त अन्य दार्शनिक पुराणादि ग्रन्थों में भी औपमिककालवाचक 'पल्योपम-सागरोपम, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी' आदि शब्दों का प्रयोग था ।
वर्तमान में भी यदि पुराणादि ग्रन्थों में इन औपमिककाल वाचक शब्दों का कहीं प्रयोग हो तो अन्वेषणशील विद्वान् प्रयत्न करके प्रकाशित करें ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ-दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

३. से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवस-खेत्तस्स निव्वुड्ढित्ता, रयणि-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

४. एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे एगमेगे मंडले, एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं एगमेगं भागं ओयाए दिवस-खेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे रयणि-खेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

५. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसिएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए दिवस-खेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता रयणि-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

१. से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा ।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए ।

२. से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा ।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए ।

३. एवं खलु एएणं उवाएणं परिसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए रयणि-खेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

४. ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस-खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

❖❖

सप्तम प्राभृत

सूरियेण पगासिया जण्णत्ता

प.—ता किं ते सूरियं वरइ ? आहिएत्ति वएज्जा ।

उ.—तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता मेरू णं पव्वए सूरियं वरइ एगे एवमाहंसु ।

३-१९. एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं तहेव जाव ।[1]

एगे पुण एवमाहंसु—

२०. ता पव्वयराये णं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वदामो—

ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरइ, एवं पि पवुच्चइ तहेव जाव (१-२० सूरिय० पा० ५, सु. २६ को देखें) ।[2]

ता पव्वयराये णं पव्वए सूरियं वरइ, एवं पि पवुच्चइ ।

(क) ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति, ते णं पुग्गला सूरियं वरयंति ।

(ख) अविट्ठा वि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ।

(ग) चरिमलेस्संतरगया वि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ।

---

१. 'सूरियस्स लेस्सा पडिघायगा पव्वया' इस शीर्षक के अन्तर्गत सूर्य. प्रा. ५, सु. २६ में बीस प्रतिपत्तियों के अनुसार सूर्य की लेश्या को प्रतिहत करने वाले बीस पर्वतों के नाम गिनाये हैं । यहाँ भी उसी के अनुसार मूल-पाठ के सभी आलापक कहने चाहिए ।

२. ऊपर के टिप्पण में सूचित शीर्षक के अन्तर्गत सूर्य. पा. ५, सु. २६ के अनुसार सूर्यप्रज्ञप्ति के संकलनकर्ता ने यहाँ भी मंदर पर्वत के बीस नामों को पर्यायवाची मानकर समन्वय कर लिया है ।

अष्टम प्राभृत

सूरस्स उदय-संठिई

प.—ता कहं ते उदयसंठिई आहिया ? ति वएज्जा ।

उ. -तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा —

१. तत्थेगे एवमाहंसु—

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ग) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ङ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(च) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ते दिवसे, भवइ ।

(छ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ज) तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता, समणाउसो ! एगे एवमाहंसु ।

२. एगे पुण एवमाहंसु –

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(ग) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि पण्णरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(ङ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(च) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

[छ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेऽवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ।

[ज] तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं णो सया पण्णरस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, णो सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अणवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता, समणाउसो! एगे एवमाहंसु।

३. एगे पुण एवमाहंसु—

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारस मुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारस मुहुत्ता राई भवइ ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ।

वोच्छिण्णा णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता, समणाउसो! एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वयामो

ता जंबुद्दीवे दीवे सूरिया।

उदीण-पाईणमुग्गच्छंति, पाईण-दाहिणमागच्छंति।

पाईण-दाहिणमुग्गच्छंति, दाहिण-पडीणमागच्छंति।

दाहिण-पडीणमुग्गच्छंति, पडीण-उदीणमागच्छंति।

पडीण-उदीणमुग्गच्छंति, उदीण-पाईणमागच्छंति।[1]

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि दिवसे भवइ।

जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं राई भवइ।

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवई, तया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

---

१. प. जम्बुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिआ? उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति?
पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छंति?
दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छंति?
पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छंति?

उ. हंता गोयमा! जहा पंचमसए पढमे उद्देसे जाव णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पं. समणाउसो! —भग. स. ५, उ. १ सु. ५

(क) जंबु. वक्ख. ७, सु. १५०

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

जया णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

एवं एएण गमेणं णेयव्वं

अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-दुवालस-मुहुत्ता राई।
सत्तरस-मुहुत्ते दिवसे—
तेरस-मुहुत्ता राई।
सत्तरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-तेरस-मुहुत्ता राई।
सोलस-मुहुत्ते दिवसे—
चोद्दस-मुहुत्ता राई।
सोलस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-चोद्दस-मुहुत्ता राई।
पण्णरस-मुहुत्ते दिवसे—
पण्णरस-मुहुत्ता राई।
पण्णरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-पण्णरस-मुहुत्ता राई।
चोद्दस-मुहुत्ते दिवसे—
सोलस-मुहुत्ता राई।
चोद्दस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-सोलस-मुहुत्ता राई।
तेरस-मुहुत्ते दिवसे—
सत्तरस-मुहुत्ता राई।
तेरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-सत्तरस-मुहुत्ता राई।
जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ—
उक्कोसिया अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवइ एवं भाणियव्वं।[1]

१. भग. श. ५, उ. १, सु. ५-१३

वासाउउ

[क] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं पच्चत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणंतरपच्छाकय-काल-समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवन्ने भवइ।

जहा समओ तहा १. आवलिया, २. आणापाणू, ३ थोवे, ४. लवे, ५. मुहुत्ते, ६. अहोरत्ते, ७. पक्खे, ८. मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा वासाणं तहा भाणियव्वा।[1]

हेमंत उउ

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं पच्चत्थिमे णं हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणंतर-पच्छाकड-काल-समयंसि हेमंताणं पढमे समए[2] पडिवज्जइ।

जहा समओ तहा १. आवलिया, २. आणापाणू, ३. थोवे, ४. लवे, ५. मुहुत्ते, ६. अहोरत्ते, ७. पक्खे, ८. मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा हेमंताणं तहा भाणियव्वा।

---

१. ऊपर सूत्र में 'पढमे समए' आठ स्थानों पर है उन स्थानों में नीचे लिखे आलापक कहें, और प्रत्येक आलापक के दो दो सूत्र ऊपर के समान कहें—

१. पढमा आवलिया, २. पढमो आणापाणू, ३.पढमे थोवे, ४. पढमे लवे, ५. पढमे मुहुत्ते, ६. पढमे अहोरत्ते, ७. पढमे पक्खे, ८. पढमे मासे।

२. ऊपर सूत्र में 'पढमे समए' आठ स्थानों पर हैं उन स्थानों पर नीचे लिखे आलापक कहें, और प्रत्येक आलापक के ऊपर के समान दो दो सूत्र कहें—

१. पढमा आवलिया, २. पढमो आणापाणू, ३. पढमे थोवे, ४. पढमे लवे, ५. पढमे मुहुत्ते, ६. पढमे अहोरत्ते, ७. पढमे पक्खे, ८. पढमे मासे।

गिम्ह उउ

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ ।

जया णं उत्तरड्ढे गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ,

जया णं पच्चत्थिमे णं गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणंतर-पच्छाकड काल-समयंसि गिम्हाणं पढमे समए[1] पडिवज्जइ ।

जहा समओ तहा १. आवलिया, २. आणापाणू, ३. थोवे, ४. लवे, ५. मुहुत्ते, ६. अहोरत्ते, ७. पक्खे, ८. मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा गिम्हाणं तहा भाणियव्वा ।

अयणाइ

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ ।

जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ ।

जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि पढमे अयणे पडिवज्जइ ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ ।

जया णं पच्चत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं पुरत्थिमेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ ।

जया णं पच्चत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणंतर-पच्छाकड-काल-समयंसि पढमे अयणे[2] पडिवज्जइ ।

जहा पढमस्स अयणस्स आलावगो तहा दोच्चस्स अयणस्स भाणियव्वो ।

जहा अयणे तहा संवच्छरे, जुगे, वाससए, वाससहस्से, वास-सयसहस्से, पुव्वंगे, पुव्वे, जाव सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे य ।

१. ऊपर सूत्र में "पढमे समय" आठ स्थानों पर है, उन स्थानों पर नीचे लिखे आलापक कहें और प्रत्येक आलापक के ऊपर के समान दो दो सूत्र कहें ।

१. पढमा आवलिया, २. पढमो आणापाणू, ३. पढमे थोवे, ४. पढमे लवे, ५. पढमे मुहुत्ते, ६. पढमे अहोरत्ते, ७. पढमे पक्खे, ८. पढमे मासे ।

२. जहाँ जहाँ "पढमे अयणे" है, वहाँ वहाँ "दोच्चे अयणे" कहें ।

उस्सप्पिणी

ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि उस्सप्पिणी पडिवज्जइ ।

जया णं उत्तरड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं णेवत्थि उस्सप्पिणी णेवत्थि ओसप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

एवं ओसप्पिणी ।[1]

लवणसमुद्दो

ता जया णं लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं लवणे समुद्दे उत्तररड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया णं लवणे समुद्दे उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं लवणे समुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ।

सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी ।[2]

धायइखंडो

ता धायइखंडे णं दीवे सूरिया-

उदीण-पाईणमुग्गच्छंति, पाईण-दाहिणमागच्छंति,

---

१. (क) ऊपर जहां जहां "उस्सप्पिणी" है वहां वहां "ओसप्पिणी" कहें ।

२. "जच्चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वता भणिता, सच्चेव सव्वा अपरिसेसिता लवणसमुद्दस्स वि भाणितव्वा" ।
नवरं— इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणितव्वा ।

प. (क) लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया—
उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छंति ?
(ख) पादीण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पादीणमागच्छंति ?
(ग) दाहिण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-उदीणमागच्छंति ?
(घ) पादीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण-पादीणमागच्छंति ?

उ. (क-घ) हंता गोयमा ! लवणे णं समुद्दे सूरिया--
उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छंति, जाव
पादीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण-पादीणमागच्छंति ।
एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं – जाव

प (क) जदा णं भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति
तदा णं उत्तरड्ढे वि पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति ?
(ख) जदा णं उत्तरड्ढे पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति, तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी ? अवट्ठिते णं तत्थ काले पण्णत्ते ?

उ. हंता गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो ! – भग. स. ५, उ. १, सु. २२

जाव पडीण-उदीणमुग्गच्छंति, उदीण-पाईणमागच्छंति,

ता जया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवति,

सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी,

कालोए णं समुद्दे जहा लवणे समुद्दे ।

अब्भंतरपुक्खरद्धो

ता अब्भंतर-पुक्खरद्धे णं दीवे सूरिया -

उदीण-पाईणमुग्गच्छंति, पाईण-दाहिणमागच्छंति,

जाव पडीण-उदीणमुग्गच्छंति, उदीण-पाईणमागच्छंति,

ता जया णं अब्भंतर-पुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तर-ड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ,

सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी ।

❖❖

नवम प्राभृत

पोरिसिच्छाय-निव्वत्तणं

३०. प. ता कइकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु –

१. ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति, ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तवणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु –

२. ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति, ते णं पोग्गला नो संतप्पंति, ते णं पोग्गला असंतप्पमाणा तवणंराइं बाहिराइं पोग्गलाइं णो संतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु –

३. ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति, ते णं पोग्गला अत्थेगइया संतप्पंति, अत्थेगइया नो संतप्पंति,

तत्थ अत्थेगइया संतप्पमाणा तवणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं अत्थेगयाइं संतावेंति, अत्थेगयाइं नो संतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता जाओ इमाओ चंदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेसाओ बहित्ता उच्छूढा अभिणिसट्ठाओ पतावेंति,

एयासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णयरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छंति, तए णं ताओ छिण्णलेस्साओ संमुच्छियाओ समाणीओ तवणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति,

एस णं से समिए तावक्खेत्ते ।

पोरिसिच्छाय-निवत्तणं–

३१. प. ता कइकट्ठे ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु -

१. ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु -

२. ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, आहिए त्ति वएज्जा,

जाओ चेव ओयसंठिईए पडिवत्तीओ एएणं अभिलावेणं णेयव्वाओ, जाव[1] [३-२४]

एगे पुण एवमाहंसु—

२५. ता अणुउस्सप्पिणि-ओसप्पिणिमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता सूरियस्स णं -

१. उच्चत्तं च लेसं च पडुच्च छायुद्देसे,

२. उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्देसे,

३. लेस्सं च छायं च पडुच्च उच्चत्तोद्देसे

य.....[2]

उ. तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

(क) १. ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

(क) २. ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

---

१. सूरिए. पा. ६. सु. २७

२. सूर्यप्रज्ञप्ति की संकलनशैली के अनुसार यहां प्रश्नसूत्र होना चाहिए था, किन्तु यहां प्रश्नसूत्र आ. स. आदि किसी प्रति में नहीं है, अतः यहां का प्रश्नसूत्र विच्छिन्न हो गया है, ऐसा मान लेना ही उचित है।
सूर्यप्रज्ञप्ति के टीकाकार भी यहां प्रश्न-सूत्र के होने न होने के सम्बन्ध में सर्वथा मौन हैं, अतः यहां प्रश्न-सूत्र का स्थान रिक्त रखा है।
यदि कहीं किसी प्रति में प्रश्न-सूत्र हो तो स्वाध्यायशील आगमज्ञ सूचित करने की कृपा करें, जिससे अगले संस्करण में परिवर्धन किया जा सके।

तत्थ जे ते एवमाहंसु –

(क) १. ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउ-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु,

(क) ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ।

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउ-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थमण- मुहुत्तंसि य,

लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निव्वुड्ढेमाणे।

[ख] ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थ-मणमुहुत्तंसि य,

लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निव्वड्ढेमाणे।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

२. ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु,

[क] ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ,

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थमण-मुहुत्तंसि य,

लेसं अभिवड्ढेमाणे, नो चेव णं निव्वुड्ढेमाणे,

[ख] ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस-मुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तंसि च णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमण-मुहुत्तंसि य, अत्थमण-मुहुत्तंसि य,

नो चेव णं लेसं अभिवड्ढेमाणे वा, निव्वुड्ढेमाणे वा।[1]

---

१. इसके अनन्तर यहाँ स्वमतसूचक 'वयं पुण एवं वयामो' यह वाक्य नहीं है और न स्वमत का कथन ही है। 'तदेवं परतीर्थिक-प्रतिपत्तिद्वयं श्रुत्वा भगवान् गौतमः स्वमतं पृच्छति, ता कहं ह कमित्यादि' —सूर्य. टीका

टीकाकार का यह कथन सूर्यप्रज्ञप्ति की संकलनशैली के अनुरूप नहीं है—क्योंकि प्रतिपत्तियों के कथन के अनन्तर 'वयं पुण एवं वयामो' इस वाक्य से ही सर्वत्र स्वमत का प्रतिपादन किया गया है।

प. ता कइकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. तत्थ इमाओ छण्णउइ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ,[1] एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु-

२. ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दु-पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु,

एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, जाव (३-९५)

एगे पुण एवमाहंसु

९६—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए छण्णउइ पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु,

तत्थ जे ते एवमाहंसु —

१. ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एग-पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहंसु,

ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहीओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवइयाए एगाए अद्धाए, एगेणं छायाणुभाणप्पमाणेणं उमाए, तत्थ से सूरिए एगपोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति,

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

२. ता अत्थि णं से देसे, जंसि णं देसंसि सूरिए दु-पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहंसु,

ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहीओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्ज-माणीहिं, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवइयाइं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुभाणप्पमाणेहिं उमाए, एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति,

३.९५—एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, जाव....

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

९६—'ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए छण्णउइं पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति' ते एवमाहंसु,

---

१. तत्र-तेषां षण्णवतेः परतीर्थिकानां मध्ये, एके एवमाहुः

'ता' इति पूर्ववत् अस्ति स देशो, यस्मिन् देशे सूर्यः आगतःसन् एकपौरुषी-एकपुरुषप्रमाणा (पुरुषग्रहणमुपलक्षणं सर्वस्यापि प्रकाश्यवस्तुनः स्व-प्रमाणा) छायां निर्वर्तयति । —सूर्य. टीका.

ता सूरियस्स णं सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहोओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढे उच्चत्तेणं, एवइयाइं छण्णउईए छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए, एत्थ णं से सूरिए छण्णउइं पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति,

वयं पुण एवं वयामो–

ता साइरेग-अउणट्ठि-पोरिसीणं सूरिए पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ त्ति ।

पोरिसिच्छाय-प्पमाणं

प. ता अवड्ढ-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता ति-भागे गए वा सेसे वा ।

प. ता अउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता बावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा ।

प. ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता चउब्भागे गए वा सेसे वा,[1]

प. ता दिवड्ढ-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता पंचभागे गए वा, सेसे वा ।

प. ता बि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता छब्भागगए वा, सेसे वा ।

प. ता अड्ढाइज्ज-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता सत्तभागगए वा, सेसे वा ।

एवं अवड्ढपोरिसिं छोढुं छोढुं पुच्छा,[2]

दिवसभागं छोढुं छोढुं वागरणं[3] जाव....

---

१. पौरुषी की परिभाषा—

"पुरिस त्ति, संकु, पुरिस-सरीरं वा, तओ पुरिसे निप्फन्ना पोरिसी, एवं सव्वस्स वत्थुणो यदा स्वप्रमाणा छाया भवति, तदा हवइ,

एवं पोरिसि-प्रमाणं उत्तरायणस्स अंते, दक्खिणायणस्स आईए इक्कं दिणं भवइ, अतो परं अद्ध-एगसट्ठिभागा अंगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढंति, उत्तरायणे हस्संति, एवं मंडले मंडले अप्पा पोरिसी"

'यह पौरुषी की परिभाषा सूर्य-प्रज्ञप्ति की टीका में नन्दिचूर्णि से उद्धृत है।' चूर्णि की भाषा संस्कृत-मिश्रित प्राकृत होती है, अतः ऊपर अंकित चूर्णि-पाठ अशुद्ध नहीं है।

२. एवमित्यादि-एवमुक्तेन प्रकारेण 'अर्द्धपौरुषी' अर्द्धपुरुषप्रमाणां छायां क्षिप्त्वा, क्षिप्त्वा पृच्छा पृच्छासूत्रं द्रष्टव्यं । —सूर्य. टीका.

३. "दिवसभागं" ति, पूर्व-पूर्वसूत्रापेक्षया एकैकमधिकं दिवसभागं क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा व्याकरणं, उत्तरसूत्रं ज्ञातव्यम् । —सूर्य. टीका

प. ता अउणसट्ठि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ. ता एगूणवीस-सय-भागे गए वा, सेसे वा ।

प. ता अउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ. ता बावीसहस्सभागे गए वा सेसे वा ।

प. ता साइरेग-अउणसट्ठि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ. ता नत्थि किंचि गए वा, सेसे वा ।'

तत्थ खलु इमा पणवीसविहा छाया पण्णत्ता, तंजहा—

१. खंभ-छाया २. रज्जु-छाया ३. पागार-छाया ४. पासाय-छाया ५. उग्गम छाया ६. उच्चत्त-छाया ७. अणुलोम-छाया ८. पडिलोम-छाया ९. आरंभिया-छाया १०. उवहया-छाया ११. समा-छाया १२. पडिहया-छाया १३. खील-छाया १४. पक्ख-छाया १५. पुरओउदया-छाया १६. पुरिम कंठ-भागुवगया-छाया १७. पच्छिम-कंठ-भागुवगया छाया १८. छायाणुवाइणी-छाया १९. किट्ठाणुवाइणी-छाया २०. छाय-छाया २१. विक्कप्प-छाया २२. वेहास-छाया २३. कड-छाया २४. गोल-छाया २५. पिट्ठओवग्गा-छाया ।

---

१. यहां अंकित प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई संक्षिप्त वाचना की सूचनानुसार संशोधित है । सूर्यप्रज्ञप्ति की '१ आ. स. । २ शा. स. । ३ अ. सु. । ४ ह. प्र.' इन चारों प्रतियों में दिए गये प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई संक्षिप्त वाचना की सूचना से कितने विपरीत हैं ? यह निर्णय पाठक स्वयं करें ।

प. 'ता अउअउणसट्ठि पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ. ता एगूणवीससयभागे गए वा, सेसे वा ।

प. ता अउणसट्ठि पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ. ता बावीस-सहस्स भागे गए वा, सेसे वा ।

प. ता साइरेग-अउणसट्ठि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ. ता नत्थि किंचि गए वा, सेसे वा ।

(क) यहाँ इन प्रश्नोत्तरों में व्यतिक्रम हो गया प्रतीत होता है । सर्वप्रथम साढे गुनसठ पौरुषी छाया का प्रश्नोत्तर है । द्वितीय प्रश्नोत्तर गुनसठ पौरुषी छाया का है । तृतीय प्रश्नोत्तर कुछ अधिक गुनसठ पौरुषी छाया का है ।

(ख) यहाँ प्रश्नों के अनुरूप उत्तर भी नहीं है । प्रथम प्रश्नोत्तर में –'साढे गुनसठ पौरुषी छाया, एक सौ उन्नीस दिवस भाग से निष्पन्न होती है" ऐसा माना है किन्तु संक्षिप्तवाचना पाठ के सूचनानुसार एक सौ बीस दिवस से निष्पन्न होती है ।

द्वितीय प्रश्नोत्तर में गुनसठ पौरुषी छाया की निष्पत्ति बावीस हजार दिवस भाग से होती है ऐसा माना है, किन्तु यह मानना सर्वथा असंगत है, क्योंकि संक्षिप्त वाचना के सूचनापाठ की टीका में एक एक दिवस भाग बढ़ाने का ही सूचन है ।

तृतीय प्रश्नोत्तर में—प्रश्न ही असंगत है, क्योंकि संक्षिप्त वाचना के सूचनापाठ में अर्द्ध पौरुषी छाया से सम्बन्धित प्रश्न हो तो यहाँ कहा गया उत्तरसूत्र यथार्थ है ।

तत्थ णं गोल-छाया अट्ठविहा पण्णत्ता, तं जहा—

१. गोल-छाया २. अवड्ढ-गोल-छाया ३. गाढ-गोल-छाया ४. अवड्ढ-गाढ-गोल-छाया ५. गोलवलि-छाया ६. अवड्ढ-गोलावलि-छाया ७. गोलपुंज-छाया ८. अवड्ढ-गोल-पुंज-छाया ।[1]

१. प्रस्तुत सूत्र में छाया के पच्चीस प्रकार तथा गोल छाया के आठ प्रकार का कथन है। 'तत्थेत्यादि, तत्र — तासां पंचविंशति-छायानां मध्ये खल्विय गोल-छाया अष्टविधा प्रज्ञप्ता।'

सूर्य-प्रज्ञप्ति की टीका के इस कथन से प्रतीत होता है कि छाया के पच्चीस प्रकारों में 'गोल-छाया' का नाम था और उसके आठ प्रकार भिन्न थे, किन्तु सूर्यप्रज्ञप्ति की '१. आ. स. । २. शा. स. । ३. अ. सु. ।' इन तीन प्रतियों में छाया के केवल सत्तरह नाम हैं और गोल छाया के आठ नाम हैं। इस प्रकार पच्चीस पूरे नाम लिये गये हैं। सत्तरह नामों में गोल-छाया का नाम नहीं है, फिर भी 'तत्थेत्यादि' पाठ से संगति करके पच्चीस नाम पूरे मानना आश्चर्यजनक है।

एक 'ह. प्र.' प्रति में छाया के पच्चीस नाम तथा गोल-छाया के आठ नाम हैं, जो मूल पाठ के अनुसार हैं।

दशम प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं आवलिया-णिवायजोगो य

३२. प. ता कहं ते जोगे ति वत्थुस्स आवलिया-णिवाए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, महादिया अस्सेस-पज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, धणिट्ठादिया सवणपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, अस्सिणी-आदिया रेवईपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

५. ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, भरणीआदिया अस्सिणीपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वयामो—

ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, अभिई आदिया, उत्तरासाढा पज्जवसाणा पण्णत्ता, तंजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा ।[1]

१. जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति । —सम. २७, सु. २

दशम प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं चंदेण जोगकालो

३३. प. ता कहं ते मुहुत्तग्गे आहिए ? ति वएज्जा,

उ. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

[क] अत्थि णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धि जोयं जोएइ ।

[ख] अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ।

[ग] अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ।

[घ] अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ।

[क] प. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ?

[ख] कयरे णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ?

[ग] कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ?

[घ] कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ?

[क] उ. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ते, जे णं णव मुहुत्ते, सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धि जोयं जोएंति, से णं एगे, अभीयी ।[1]

[ख] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ता णं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति, ते णं छ, तं जहा - १. सतभिसया, २. भरणी, ३. अद्दा, ४. अस्सेसा, ५. साति, ६. जेट्ठा ।

[ग] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति, ते णं पण्णरस तं जहा - १. सवणो, २. धणिट्ठा, ३. पुव्वाभद्दवया, ४. रेवई, ५. अस्सिणी, ६. कत्तिया, ७. मग्गसिरा, ८. पुस्सो, ९. महा, १०. पुव्वाफग्गुणी, ११. हत्थो, १२. चित्ता, १३ अणुराहा, १४. मूलो, १५. पुव्वासाढा ।

[घ] ता एएसि णं अट्ठावीसाए, णक्खत्ताणं,

---

१. अभिजिणक्खत्ते साइरेगे णव मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोगं जोएइ सम. ९ सु. ५

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, ते णं छ, तंजहा—१. उत्तराभद्दवया, २. रोहिणी, ३. पुणव्वसू, ४. उत्तराफग्गुणी, ५. विसाहा, ६. उत्तरासाढा।

सूरिय. पा. १०, पाहु. २, सु. ३३

णक्खत्ताणं सूरेण जोगकालो

३४.—ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

[क] अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति।

[ख] अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते, एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति।

[ग] अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति।

[घ] अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति।

प. [क] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ते जं चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति?

[ख] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ते जे णं छ अहोरत्ते, एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति?

[ग] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति?

[घ] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ताण जे णं वीसं अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति?

उ. [क] ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति से णं एगे अभीयी।

(ख) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते, एक्कवीसं च मुहुत्ते, सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा—१. सतभिसया, २. भरणी, ३. अद्दा, ४. अस्सेसा, ५. साती, ६. जेट्ठा।

(ग) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं तेरस अहोरत्ते बुवालस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति, ते णं पण्णरस तंजहा—१. सवणो, २. धणिट्ठा, ३. पुव्वाभद्दवया, ४. रेवई, ५. अस्सिणी, ६. कत्तिया, ६. मग्गसिरं, ८. पुस्सो, ९. महा, १०. पुव्वाफग्गुणी, ११. हत्थो, १२. चित्ता, १३. अणराहा, १४. मूलो, १५. पुव्वासाढा।

(घ) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

उत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते, सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा—१. उत्तराभद्दवया, २. रोहिणी, ३. पुनव्वसू, ४. उत्तराफग्गुणी. ५. विसाहा, ६. उत्तरासाढा।

✤✤

दशम प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं पुव्वाइभागा खेत्त-कालप्पमाणं च

३५. प. ता कहं ते एवंभागा णक्खत्ता ? आहिया ति वएज्जा,

उ. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

(क) अत्थि णक्खत्ता पुव्वंभागा, समखेत्ता तीसइ मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ख) अत्थि णक्खत्ता पच्छंभागा, समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ग) अत्थि णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(घ) अत्थि णक्खत्ता उभयं भागा विड्ढखेत्ता, पणयालीसं मुहुत्ता पण्णत्ता ।

प. (क) ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ता पुव्वंभागा, समखेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ख) ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ता पच्छंभागा समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ग) ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ता णत्तं भागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(घ) ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

कयरे णक्खत्ता उभयंभागा विवड्ढखेत्ता, पणयालीसं-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

उ. (क) ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता पुव्वंभागा, समक्खेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता, पण्णत्ता, ते णं छ तंजहा— १. पुव्वापोट्ठवया, २. कत्तिया, ३. महा, ४. पुव्वाफग्गुणी, ५. मूलो, ६. पुव्वासाढा ।

(ख) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ते णं दस, तंजहा— १. अभिई, २. सवणो, ३. धणिट्ठा, ४. रेवई, ५. अस्सिणी, ६. मिगसिरं, ७. पूसो, ८. हत्थो, ९. चित्ता, १०. अणुराहा ।

(ग) ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता, ते णं छ, तंजहा— १. सयभिसया, २. भरणी, ३. अद्दा, ४. अस्सेसा, ५. साती, ६. जेट्ठा ।

(घ) ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता उभयंभागा विवड्ढखेत्ता, पणयालीसं मुहुत्ता पण्णत्ता, ते णं छ, तंजहा— १. उत्तरापोट्ठवया, २. रोहिणी, ३. पुणव्वसू, ४. उत्तराफग्गुणी, ५. विसाहा, ६. उत्तरासाढा ।

दशम प्राभृत

[चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं चंदेण जोगारंभकालो

३६. प. ता कहं ते जोगस्स आई ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता अभियी-सवणा खलु दुवे णक्खत्ता, पच्छाभागा समखित्ता[1], साइरेगएगूणचत्तालिसइ मुहुत्ता[2] तप्पढमयाए सायं[3] चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति[4], तओ पच्छा अवरं साइरेगं दिवसं ।

एवं खलु अभियी-सवणा दुवे णक्खत्ता एगराइं एगं च साइरेगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

जोयं जो एत्ता जोयं अणुपरियट्टति,[5]

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पेंति,

२. ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते[6] तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं ।

एवं खलु धणिट्ठा णक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं सयभिसयाणं समप्पेइ,

---

१. "इह अभिजिन्नक्षत्रं न समक्षेत्रं, नाप्यपार्धक्षेत्रं, नापि द्व्यर्द्धक्षेत्रं, केवलं श्रवणनक्षत्रेण सह सम्बद्धमुपात्तमित्यनेनोपचारात् तदपि समक्षेत्रमुपकल्प्य समक्षेत्रमित्युक्तम्"

२. "सातिरेका नवमुहूर्ताः अभिजित् त्रिंशन्मुहूर्ताः श्रवणस्येत्युभयसंमीलने यथोक्तं मुहूर्तपरिमाणं भवति ।"

३. "सायं-विकालवेलायां, इह दिवसस्य कतितमाच्चरमाद् भागादारभ्य यावद्रात्रे कतितमो भागो यावन्नाद्यापि परिस्फुट-नक्षत्र-मण्डलालोकस्तावान् कालविशेषः सायमिति विवक्षितो द्रष्टव्यः"

४. "इहाभिजिन्नक्षत्रं यद्यपि युगस्यादौ प्रातश्चन्द्रेण सह योगमुपैति, तथापि श्रवणेन सह सम्बद्धमिह तद्विवक्षितं, श्रवण-नक्षत्रं च मध्याह्नादूर्ध्वमपसरति दिवसे चन्द्रेण सह योगमुपादत्ते, ततस्तत्साहचर्यात् तदपि सायं समये चन्द्रेण युज्यमानं विवक्षित्वा सामान्यतः सायं चन्द्रेण" "सद्धिं जोयं जोएंति" इत्युक्तम् ।

अथवा युगस्यादिमतिरिच्यान्यदा बाहुल्यमपेक्ष्यैवमुक्तं ततो न कश्चिद्दोषः ।" — टीका

५. "एतावन्तं कालं योगं युक्त्वा तदनन्तरं योगमनुपरिवर्तयते, आत्मनश्चन्द्रमसश्चयावयत इत्यर्थः ?"

-सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका से उद्धृत ।

६. "समक्षेत्रं त्रिंशन्मुहूर्तम्" चन्द्र के साथ किसी भी नक्षत्र का योग, यदि तीस मुहूर्त पर्यन्त रहता है तो वह "समक्षेत्र-योग" कहा जाता है ।

३. ता सयभिसया खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढखेत्ते[1] पण्णरस-मुहुत्ते, तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एवं खलु सयभिसया णक्खत्ते, एगं राइं च चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं पुव्वपोट्ठवयाणं समप्पेइ,

४. ता पुव्वा-पोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्वं भागे[2] समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं राइं,

एवं खलु पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं उत्तरापोट्ठव्वयाणं समप्पेइ,

ता उत्तरापोट्ठव्वया खलु णक्खत्ते उभयं भागे[3] दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते[4], तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं च दिवसं।

एवं खलु उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं रेवईणं समप्पेइ,

ता रेवई खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं,

एवं खलु रेवई णक्खत्ते एगं च राइं, एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं अस्सिणीणं समप्पेइ,

७. ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं,

एवं खलु अस्सिणी णक्खत्ते, एगं च राइं, एगं च दिवसं, चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

१. "अपार्ध-क्षेत्रं पंचदशमुहूर्तम्" चन्द्र के साथ किसी भी नक्षत्र का योग, यदि पन्द्रह मुहूर्त पर्यन्त रहता है, तो वह "अपार्ध-क्षेत्र-योग" अर्थात् "आधा क्षेत्र योग" कहा जाता है।

२. "इह पूर्वप्रोष्ठपदानक्षत्र स्य प्रातश्चन्द्रेण सह प्रथमतया योगः प्रवृत्त इतीदं पूर्वभागमुच्यते।"

३. "इदं किलोत्तराभद्रपदाख्यं नक्षत्रमुक्तप्रकारेण प्रातश्चन्द्रेण सहयोगमधिगच्छति। केवलं प्रथमान् पंचदश-मुहूर्तान् अधिकानपनीय समक्षेत्रं कल्पयित्वा यदा योगश्चिन्त्यते तदा नक्तमपि योगोऽस्तीत्युभयभागमवसेयम्।

४. "उत्तरप्रकोष्ठपदानक्षत्रं खलूभयभागं द्व्यर्धक्षेत्रं पंचचत्वारिंशन्मुहूर्तं, तत्प्रथमतया-योगप्रथमतया प्रातश्चन्द्रेण सार्द्धं योगं युनक्ति, तच्च, तथायुक्तं सत् तं सकलमपि दिवसमपरं च रात्रिं ततः पश्चादपरं दिवसं यावद्वर्तते।

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता, सायं चंदं भरणीणं समप्पेइ ।

८. ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तं भागे,[1] अवड्ढखेत्ते, पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एवं खलु भरणी णक्खत्ते एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं कत्तियाणं समप्पइ ।

९. ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वं भागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं,

एवं खलु कत्तिया णक्खत्ते, एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं रोहिणीणं समप्पेइ ।[2]

---

१. "योगमनुपरिवर्त्य सायं परिस्फुटनक्षत्रमण्डलालोकसमये भरण्याः समर्पयति, इदं च भरणी नक्षत्रमुक्तयुक्त्या रात्रौ चन्द्रेण सह योगमुपैति, ततो नक्तं भागमवसेयम्"

२. इसके आगे मूल प्रति में—"संक्षिप्तवाचना" का पाठ इस प्रकार है—

१०. "रोहिणी जहा उत्तराभद्दवया",

११. मगसिरं जहा धणिट्ठा,

१२. अद्दा जह सतभिसया,

१३. पुणव्वसू जहा उत्तराभद्दवया,

१४. पुस्सो जहा धणिट्ठा,

१५. असलेसा जहा सतभिसया,

१६. महा जहा पुव्वाफग्गुणी,

१७. पुव्वाफग्गुणी जहा पुव्वाभद्दवया,

१८. उत्तराफग्गुणी जहा उत्तराभद्दवया,

१९.-२०. हत्थो, चित्ता य जहा धणिट्ठा,

२१. साती जहा सतभिसया,

२२. विसाहा जहा उत्तराभद्दवया,

२३. अणुराहा जहा धणिट्ठा,

२४. जिट्ठा जहा सतभिसया,

२५. मूलो जहा पुव्वाभद्दवया,

२६. पुव्वासाढा जहा पुव्वाभद्दवया

२७. उत्तरासाढा जहा उत्तराभद्दवया

१०. ता रोहिणी खलु णक्खत्ते उभयभागे विवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए, पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अवरं च राई तओ पच्छा अवरं दिवसं,

एवं खलु रोहिणी णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं मिगसिरं समप्पेइ ।

११. ता मिगसिरे खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं,

एवं खलु मिगसिरे णक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं अद्दाए समप्पेइ ।

१२. ता अद्दा खलु णक्खत्ते नत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस-मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एवं खलु अद्दा णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं पुणव्वसूणं समप्पेइ ।

१३. ता पुणव्वसू खलु णक्खत्ते उभयंभागे विवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं च दिवसं,

एवं खलु पुणव्वसू णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं पुस्सस्स समप्पेइ ।

१४. ता पुस्से खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समखेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोयइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं,

एवं खलु पुस्से णक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं असिलेसाए समप्पेइ ।

१५. ता असिलेसा खलु णक्खत्ते नत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एवं खलु असिलेसा णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टेइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं मघाणं समप्पेइ ।

१६. ता मघा खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं राइं,

एवं खलु मघा णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं पुव्वाफग्गुणीणं समप्पेइ ।

१७. ता पुव्वाफग्गुणी खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं राइं,

एवं खलु पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टेइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं उत्तराफग्गुणीणं समप्पेइ ।

१८. ता उत्तरा-फग्गुणी खलु णक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं च दिवसं,

एवं खलु उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं हत्थं समप्पेइ ।

१९. ता हत्थे खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं,

एवं खलु हत्थणक्खत्ते एगं च राइं, एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं चित्ताए समप्पेइ ।

२०. ता चित्ता खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं,

एवं खलु चित्ता णक्खत्ते एगं च राइं, एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं साईए समप्पेइ ।

२१. ता साई खलु णक्खत्ते नत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एवं खलु साई णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं विसाहाणं, समप्पेइ ।

२२. ता विसाहा खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ-अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं दिवसं,

एवं खलु विसाहा णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं अणुराहाए समप्पेइ ।

२३. ता अणुराहा खलु णक्खत्ते पच्छंभागं समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं,

एवं खलु अणुराहा णक्खत्ते एगं राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं जिट्ठाए समप्पेइ ।

२४. ता जेट्ठा खलु णक्खत्ते नत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस-मुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एवं खलु जिट्ठा णक्खत्ते एगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं मूलस्स समप्पेइ ।

२५. ता मूले खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं च राइं,

एवं खलु मूलं णक्खत्तं एगं च दिवसं च राइं च चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं पुव्वासाढाणं समप्पेइ ।

२६. ता पुव्वासाढा खलु णक्खत्ते पुव्वं भागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ तओ पच्छा अवरं च राइं,

एवं खलु पुव्वासाढा णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं उत्तरासाढाणं समप्पेइ ।

२७. ता उत्तरासाढा खलु णक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं च दिवसं,

एवं खलु उत्तरासाढा णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणपरियट्टित्ता सायं चंदं अभिई सवणाणं समप्पेइ ।[1]

१. सूत्रांक १० से २७ पर्यन्त में मूलपाठ सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका से यहाँ उद्धृत किया है ।

दशम प्राभृत

[पंचम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं कुलोवकुलाइं—

३७. ता कहं ते कुला (उवकुला, कुलोवकुला) ? आहिए त्ति वएज्जा ।[1]

तत्थ खलु इमे बारस कुला, बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता ।

बारसकुला पण्णत्ता तं जहा—

१. धणिट्ठा कुलं २. उत्तराभद्दवया कुलं ३. अस्सिणी कुलं ४. कत्तियाकुलं ५. मिगसिरकुलं ६. पुस्सकुलं ७. महाकुलं ८. उत्तराफग्गुणी कुलं ९. चित्ताकुलं १०. विसाहाकुलं ११. मूलंकुलं १२. उत्तरासाढाकुलं ।

बारस उवकुला पण्णत्ता तं जहा—

१. सवणो उवकुलं २. पुव्वाभद्दवयाउवकुलं ३. रेवई उवकुलं ४. भरणी उवकुलं ५. रोहिणी उवकुलं ६. पुणव[illegible] उवकुलं ७. [illegible] उवकुलं ८. पुव्वाफग्गुणी उवकुलं ९. हत्थो उवकुलं १०. साती उवकुलं ११. जेट्ठा उवकुलं १२. पुव्वासाढा उवकुलं ।

चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता तं जहा—

१. अभियी कुलोवकुलं २. सतभिसया कुलोवकुलं ३. अद्दा कुलोवकुलं ४. अणुराहा कुलोवकुलं ।

---

१. सूर्यप्रज्ञप्ति में प्रस्तुत प्रश्नसूत्र खण्डित है, अतः कोष्ठक के अन्तर्गत "उवकुला, कुलोवकुला" अंकित करके उसे पूरा किया है, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १६१ में, यह प्रश्नसूत्र इस प्रकार है—

प्र० कति णं भंते ! कुला ? कति उवकुला ? कति कुलोवकुला पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! बारस कुला बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता ।

शेष पाठ सूर्यप्रज्ञप्ति के समान है, किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के इस प्रश्नोत्तर सूत्र में बारह कुल नक्षत्रों के नामों के बाद कुलादि के लक्षणों की सूचक एक गाथा दी गई है जो सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका में भी उद्धृत है और यह गाथा प्रस्तुत संकलन में भी उद्धृत है । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के संकलनकर्ता यदि यह गाथा प्रस्तुत सूत्र के प्रारम्भ में या अन्त में देते तो अधिक उपयुक्त रहती ।

गाहा—मासाणं परिणामा, होंति कुला, उवकुला उ हेट्ठिमगा ॥

होंति पुण कुलोवकुला, अभियी-सयभिसय-अद्द-अणुराहा । —जंबु. वक्ष. ७, सु. १६१

"किं कुलादीनां लक्षणम् ?

उच्यते-मासानां परिणामानि-परिसमापकानि भवन्ति कुलानि, कोऽर्थः ? इह यैर्नक्षत्रैः प्रायो मासानां परिसमाप्तयः उपजायन्ते माससदृशनामानि च तानि नक्षत्राणि कुलानीति प्रसिद्धानि ।"

"कुलानामधस्तनानि नक्षत्राणि श्रवणादीनि उपकुलानि, कुलानां समीपमुपकुलं तत्र वर्तन्ते यानि नक्षत्राणि तान्युपचारादुपकुलानि ।"

"यानि कुलानामुपकुलानां चाधस्तनानि तानि कुलोपकुलानि ।" जम्बू. टीका.

दुवालसासु पुण्णमासिणीसु णक्खत्त-संजोग-संखा

३८. प. ता कहं ते पुण्णिमासिणी ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमाओ बारस पुण्णिमासिणीओ, बारस अमावासाओ पण्णत्ताओ तंजहा--
१. सावित्ठि, २. पोट्ठवई, ३. आसोया, ४. कत्तिया, ५. मग्गसिरी, ६. पोसी, ७. माही,
८. फग्गुणी, ९. चेती, १०. विसाही, ११. जेट्ठामूली, १२. आसाढी ।

१. प. ता सावित्ठिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा १. अभिई, २. सवणो, ३. धणिट्ठा ।

२. प. ता पोट्ठवइण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा १. सतभिसया, २. पुव्वापोट्ठवया, ३. उत्तरा-पोट्ठवया ।

३. प. ता आसोइण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा १. रेवती, २. अस्सिणी य ।

४. प. ता कत्तिइण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा १. भरणी, २. कत्तिया य ।

५. प. ता मग्गसिरिं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा —१. रोहिणी, २. मग्गसिरो य ।

६. प. ता पोसिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—१. अद्दा, २. पुणव्वसू, ३. पुस्सो ।

७. प. ता माहिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता, जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा १. अस्सेसा, २. महा य ।

८. प. ता फग्गुणिणं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—१. पुव्वाफग्गुणी, २. उत्तराफग्गुणी य ।

९. प. ता चित्तिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा —१. हत्थो, २. चित्ता य ।

१०. प. ता विसाहिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—१. साती, २. विसाहा य ।

११. प. ता जेट्ठा-मूलिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा- १. अणुराहा, २. जेट्ठा, ३. मूलो ।

१२. प. ता आसाढिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा—१. पुव्वासाढा, २. उत्तरासाढा य ।

दशम प्राभृत

[छठा प्राभृतप्राभृत]

दुवालसासु पुण्णमासिणीसु कुलाइ-णक्खत्त-जोगसंखा

३९. १. प. ता साविट्ठिण्णं पुण्णिमं णं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ,

३. कुलोवकुलं जोएमाणे अभिई णक्खत्ते जोएइ,

साविट्ठिण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया ।

२. प. ता पोट्ठवइण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुलं जोएमाणे उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ,

३. कुलोवकुलं जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएइ,

पोट्ठवइण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ,[1] कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता पुट्ठवया पुण्णिमा जुत्ता ति वत्तव्वं सिया ।

३. प. ता आसोइण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे रेवई णक्खत्ते जोएइ,

---

१. शेषमपि सूत्रं निगमनीयं ''एवं नेयव्वाओ, जाव आसाढी-पुण्णिमं जुत्तेति वत्तव्वं सिया, णवरं पोथी पौर्णमासी, ज्येष्ठामूली च पौर्णमासीं कुलोपकुलमपि युनक्ति, अवशेषासु च पौर्णमासीषु कुलोपकुलं नास्तीति परिभाव्य वक्तव्याः ।···-सूर्य. टीका

आसोइण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता आसोइण्णं पुण्णिमं जुत्तेति वत्तव्वं सिया ।

४. प. ता कत्तिइण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे कत्तिआ णक्खत्ते जोएइ,
२. उवकुलं जोएमाणे भरणी णक्खत्ते जोएइ,
कत्तिइण्णं पुण्णिमं कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिइण्णं पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया ।

५. प. ता मागसिरीं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे मग्गसिरं णक्खत्ते जोएइ,
२. उवकुलं जोएमाणे रोहिणी णक्खत्ते जोएइ,
मागसिरी पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता मागसिरी पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया ।

६. प. ता पोसिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुलं जोएमाणे पुस्से णक्खत्ते जोएइ,
२. उवकुलं जोएमाणे पुणव्वसू णक्खत्ते जोएइ,
३. कुलोवकुलं जोएमाणे अद्दा णक्खत्तं जोएइ,
पोसिण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोसिण्णं पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया ।

७. प. ता माहिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएइ,
२. उवकुलं जोएमाणे अस्सेसा णक्खत्ते जोएइ,
माहिण्णं पुण्णिमं कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,
कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता माहिण्णं पुण्णिमं जुत्ते त्ति वत्तव्वं सिया ।

८. प. ता फग्गुणीणं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ,

फग्गुणीणं पुण्णिमं कुलेण वा जोएइ, उवकलेण वा जोएइ,

कलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता फग्गुणीणं पुण्णिमं जुत्ते त्ति वत्तव्वं सिया,

९. प. ता चित्तिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोयमाणे चित्ता णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोयमाणे हत्थ णक्खत्ते जोएइ,

चित्तिण्णं पुण्णिमं कुलेण वा जोएइ, उवकुलेणं वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता चित्तिण्णं पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया।

१०. प. ता विसाहिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे विसाहा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे साती णक्खत्ते जोएइ,

विसाहिण्णं पुण्णिमं कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता विसाहिण्णं पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया।

११. प. ता जेट्ठा-मूलिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुलं जोएमाणे मूले णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे जेट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

३. कुलोवकुलं जोएमाणे अणुराहा णक्खत्ते जोएइ,

जेट्ठा-मूलिण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता जेट्ठा-मूलिण्णं पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया,

१२. प. ता आसाढिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. ता कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे उत्तरासाढा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे पुव्वासाढा णक्खत्ते जोएइ,
आसाढिण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता आसाढिण्णं पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया,

दुवालससासु अमावासासु णक्खत्तजोग-संखा

१. प. ता सावित्थिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा-अस्सेसा य मघा य,

२. प. ता पोट्ठवइं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा-पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी,

३. प. ता आसोइं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा-हत्थो, चित्ता य,

४. प. ता कत्तिइं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा सातो, विसाहा य,

५. प. ता मग्गसिरिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. तिण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा-अणुराधा जेट्ठा-मूलो य,

६. प. ता पोसिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा-पुव्वासाढा, उत्तरासाढा,

७. प. ता माहिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा-१. अभीयी, २. सवणो, ३. धणिट्ठा,

८. प. ता फग्गुणी णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा-१. सतभिसया, २. पुव्वापोट्ठवया ।

९. प. ता चेत्तिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहारेवई, अस्सिणी य,

१०. प. ता वेसाहिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा-भरणी, कत्तिया य,

११. प. ता जेट्ठा-मूलिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा-रोहिणी, मग्गसिरं च,

१२. प. ता आसाढिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ. तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा-१. अद्दा, २. पुणव्वसू, ३. पुस्सो,

दुवालसासु अमावासासु कुलाइ-णक्खत्त-जोग-संखा—

१. प. ता सावित्ठिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ , उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे असिलेसा जोएइ,

ता सावित्ठिं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता सावित्ठी अमावासा जुत्ता वि वत्तव्वं सिया ।

२. प. ता पोट्ठवइं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे उत्तराफग्गुणी जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी जोएइ,

पुट्ठवइं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता पोट्ठवया अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया ।

३. प. ता आसोइं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे चित्ता णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे हत्थ णक्खत्ते जोएइ,

ता आसोइं णं अमावासं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता आसोई अमावासा जुत्ता त्ति वत्तव्वं सिया ।

४. प. कत्तिइं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे विसाहा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे साई णक्खत्ते जोएइ,

ता कत्तिइं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिइ णं अमावासं जुत्तत्तिवत्तव्वं सिया ।

५. प. ता मग्गसिरिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुलं जोएमाणे मूलणक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे जेट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

३. कुलोवकुलं जोएमाणे अणुराहा णक्खत्ते जोएइ,

ता मग्गसिरिणं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता, मग्गसिरि णं अमावासं जुत्तत्तिवत्तव्वं सिया।

६. प. पोसि णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे पुव्वासाढा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे, उत्तरासाढा णक्खत्ते जोएइ,

ता पोसि णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता पोसि णं अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

७. प. ता माहि णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुलं जोएमाणे अभीयी णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ,

३. कुलोवकुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ,

ता माहि णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता, कुलोवकुलेण वा जुत्ता माहिणं अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

८. प. ता फग्गुणि अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ,

ता फग्गुणी अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता फग्गुणि अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

९. प. ता चेत्ति अमावासं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे रेवती णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ,

ता चेत्ति अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता चेत्ति अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

१०. प. ता वेसाहिं अमावासं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे भरणि णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे कत्तिया णक्खत्ते जोएइ,

ता वेसाहिं अमावासं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता वेसाहिं अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

११. प. ता जेट्ठामूली अमावासं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं,

१. कुलं जोएमाणे रोहिणी णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे मग्गसिरे णक्खत्ते जोएइ,

ता जेट्ठामूली अमावासं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता जेट्ठामूली अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

१२. प. ता आसाढिं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?

उ. कुल वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,

१. कुलं जोएमाण अद्दा णक्खत्ते जोएइ,

२. उवकुलं जोएमाणे पुणव्वसू णक्खत्ते जोएइ,

३. कुलोवकुलं जोएमाणे पुस्से णक्खत्ते जोएइ,

ता आसाढिं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ,

कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता, कुलोवकुलेण वा जुत्ता, आसाढिं अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया।

दशम प्राभृत

[सप्तम प्राभृतप्राभृत]

दुवालस पुण्णिमासु अमावासासु य चंदेण-णक्खत्तसंजोगो

४०. १. प. ता कहं ते सण्णिवाए आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. [क] ता जया णं सावित्ती पुण्णिमा भवइ,
तया णं माही अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं माही पुण्णिमा भवइ,
तया णं सावित्ती अमावासा भवइ ।

२. [क] ता जया णं पुट्ठवई पुण्णिमा भवइ,
तया णं फग्गुणी अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवइ,
तया णं पुट्ठवई अमावासा भवइ ।

३. [क] ता जया णं आसोई पुण्णिमा भवइ,
तया णं चेत्ती अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं चेत्ती पुण्णिमा भवइ,
तया णं आसोई अमावासा भवइ ।

४. [क] ता जया णं कत्तियी पुण्णिमा भवइ,
तया णं वेसाही अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं वेसाही पुण्णिमा भवइ,
तया णं कत्तियी अमावासा भवइ ।

५. [क] ता जया णं मग्गसिरी पुण्णिमा भवइ,
तया णं जेट्ठामूली अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं जेट्ठामूली पुण्णिमा भवइ
तया णं मग्गसिरी अमावासा भवइ ।

६. [क] ता जया णं पोसी पुण्णिमा भवइ,
तया णं आसाढी अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं आसाढी पुण्णिमा भवइ,
तया णं पोसी अमावासा भवइ ।

दशम प्राभृत

[अष्टम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं संठाणं

४१. १. प. ता कहं ते णक्खत्तसंठिई आहिए त्ति वएज्जा ?
ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीयी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. गोसीसावलि-संठिए पण्णत्ते,

२. प. ता सवणे णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. काहार-संठिए पण्णत्ते,

३. प. ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. सउणीपलोणग-संठिए पण्णत्ते,

४. प. ता सयभिसया णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. पुप्फोवयारसंठिए पण्णत्ते,

५. प. ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. अवड्ढवावि संठिए पण्णत्ते ?

६. प. ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. अवड्ढवावि-संठिए पण्णत्ते,

७. प. ता रेवई णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. णावासंठिए पण्णत्ते,

८. प. ता अस्सिणी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. आसक्खंध-संठिए पण्णत्ते,

९. प. ता भरणी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. भग-संठिए पण्णत्ते,

१०. प. ता कत्तिया णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. छुरधरग-संठिए पण्णत्ते,

११. प. ता रोहिणी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. सगडुद्धि-संठिए पण्णत्ते,

१२. प. ता मियसिरा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. मगसीसावलि-संठिए पण्णत्ते,

१३. प. ता अद्दा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. रुहिरबिंदु-संठिए पण्णत्ते,

१४. प. ता पुणव्वणक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते,
उ. तुला-संठिए पण्णत्ते,

१५. प. ता पुस्से णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. वद्धमाण-संठिए पण्णत्ते,

१६. प. ता अस्सेसा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. पडाग-संठिए पण्णत्ते,

१७. प. ता महा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. पागार-संठिए पण्णत्ते,

१८. प. ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. अद्धपलियंक-संठिए पण्णत्ते,

१९. प. ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. अद्धपलियंक-संठिए पण्णत्ते,

२०. प. ता हत्थ णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. हत्थ-संठिए पण्णत्ते,

२१. प. ता चित्ता णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. मुहफुल्ल-संठिए पण्णत्ते,

२२. प. ता साई णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. खीलग-संठिए पण्णत्ते,

२३. प. ता विसाहा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. दामणि-संठिए पण्णत्ते,

२४. प. ता अणराहा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. एगावलि-संठिए पण्णत्ते,

२५. प. ता जेट्ठा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. गयदंत-संठिए पण्णत्ते,

२६. प. ता मूले णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. विच्छुयलंगोलसंठिए पण्णत्ते,

२७. प. ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. गयविक्कम-संठिए पण्णत्ते,

२८. प. ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. सीहनिसाइयसंठिए पण्णत्ते ।[1]

---

१. प. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! गोसीसावलिसंठिए पण्णत्ते,
गाहाओ—
१. गोसीसावलि, २. काहार, ३. सउणी, ४. पुप्फोवयार, ५-६. वावी य ।
७. णावा, ८. आसक्खंधग, ९. भग, १०. छुरवरए, ११. अ संगडुद्धी ॥
१२. मिगसीसावली, १३. रुहिरबिंदु, १४. तुला, १५. वद्धमाणग, १६. पडागा ।
१७. पागारे, १८-१९. पलिअंके, २०. हत्थे, २१. मुहफुल्लए चेव ॥
२२. खीलग, २३. दामणी, २४. एगावली य, २५. गयदंत, २६. विच्छुयलंगुले च ।
२७. गयविक्कमे य तत्तो, २८. सीहनिसीही य संठाणा ॥ — जंबु. वक्ख. ७, सु. १६०
सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति में ये गाथाएं उद्धृत हैं
पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद के संस्थान तथा पूर्वाफाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी के संस्थान समान माने गए हैं किन्तु पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा के संस्थान भिन्न भिन्न माने गए हैं।
संस्थानों की इस विभिन्नता का हेतु इस प्रकार है: –
पूर्वभद्रपदायाः अर्द्धवापीसंस्थानं, उत्तरभद्रपदाया अप्यर्धवापी संस्थानं, एतदर्द्धवापीद्वयमीलनेन परिपूर्णा वापी भवति, तेन सूत्रे वापीत्युक्तम् ।
पूर्वफल्गुन्या अर्द्धपल्यंकसंस्थानं, उत्तरफल्गुन्या अप्यर्द्धपल्यंक संस्थानं, अत्रापि अर्द्धपल्यंकद्वयमीलनेन परिपूर्णपल्यंको भवति, तेन संख्यान्यूनता न । — जंबु. वक्ख. ६, सु. १६० वृत्ति

दशम प्राभृत

[नवम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं तारग्गसंखा

सूत्र ४२-१. प. ता कहं ते तारग्गे आहिए त्ति वएज्जा ?

ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभीई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. तितारे पण्णत्ते,[1]

२. प. सवणे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. तितारे पण्णत्ते,[2]

३. प. धणिट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. पंचतारे पण्णत्ते.[3]

४. प. सतभिसया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. सततारे पण्णत्ते,[4]

---

१. क-प. एएसि ण भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. गोयमा ! तितारे पण्णत्ते,

एवं णेयव्वा जस्स जइयाओ ताराओ,

इमं च त तारगं,

गाहाओ --

तिग-तिग-पंचग-सग-दुग-बत्तीसग-तिगं तह तिगं च ।

छ, पंचग-तिग-एक्कग-पंचग-तिग-छक्कगं चेव ॥१॥

सत्तग-दुग-दुग-पंचग-एक्केक्कग-पंच-चउ-तिगं चेव ।

एक्कारसग-चउक्कं, चउक्कं चेव तारग्गं ॥२॥ जंबु. वक्ष. ६, सु. १५९

ख. अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते,

एवं सवणो, अस्सिणी भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा -- ठाण. अ. ३, उ. ३, सु. २२७

अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते, सम. स. ३, सु. ९

२. क. ठाणं अ. ३, उ. ३, सु. २२७

ख. सम. स. ३, सु. ९

३. क. पंच णक्खत्ता पंचतारा पण्णत्ता, तं जहा १. धणिट्ठा, २. रोहिणी, ३. पुणव्वसू ४. हत्थो, ५. विसाहा, ठाण अ. ५, उ. ३, सु. ४७३

ख. सम. स. ५, सु. १३

४. सतभिसयाणक्खत्ते एगसयतारे पण्णत्ते, सम. स. १००, सु. २

५. प. पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. दुतारे पण्णत्ते,[1]

६. प. उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. दुतारे पण्णत्ते,[2]

७. प. रेवई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. बत्तीसइतारे पण्णत्ते,[3]

८. प. अस्सिणी, णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. तितारे पण्णत्ते,[4]

९. प. भरणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. तितारे पण्णत्ते,[5]

१०. प. कत्तिया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. छतारे पण्णत्ते,[6]

११. प. रोहिणीणक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. पंचतारे पण्णत्ते,[7]

१२. प. मिगसिरे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. तितारे पण्णत्ते,[8]

---

१. क-पुव्वाभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते, —ठाण अ. २. उ. ४, सु. ११०
ख-सम. स. २, सु. ६

२. क- उत्तराभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते, —ठाणं अ. २, उ. ४, सु. ११०
ख-सम. स. २, सु. ६

३. रेवईणक्खत्ते बत्तीसइ तारे पण्णत्ते, सम. स. ३२, सु. ५

४. क-ठाणं, अ. ३, उ. ३, सु. २२७
ख-सम. स. ३, सु. ९

५. क-ठाणं, अ. ३ उ. ३, सु. २२७
ख- सम. स. ३, सु. ९

६. कत्तिया णक्खत्ते छतारे पण्णत्ते
क-ठाणं अ. ६, सु. ५३९
ख-सम. स. ६, सु. ७

७. क-ठाणं अ. ५, उ. ३, सु. ४७३
ख-सम. स. ५, सु. १२

८. क-ठाणं अ. ३, उ. ३, सु. २२७
ख-सम. स. ३, सु. ९

१३. प. अद्दा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. एगतारे पण्णत्ते,[1]

१४. प. पुणव्वसू णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. पंचतारे पण्णत्ते,[2]

१५. प. पुस्से णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. तितारे पण्णत्ते,[3]

१६. प. अस्सेसा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. छतारे पण्णत्ते,[4]

१७. प. महा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. सत्ततारे पण्णत्ते,[5]

१८. प. पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. दुतारे पण्णत्ते,[6]

१९. प. उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. दुतारे पण्णत्ते,[7]

---

१. क-अद्दा णक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते,
ठाणं, अ. १, सु. ५५
ख-सम. स. १, सु. २३

२. क-ठाणं अ. ५, उ. ३, सु. ४७३
ख-सम. स. ५, सु. १३

३. क-ठाणं अ. ३, उ. ३, सु. २२७
ख-सम. स. ३, सु. ९

४. क-ठाणं, अ. ६, सु. ५३९
ख-सम. स. ६, सु. ७

५. क-महा णक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते,
ठाण, अ. ७, सु. ५८९
ख-सम. स. ७, सु. ७

६. क-ठाण अ. २, उ. ४, सु. ११०
ख-सम. स. २, सु. ६

७. क-ठाणं ठा. २, उ. ४, सु. ११०
ख-सम. स. २, सु. ६

२०. प. हत्थ णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. पंचतारे पण्णत्ते,[1]

२१. प. चित्ता णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. एकतारे पण्णत्ते,[2]

२२. प. साती णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. एकतारे पण्णत्ते,[3]

२३. प. विसाहा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. पंचतारे पण्णत्ते,[4]

२४. प. अणुराहा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. पंचतारे पण्णत्ते,[5]

२५. प. जेट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. तितारे पण्णत्ते,[6]

२६. प. मूले णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. एगतारे पण्णत्ते,[7]

---

१. क-ठाणं, ठा. ५, उ. ३, सु. ४७३
ख-सम. स. ५, सु. १३

२. क- ठाणं, ठा. १, सु. ५५
ख-सम. स. १, सु. ५५

३. क-ठाणं, ठा. १, सु. ५५
ख-सम. १, सु. २३

४. क-ठाणं, ठा. ५, उ. ३, सु. ४७३
ख-सम. स. ५, सु. १२

५. क-अणुराहा णक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते—ठाण आ. ४ उ. ४ सु. ३८६
ख-सम. ४ सु. ७

६. क-ठाणं, ठा. ३, उ. ३, सु. २२७
ख-सम. स. ३, सु. ९

७. मूलनक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते —सम. ११, सु. ५

२७. प. पुव्वासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. चउतारे पण्णत्ते,[1]

२८. प. उत्तरासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ. चउतारे पण्णत्ते ।[2]

१. क-ठाणं, ठा. ४, उ. ४, सु. ३८६
ख-सम. स. ४, सु. ८

२. क-ठाणं, ठा. ४, उ. ४, सु. ३८६
ख-सम. स. ४, सु. ९

दशम प्राभृत

[दशम प्राभृतप्राभृत]

वास-हेमंत-गिम्ह-राइंदियाणं

४३. प. १. क. ता कहं ते णेता आहिए ति वएज्जा ?

ख. ता वासाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—१. उत्तरासाढा, २. अभिई, ३. सवणो, ४. धणिट्ठा ।

१. उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. अभिई सत्त अहोरत्ते णेइ,

३. सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४. धणिट्ठा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइं चत्तारि य अंगुलाणि पोरिसी भवइ ।

प. २. ता वासाणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—१. धणिट्ठा, २. सतभिसया, ३. पुव्वपोट्ठवया, ४. उत्तरपोट्ठवया,

१. धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. सतभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ,

३. पुव्वपोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४. उत्तरपोट्ठवया एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. ३. ता वासाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा १. उत्तरपोट्ठवया, २. रेवई, ३. अस्सिणी,

१. उत्तरपोट्ठवया चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. रेवई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. अस्सिणी एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तेहत्थाइं तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ ।

प. ४. ता वासाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा १. अस्सिणी, २. भरणी, ३. कत्तिया,

१. अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. कत्तिया एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलाए पोरिए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. १. ता हेमंताणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा- १. कत्तिया, २. रोहिणी, ३. संठाणा,

१. कत्तिया चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. रोहिणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. संठाणा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. २. ता हेमंताणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा १. संठाणा, २. अद्दा, ३. पुणव्वसू, ४. पुस्सो,

१. संठाणा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. अद्दा सत्त अहोरत्ते णेइ,

३. पुणव्वसू अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४. पुस्से एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहत्थाइं चत्तारि पयाइ पोरिसी भवइ ।

प. ३. ता हेमंताणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा १. पुस्सो, २. अस्सेसा, ३. महा,

१. पुस्सो चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेइ,

३. महा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. ४. ता हेमंताणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति तं जहा—१. मघा, २. पुव्वाफग्गुणी, ३. उत्तराफग्गुणी,

१. मघा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. पुव्वाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. उत्तराफग्गुणी एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि सोलस अंगुलाइं पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. १. ता गिम्हाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा-१. उत्तराफग्गुणी, २. हत्थो, ३. चित्ता,

१. उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. चित्ता एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं य तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ ।

प. २. ता गिम्हाणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा-१. चित्ता, २. साई, ३. विसाहा

१. चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. साई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. विसाहा एगं अहोरत्ते णेइ,

तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प. ३. गिम्हाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति तं जहा—१. विसाहा, २. अणुराहा, ३. जेट्ठामूलो,

१. विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. अणुराहा पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. जेट्ठामूलो एगं अहोरत्ते णेइ,

तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चत्तारि अंगुलाणि पोरिसी भवइ ।

प्र. ४. ता गिम्हाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ. ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा —१. मूलो, २. पुव्वासाढा, ३. उत्तरासाढा,

१. मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२. पुव्वासाढा पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३. उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि वट्टाए समचउरंससंठियाए णग्गोधपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ।

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तेहट्ठाइं दो पदाइं पोरसीए भवइ ।

दशम प्राभृत

[ग्यारहवां प्राभृतप्राभृत]

चंदमग्गे णक्खत्तजोगसंखा

४४. प. ता कहं ते चंदमग्गा आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. १. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं -
अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति,

२. अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति,

३. अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं पि जोगं जोएंति,

४. अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं पि जोगं जोएंति,

५. अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स सया पमद्दं जोगं जोएंति ।

प. १. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेण जोगं जोएंति ?

२. कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति ?

३. कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति ?

४. कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति ?

५. कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स सया पमद्दं जोगं जोएंति ?

उ. १. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं —
तत्थ जे णं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति, ते णं छ, तंजहा—१. संठाणा, २. अद्दा, ३. पुस्सो, ४. अस्सेसा, ५. हत्थो, ६. मूलो,

२. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा १. अभिई, २. सवणो, ३. धणिट्ठा, ४. सतभिसया, ५. पुव्वभद्दवया, ५. उत्तरभद्दवया, ७. रेवई, ८. अस्सिणी, ९. भरणी, १०. पुव्वफग्गुणी, ११. उत्तरफग्गुणी, १२. सातो,

३. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति, ते णं सत्त, तंजहा १. कत्तिया, २. रोहिणी, ३. पुणव्वसू, ४. महा, ५. चित्ता, ६. विसाहा, ७. अणुराहा,

४. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति,
ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा जोएस्संति वा,

५. तत्थ जे ते णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोगं जोएइ, सा णं एगा, जेट्ठा।[1]

रवि-ससि-णक्खत्तेहिं अविरहियाणं, विरहियाणं सामण्णाण य चंदमंडलाणं संखा—

४५. क. ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं—
अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया,

ख. अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया,

ग. अत्थि चंदमंडला जे णं रवि-ससि-णक्खत्ताणं सामण्णा भवंति,

घ. अत्थि चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया।

प. क. ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं—
कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया ?

ख. कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया ?

ग. कयरे चंदमंडला जे णं रवि-ससि-णक्खत्ताणं सामण्णा भवंति ?

घ. कयरे चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया ?

---

१. प. १. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति ?

२. कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति ?

३. कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति ?

४. कयरे णक्खत्ता जे णं सया दाहिणेणं पमद्दं जोगं जोएंति ?

५. कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स जोगं जोएंति ?

उ. १. गोयमा ! एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति, ते णं छ, तंजहा—१. संठाण, २. अद्द, ३. पुस्सो, ४. असिलेस, ५. हत्थो, ६. तहेव मूलो अ बाहिरओ बाहिर मंडलस्स छप्पेते णक्खत्ता,

२. तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोग जोएंति, ते णं बारस, तंजहा १. अभिई, २. सवणो, ३. धणिट्ठा, ४. सयभिसया, ५. पुव्वभद्दवया, ६. उत्तरभद्दवया, ७. रेवई, ८. अस्सिणी, ९. भरणी, १०. पुव्वफग्गुणी, ११. उत्तरफग्गुणी, १२. साती,

३. तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणओऽवि, उत्तरओऽवि पमद्दं जोगं जोएंति, ते णं सत्त, तंजहा- १. कत्तिया, २. रोहिणी, ३. पुणव्वसू ४. मघा, ५. चित्ता, ६. विसाहा, ७. अणुराहा,

४. तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणओ पमद्दं जोगं जोएंति, ताओ णं दुवे आसाढाओ सव्वबाहिरए मंडले जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोएस्संति वा,

५. तत्थ णं जे से णक्खत्ता, जे णं सया चंदस्स जोगं जोएइ सा णं एगा जेट्ठा, —जंबु. वक्ख. ७, सु. १५७

उ. क. ता एएसिं णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं—

तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया,

ते णं अट्ठ, तंजहा

१. पढमे चंदमंडले, २. तीतिए चंदमंडले, ३. छट्ठे चंदमंडले, ४. सत्तमे चंदमंडले,

५. अट्ठमे चंदमंडले, ६. दसमे चंदमंडले, ७. एक्कारसे चंदमंडले, ८. पण्णरसमे चंदमंडले,

ख. तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया,

ते णं सत्त तंजहा—

१. बितिए चंदमंडले, २. चउत्थे चंदमंडले, ३. पंचमे चंदमंडले, ४. नवमे चंदमंडले,

५. बारसमे चंदमंडले, ६. तेरसमे चंदमंडले, ७. चउद्दसमे चंदमंडले,

ग. तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं रवि-ससि-णक्खत्ताणं सामण्णा भवंति, ते णं चत्तारि, तं जहा—

१. पढमे चंदमंडले, २. बीए चंदमंडले, ३. इक्कारसमे चंदमंडले, ४. पण्णरसमे चंदमंडले,

घ. तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया ते णं पंच तंजहा—

१. छट्ठे चंदमंडले, २. सत्तमे चंदमंडले, ३. अट्ठमे चंदमंडले, ४. नवमे चंदमंडले,

५. दसमे चंदमंडले।

दशम प्राभृत

[बारहवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं देवया

४६. प. ता कहं ते णक्खत्ताणं देवया आहिए त्ति वएज्जा ?
ता एएणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं--
अभीई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. बंभदेवयाए पण्णत्ते,

२. प. ता सवणे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. विण्हुदेवयाए पण्णत्ते,

३. प. ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. वसुदेवयाए पण्णत्ते,

४. प. ता सयभिसया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. वरुणदेवयाए पण्णत्ते,

५. प. ता पुव्वपोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अजदेवयाए पण्णत्ते,

६. प. ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अहिवड्ढि देवयाए[1] पण्णत्ते,

७. प. ता रेवई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. पुस्सदेवयाए[2] पण्णत्ते,

८. प. ता अस्सिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अस्सदेवयाए[3] पण्णत्ते,

९. प. ता भरिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. जमदेवयाए पण्णत्ते,

---

१. अभिवृद्धि, अन्यत्र-अहिर्बुध्न इति ।
२. पूषा पूषनामको देवो, न तु सूर्यपर्यायस्तेन रेवत्येव पौष्णमिति प्रसिद्धम् ।
३. अश्वनामको देव ।

१०. प. ता कत्तिया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अग्गिदेवयाए पण्णत्ते,
११. प. ता रोहिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. पयावइदेवयाए[1] पण्णत्ते,
१२. प. ता संठाणा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. सोमदेवयाए[2] पण्णत्ते,
१३. प. ता अद्दा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. रुद्ददेवयाए[3] पण्णत्ते,
१४. प. ता पुणव्वसू णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अदितिदेवयाए पण्णत्ते,
१५. प. पुस्से णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. बहस्सइदेवयाए पण्णत्ते,
१६. प. ता अस्सेसा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. सप्पदेवयाए पण्णत्ते,
१७. प. ता महा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. पितिदेवयाए[4] पण्णत्ते,
१८. प. ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. भगदेवयाए पण्णत्ते,
१९. प. ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. अज्जम[5] देवयाए पण्णत्ते,
२०. प. ता हत्थे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. सुविया देवयाए[6] पण्णत्ते,
२१. प. ता चित्ता णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. तट्ठदेवयाए[7] पण्णत्ते,

---

१. प्रजापतिरिति ब्रह्मनामको देवः, अयं च ब्रह्मणः पर्यायान् सहते, तेन ब्राह्ममित्यादि प्रसिद्धम् ।
२. सोमः चन्द्रस्तेन सौम्यं चान्द्रमसमित्यादि प्रसिद्धम् ।
३. रुद्रः—शिवस्तेन रौद्रा कालिनीति प्रसिद्धम् ।
४. पितृनामा देवः,
५. अर्यमा अर्यमनामको देवविशेषः,
६. सविता सूर्यः,
७. त्वष्टा—त्वष्टृनामको देवस्तेन त्वाष्ट्री चित्रा इति प्रसिद्धम् ।

२२. प. ता साती णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. वाउदेवयाए पण्णत्ते,

२३. प. ता विसाहा णक्खत्ते[1] किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. इंदग्गीदेवयाए पण्णत्ते,

२४. प. ता अणुराहा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. मित्तदेवयाए पण्णत्ते,

२५. प. ता जेट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. इंददेवयाए पण्णत्ते,

२६. प. ता मूले णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. णिरइदेवयाए[2] पण्णत्ते,

२७. प. ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. आउदेवयाए[3] पण्णत्ते,

२८. प. ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. विस्सदेवयाए पण्णत्ते,[4]

---

१. क -विशाखा—द्विदैवतमिति प्रसिद्धम् ।
२. नैर्ऋतः राक्षसस्तेन ।
३. आपो जलनामा देवस्तेन पूर्वाषाढा तोयमिति प्रसिद्धम् ।
४. विश्वेदेवास्त्रयोदश ।

क. प. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! बम्हदेवया पण्णत्ता,
गाहाओ:—

१. बम्हा, २. विण्हु, ३. वसू, ४. वरुणे, ५. अय, ६. अभिवड्ढी, ७. पूसे,
८. आसे, ९. जमे, १०. अग्गी, ११. पयावई, १२. सोमे, १३. रुद्दे, १४. अदिइ ॥१॥
१५. बहस्सई, १६. सप्पे, १७. पिऊ, १८. भगे, १९. अज्जम, २०. सविआ, २१. तट्ठा
२२. वाउ, २३. इंदग्गी, २४. मित्तो, २५. इंदे, २६. निरई, २७. आउ, २८. विस्सा य ॥२॥
एवं णक्खत्ताणं एसा परिवाडी णेअव्वा, जाव

प. उत्तरासाढा णक्खत्ते णं भंते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! विस्सदेवया पण्णत्ता, --जंबू. वक्ख. ७, सु. १५८

दशम प्राभृत

[तेरहवां प्राभृतप्राभृत]

मुहुत्ताणं णामाइं–

४७. प. ता कहं ते मुहुत्ताणं णामधेज्जा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. एगमेगस्स णं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पण्णत्ता तंजहा

गाहाओ :

१. रोद्दे, २. सेते, ३. मित्ते, ४. वायु, ५. सुगीए, ६. अभिचंदे ।

७. माहिंद, ८. बलव, ९. बंभो, १०. बहुसच्चे, ११. चेव ईसाणे ।।१।।

१२. तट्ठे य, १३. भाविप्पा, १४. वेसमणे, १५. वरुणे य, १६. आणंदे ।

१७. विजए य, १८. वीससेणे, १९. पायावच्चे चेव, २०. उवसमे य ।।२।।

२१. गंधव्व, २२.अग्गिवेसे, २३. सयरिसहे, २४. आयवं च, २५. अममे य ।

२६. अणवं, २७. च भोम, २८. रिसहे, २९. सव्वट्ठे, ३०. रक्खसे चेव ।।३।।

ख. एतया-ब्रह्म-विष्णु-वरुणादिरूपया परिपाट्या, न तु परतीर्थिकप्रयुक्त-अश्व-यम-दहन-कमलजादिरूपया नेतव्या-परिसमदि प्रापणीया ।

गाहाओ :

१. बम्हा, २. विण्हू, ३. अवसु, ४. वरुणे, ५. अय, ६. वुड्ढी, ७. पूस, ८. आस, ९. जमे ।

१०. अग्गि, ११. पयावइ, १२. सोमे, १३. रुद्दे, १४. अदिति, १५. बहस्सई, १६. सप्पे, ।।१।।

१७. पिउ, १८. भग, १९. अज्जम, २०. सविआ, २१. तट्ठा, २२. वाउ, २३. तहेव, इंदग्गी ।

२४. मित्ते, २५. इंदे, २६. निरुई, २७. आउ, २८. विस्सा या बोद्धव्वे ।।२।। – जंबु. वक्ष. ४७, सु. १७४

एक ही आगम में अट्ठावीस नक्षत्र-देवताओं के नामों की गाथाएं भिन्न-भिन्न रचनाशैली में दो बार आना, विचारणीय प्रश्न है । इसका समाधान बहुश्रुत करें तो जिज्ञासुओं के ज्ञान की वृद्धि हो ।

१. एगमेगे णं अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ता,

एएसि णं तीसाए मुहुत्ताणं तीसं नामधेज्जा पण्णत्ता,

तं जहा–

१. रोद्दे, २. सत्ते, ३. मित्ते, ४. वाऊ, ५. सुपीए, ६. अभिचंदे, ७. माहिंदे, ८. पलंबे, ९. बंभे, १०. सच्चे, ११. आणंदे, १२. विजए, १३. विस्ससेणे, १४. पायावच्चे, १५. उवसमे, १६. ईसाणे, १७. तट्ठे, १८. भाविअप्पा, १९. वेसमणे, २०. वरुणे, २१. सतरिसमे, २२. गंधव्वे, २३. अग्गिवेसायणे, २४. आतवे, २५. अमते, २६. तट्ठवे, २७. भूमहे, २८. रिसभे, २९. सव्वट्ठसिद्धे, ३०. रक्खसे, ।

दशम प्राभृत

[चौदहवां प्राभृतप्राभृत]

दिवसराईणं णामाइं–

४८. प. ता कहं ते दिवसा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तंजहा पडिवया दिवसे, बितिया दिवसे, तइया दिवसे, चउत्थी दिवसे, पंचमी दिवसे, छट्ठी दिवसे, सत्तमी दिवसे, अट्ठमी दिवसे, नवमी दिवसे, दसमी दिवसे, एक्कारसी दिवसे, बारसी दिवसे, तेरसी दिवसे, चउद्दसी दिवसे, पण्णरसे दिवसे,

ता एएसि णं पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा –

गाहाओः -

१. पुव्वंगे, २. सिद्धमणोरमे, य तत्तो, ३. मणोहरो चेव ।

४. जसमहे, ५. जसोधर, ६. सव्वकामसमिद्धे ति य ॥१॥

७. इंदे मुद्धाभिसित्ते य, ८. सोमणस, ९. धणंजए य बोद्धव्वे ।

१०. अत्थसिद्धे, ११. अभिजाए, १२. अच्चासणे, १३. सतंजए ॥२॥

१४. अग्गिवेसे, १५. उवसमे, दिवसाणं णामधेज्जाइं ॥

प. ता कहं ते राईओ पण्णत्ताओ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस राईओ पण्णत्ताओ, तंजहा – पडिवाराई, बितियाराई, ततीयाराई, चउत्थीराई, पंचमीराई, छट्ठीराई, सत्तमीराई, अट्ठमीराई, नवमीराई, दसमीराई, एक्कारसीराई, बारसीराई, तेरसीराई, चउद्दसीराई, पण्णरसीराई,

ता एयासिणं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—

गाहाओ :—

१. उत्तमा य, २. सुणक्खत्ता, ३. एलावच्चा, ४. जसोधरा ॥

५. सोमणसा चेव तहा, ६. सिरिसंभूता य बोद्धव्वा ॥१॥

७. विजया य, ८. वेजयंती, ९. जयंति, १०. अपराजिया य, ११. पण्णा य ।

१२. समाहारा चेव तहा, १३. तेया य तहा य, १४. अतितेया ॥२॥

१५. देवाणंदानिरती, रयणीणं णामधेज्जाइं ॥

दशम प्राभृत

[पन्द्रहवां प्राभृतप्राभृत]

तिहीणं णामाइं

४९. प. ता कहं ते तिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. तत्थ खलु इमा दुविहा तिही पण्णत्ता, तं जहा – १. दिवसतिही, २. राईतिही य,

प. ता कहं ते दिवसतिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस दिवसतिही पण्णत्ता तं जहा—

१. णंदे, २. भद्दे, ३. जए, ४. तुच्छे, ५. पुण्णे

पक्खस्स पंचमी,

पुणरवि ६. णंदे, ७. भद्दे, ८. जए, ९ तुच्छे, १०. पुण्णे

पक्खस्स दसमी,

पुणरवि –११. णंदे, १२. भद्दे, १३. जए, १४. तुच्छे, १५. पुण्णे

पक्खस्स पण्णरस,

एवं ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसि दिवसाणं ।

प. ता कहं मे राईतिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस राईतिही पण्णत्ता तं जहा—

१. उग्गवई, २. भोगवई, ३. जसवई, ४. सव्वसिद्धा, ५. सुहणामा,

पुणरवि—६. उग्गवई, ७. भोगवई, ८. जसवई, ९. सव्वसिद्धा, १०. सुहणामा,

पुणरवि –११. उग्गवई, १२. भोगवई, १३. जसवई, १४. सव्वसिद्धा, १५. सुहणामा,

एए तिगुणा तिहीओ सव्वेसि राईणं ।।

दशम प्राभृत

[सोलहवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं गोत्ता

५०. प. ता कहं ते गोत्ता ? आहिए त्ति वएज्जा ।

प. १. ता एएसिणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं-
अभिई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. ता मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते ।

प. २. सवणे णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. संखायणसगोत्ते पण्णत्ते ।

प. ३. धणिट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. अग्गिवेसायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. ४ सतभिसया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. कण्णलोयणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. ५. पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. जोउकण्णियसगोत्ते पण्णत्ते,

प. ६. उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. धनंजयसगोत्ते पण्णत्ते,

प. ७. रेवई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. पुस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. ८. अस्सिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. अस्सावणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. ९. भरणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. भग्गवेससगोत्ते पण्णत्ते,

प. १०. कत्तिया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?

उ. अग्गिवेससगोत्ते पण्णत्ते,

प. ११. रोहिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. गोतमसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १२. संठाणा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. भारद्दायसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १३. अद्दा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. लोहिच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १४. पुणव्वसु णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. वासिट्ठसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १५. पुस्से णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. उज्जायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १६. अस्सेसा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. मंडव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १७. मघा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. पिंगायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १८. पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. गोवल्लायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. १९. उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. स कासवगोत्ते पण्णत्ते,

प. २०. हत्थे णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. स कोसियगोत्ते पण्णत्ते,

प. २१. चित्ता णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. दब्भियायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २२. साई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. स चामरच्छसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २३. विसाहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. सुंगायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २४. अणुराहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. गोलव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २५. जेट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. तिगिच्छायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २६. मूले णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. कच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २७. पुव्वासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. वज्झियायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प. २८. उत्तरासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. वग्घावच्चसगोत्ते पण्णत्ते,[1]

---

१. प. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिइणक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ. गोयमा ! मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते,
गहाओ—
१. मोग्गलायण, २. संखायणे अतह, ३. अग्गभाव, ४. कसिणल्ले ।
ततो अ ५. जा उकण्णे, ६. घणंजए चेव बोद्धव्वे ॥१॥
७. पुस्सायणे य, ८. अस्सायणे य, ९. भग्गवेसे य, १०. अग्गिवेसे य ।
११. गोअम, १२. भारद्दाए, १३. लोहिच्चे चेव, १४. वासिट्ठे ॥२॥
१५. ओमज्जायण, १६. मंडव्वायणे य, १७. पिंगायणे य, १८. गोवल्ले ॥
१९. कासव, २०. कोसिय, २१. दब्भिय, २२. चामरच्छा य, २३. सुंगा य ॥३॥
२४. गोलव्वायण, २५. तेगिच्छायणे अ, २६. कच्चायणे हवइ मूले ॥
२७. तत्तो य मज्झियायण, २८. वग्घावच्चे य गोत्ताइं ॥ ४॥ —जंबु. वक्ख. ७, सु. १६०

दशम प्राभृत

[सत्तरहवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं भोयणं कज्जसिद्धी य

५१. प. ता कहं ते भोयणा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णं णक्खत्ताणं मज्झे

१. कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधेंति,

२. रोहिणीहिं वसभ-मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

३. मिगसिरे णं (संठाणाहिं) मिग-मंसं[1] भोच्चा कज्जं साधेंति

४. अद्दाहिं णवणीएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

५. पुणव्वसुणाऽथ घएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

६. पुस्से णं खीरेण भोच्चा कज्जं साधेंति,

७. अस्सेसाए दीवग-मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

८. महाहिं कसोलिं भोच्चा कज्जं साधेंति,

९. पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेहक-मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१०. उत्तराहिं फग्गुणीहिं णक्खो-मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

११. हत्थेण वत्थाणीएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१२. चित्ताहिं मुग्ग सूवेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१३. साइणा फलाइं भोच्चा कज्जं साधेंति ।

१४. विसाहाहिं आसित्तियाओ भोच्चा कज्जं साधेंति,

१५. अणुराहाहिं मिस्सकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१६. जेट्ठाहिं कोलट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१७. मूलेणं मूलापन्नेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

---

१. रोहिणीहिं चसम-मंसं (चमसमंसं) भोच्चा कज्जं साधेंति.
आ. स. समिति से प्रकाशित प्रति के पृष्ठ १५१ पर (पाठान्तर) है ।

१८. पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलग-सरीरं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१९. उत्तराहिं आसाढाहिं बिल्लेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२०. अभीयिणा पुप्फेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२१. सवणेणं खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२२. धणिट्ठाहिं जूसेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२३. सतभिसयाए तुवरीओ भोच्चा कज्जं साधेंति,

२४. पुव्वाहिं पुट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२५. उत्तराहिं पुट्ठवयाहिं वराहमंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२६. रेवतीहिं जलयर-मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

२७. अस्सिणीहिं तितिर-मंसं वट्टकमंसं वा भोच्चा कज्जं साधेंति,

२८. भरणीहिं तलं (तिल) तंदुलकं भोच्चा कज्जं साधेंति ।[1]

---

१. कुल्माषास्तिलतण्डुलानपि तथा माषांश्च गव्यं दधि, त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ।
तद्वत्पायसमेव चापफलकं मार्गं च णाणं तथा, षाष्टिकं च प्रियंगवपूपमथवा चित्राण्डजान् सत्फलम् ॥८४॥
कौर्मं सारिकगोधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हयाद्भुक्ते स्वान्कुसराशमुद्गमपि श्वा पिष्ट यवानां तथा ।
मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेवं क्रमाद्भक्ष्याऽभक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान् भक्षेत्तथाऽऽलोकयेत् ॥८५॥
- मुहूर्तचिन्तामणि यात्राप्रकरण

वस्तुत इदं सप्तदशं प्राभृतप्राभृतं न भगवता प्रतिपादितं किन्तु केनाऽप्यत्र प्रक्षिप्तमिति प्रतिभाति, नेयं भाषाशैली भगवतो लभ्यते, यतोऽत्र सूत्रे कुत्रचित् 'कत्तियाहिं रोहिणीहिं, अद्दाहिं' इत्यादि तृतीयाबहुवचनं लभ्यते कुत्रचिच्च 'पुणव्वसुणा, पुस्सेणं, अद्दाए' इत्यादि तृतीयैकवचनं लभ्यते । अन्यच्च भोज्यवस्तुविषये कुत्रचित्तृतीया कुत्रचिद् द्वितीया च । यथा -'दहिणा भोच्चा, णवणीयेण भोच्चा, खीरेण भोच्चा' इति तृतीया, कुत्रचिच्च यत्र मांसविषयकथनं तत्र द्वितीया, यथा "वसभमंसं भोच्चा, मिगमंसं भोच्चा, दीवगमंसं भोच्चा" इत्यादि, एवमव्यवस्थितजल्पनेन ज्ञायते नेदं भगवता प्ररूपितमिति । अन्यच्च कतिपयस्थलेषु स्थलचर-जलचर-खेचर-प्राणिनां मांसभक्षणं कार्यसिद्धौ कारणत्वेन प्रतिपादितं तत्तु नितान्तमसङ्गतमेव, यतः षट्कायप्रतिपालकस्य षट्कायरक्षणोपदेशतत्परस्य च भगवतो मुखान्नैव मांसभक्षणविधिर्भवितुमर्हति, शास्त्रेषु कुत्रापि नैतादृशी वाणी भगवतः समुपलभ्यतेऽतो निश्चीयते-नेदं भगवदुपदेशविषयकमिति । अस्तु, अन्यदपि सयुक्तिकं कारणं श्रूयताम्—शास्त्रेषु सर्वत्र नक्षत्राणां गणना अभिजिन्नक्षत्रादारभ्यैव कृता युगस्याद्यदिवसेऽभिजित एव सद्भावात् । अत्रैव शास्त्रे पूर्व दशमप्राभृतस्य प्रथमे प्राभृतप्राभृते आदावेव सूत्रमिदम्-

"ता कहं ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाए आहिएति वएज्जा, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता सव्वेवि णक्खत्ता, कत्तियादिया भरणीपज्जवसाणा एगे एवमाहंसु ॥१॥" इयमन्यतीर्थिकानां प्रथमा प्रतिपत्तिः, एते कृत्तिकादीनि भरणीपर्यवसानानि नक्षत्राणि मन्यन्ते, एवमन्यतीर्थिकानां पञ्च प्रतिपत्तयः सन्ति । तत्र द्वितीयाः 'मघादिकानि अश्लेषापर्यवसानानि सर्वाणि नक्षत्राणि' इति

दशम प्राभृत

[अठारहवां प्राभृतप्राभृत]

एगे जुगे आदिच्च-चंदचारसंखा–

५२. प. क—ता कहं ते चारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. तत्थ खलु इमा दुविहा चारा पण्णत्ता, तं जहा १. आदिच्चचारा य, २. चंदचारा य।

प. क—ता कहं ते चंदचारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पंच संवच्छरिए णं जुगे,

१. अभीइ णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ,

२. सवणे णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ, एवं जाव,

३-२८ उत्तरासाढा णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ,

प. ख—ता कहं ते आइच्चचारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पंचसंवच्छरिए णं जुगे,

१. अभीई णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ, एवं जाव,

२-२८ उत्तरासाढा णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ।

२. तृतीया—धनिष्ठादीनि श्रवणपर्यवसानानि इति ३, चतुर्था अश्विन्यादीनि रेवतीपर्यवसानानि सर्वाणि नक्षत्राणि ४, एके भरण्यादिकानि अश्विनी पर्यवसानानि इति कथयन्ति। ५। एता पञ्चापि प्रतिपत्तयो मिथ्यारूपा इति कथयित्वा, भगवान् स्वमतं प्रदर्शयति—

"वयं पुण एवं वयामो- सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिई आइया उत्तरासाढापज्जवसाणा पण्णत्ता, तंजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा॥" इति।

अस्य मलयगिरिसूरिणा कृता टीका यथा—

"युगस्य चादिः प्रवर्तते श्रावणमासि बहुलपक्षे प्रतिपदि तिथौ बालवकरणे अभिजिन्नक्षत्रे चन्द्रेण सह योगमुपागच्छति (सति)। तथा चोक्तम्-ज्योतिष्करण्डके—

सावण बहुलपडिवए बालवकरणे अभिईनक्खत्ते।

सव्वत्थ पढमसमये जुगस्स आइं वियाणाहि॥ १॥ इति

'सव्वत्थ' सर्वत्रेति भरतैरवते महाविदेहे च। इत्थं सर्वेषामपि कालविशेषाणामादौ चन्द्रयोगमधिकृत्याभिजिन्नक्षत्रस्य वर्त्तमानत्वादभिजिदादीनि नक्षाणि प्रज्ञप्तानि।' इति टीका।

अत्र कृत्तिकातो भरणीपर्यवसानानि नक्षत्राणि प्रथमान्यतीर्थिकैः संमतानि सन्ति, तन्मतानुसारेणेदं—प्राभृतप्राभृतं दृश्यते। नेदं भगवतो मतमित्यतः स्पष्टं ज्ञायतेऽस्मिन् सप्तदशे प्राभृतप्राभृते भगवतः प्ररूपणा न भवितुमर्हतीत्यलं विस्तरेणेति।

—चन्द्रप्रज्ञप्तिप्रकाशिका टीका

दशम प्राभृत

[उन्नीसवां प्राभृतप्राभृत]

एगसंवच्छरस्स मासा–

५३. प. ता कहं ते मासा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस मासा पण्णत्ता,

तेसिं च दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा - १. लोइया, २. लोउत्तरिया य ।

तत्थ लोइया णामा :—

१. सावणे, २. भद्दवए, ३. आसोए, ४. कत्तिए, ५. मग्गसिरे, ६. पोसे, ७. माहे, ८. फग्गुणे, ९. चेत्ते, १०. वेसाहे, ११. जेट्ठे, १२. आसाढे ।

लोउत्तरिया णामा :—

गाहाओ :—

१. अभिणंदणे, २. सुपइट्ठे य, ३. विजए, ४. पीइवड्ढणे ।

५. सेज्जंसे य, ६. सिवेया वि, ७. सिसिरे वि य, ८. हेमवं ॥१॥

९. नवमे वसंतमासे, १०. दसमे कुसुमसंभवे ।

११. एकादसमे णिदाहो, १२. वणविरोही य बारसे[1] ॥२॥

---

१. जंबु. वक्ख. ७, सु. १५३

दशम प्राभृत

[बीसवां प्राभृतप्राभृत]

संवच्छराणं संखा लक्खणं च—

५४. प. ता कइ णं संवच्छरे ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तंजहा- १. णक्खत्त-संवच्छरे, २. जुग-संवच्छरे, ३. पमाण-संवच्छरे ४. लक्खण-संवच्छरे, ५. सणिच्छर-संवच्छरे ।[1]

णक्खत्तसंवच्छरस्स भेया तस्स कालपमाणं च—

५५. १. क ता णक्खत्तसंवच्छरे णं दुवालसविहे पण्णत्ते, तंजहा- -१. सावणे, २. भद्दवए, ३. आसोए, ४. कत्तिए, ५. मग्गसिरे, ६. पोसे, ७. माहे, ८. फग्गुणीए, ९. चित्ते, १०. वइसाहे, ११. जेट्ठे, १२. आसाढे ।

२. ख—जं वा बहुस्सई महग्गहे दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ ।

जुगसंवच्छरस्स भेया कालपमाणं च—

५६. २. ता जुगसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—१. चंदे, २. चंदे, ३. अभिवड्ढिए, ४. चंदे, ५. अभिवड्ढिए[2] ।

१. ता पढमस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

२. दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

३. तच्चस्स णं अभिवड्ढिय संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता,

४. चउत्थस्स णं चंद संवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

५. पंचमस्स णं अभिवड्ढिय संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता,

एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसए भवंतीतिमक्खायं ।

३. पमाणसंवच्छरस्स भेया—

५७-५८. ता पमाणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—१. णक्खत्ते, २. चंदे, ३. उडू, ४. आइच्चे, ५. अभिवड्ढिए,[3]

---

१. ठाणं. ५, उ. ३, सु. ४६०

२. ठाणं. ५, उ. ३, सु. ४६०

३. " " "

४. लक्खणसंवच्छरस्स भेया–

ता लक्खणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते तंजहा - १. णक्खत्ते, २. चंदे, ३. उडू, ४. आइच्चे, ५. अभिवड्ढिए ।

५. सणिच्छरसंवच्छर भेया–

क. ता सणिच्छरसंवच्छरे णं अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तंजहा—१. अभियी, २. सवणे, ३. धणिट्ठा, ४. सतभिसया, ५. पुव्वापोट्ठवया, ६. उत्तरापोट्ठवया, ७. रेवइ, ८. अस्सिणी, ९. भरणी, १०. कत्तिय, ११. रोहिणी, १२. संठाणा, १३. अद्दा, १४. पुणव्वसू, १५. पुस्से, १६. अस्सेसा, १७. महा, १८. पुव्वाफग्गुणी, १९. उत्तराफग्गुणी, २०. हत्थे, २१. चित्ता, २२. साई, २३. विसाहा, २४. अणुराहा, २५. जेट्ठा, २६. मूले, २७. पुव्वासाढा, २८. उत्तरासाढा ।

ख. जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ ।

गाहाओ :

१. णक्खत्तसंवच्छरलक्खणं :

समगं णक्खत्ता जोयं जोएंति, समगं उडू परिणमंति ।।
नच्चुण्हं नाइसीए, बहु उदए होइ नक्खत्ते ।। १ ।।

२. चंदसंवच्छरलक्खणं :--

ससि समग पुण्णमासिं, जोइं ता विसमचारि णक्खत्ता ।।
कडुओ बहु उदगवओ, तमाहु संवच्छरं चंदं ।। २ ।।

३. उडु (कम्म) संवच्छरलक्खणं :—

विसमं पवालिणो परिणमंति, अणउसु विंति पुप्फफलं ।।
वासं न सम्म वासइ, तमाहु संवच्छरं कम्मं ।। ३ ।।

४. आइच्चसंवच्छरलक्खणं :—

पुढवि-दगाणं च रसं, पुप्फ-फलाणं च देइ आइच्चे ।।
अप्पेण वि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सस्सं ।। ४ ।।

५. अभिवड्ढियसंवच्छरलक्खणं :—

आइच्चतेयतविया, खण-लव-दिवसा उऊ परिणमंति ।।
पूरेइ रेणु-थलयाइं, तमाहु अभिवड्ढिय जाण[२] ।। ५ ।।

---

१. ठाणं. ५, उ. ३, सु. ४६०

२. ठाणं. ५, उ. ३, सु. ४६०

दशम प्राभृत

[इक्कीसवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं दाराइं—

५९. प. ता कहं ते जोइसस्स दारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्तीओ, तंजहा

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

४. ता अस्सिणीयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५. ता भरणीयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु ।

१. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु —

(क) ता कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—

१. कत्तिया, २. रोहिणी, ३, संठाणा, ४. अद्दा, ५. पुणव्वसू, ६. पुस्सो, ७. अस्सिलेसा ।

(ख) महादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—

१. महा, २. पुव्वाफग्गुणी, ३. उत्तराफग्गुणी, ४. हत्थो, ५. चित्ता, ६. साई, ७. विसाहा,

(ग) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा

१. अणुराधा, २. जेट्ठा, ३. मूलो, ४. पुव्वासाढा, ५. उत्तरासाढा, ६. अभीइ, ७. सवणो,

(घ) धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा

१. धणिट्ठा, २. सतभिसया, ३. पुव्वापोट्ठवया, ४. उत्तरापोट्ठवया, ५. रेवई, ६.

अस्सिणी, ७. भरणी ।[1]

२. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु

(क) ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—

१. महा, २. पुव्वाफग्गुणी, ३. उत्तराफग्गुणी, ४. हत्थो, ५. चित्ता, ६. साती, ७. विसाहा

(ख) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—

१. अणुराधा, २. जेट्ठा, ३. मूले, ४. पुव्वासाढा, ५. उत्तरासाढा, ६. अभिई, ७. सवणे,

(ग) धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा

१. धणिट्ठा, २. सतभिसया, ३. पुव्वापोट्ठवया, ४. उत्तरापोट्ठवया, ५. रेवई, ६. अस्सिणी, ७. भरणी,

(घ) कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—

१. कत्तिया, २. रोहिणी, ३. संठाणा, ४. अद्दा, ५. पुणव्वसू, ६. पुस्सो, ७. अस्सेसा,

३. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(क) ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तंजहा—

१. धणिट्ठा, २. सतभिसया, ३. पुव्वापोट्ठवया, ४. उत्तरापोट्ठवया, ५. रेवई, ६. अस्सिणी, ७. भरणी,[1]

(ख) कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—

१. कत्तिया, २. रोहिणी, ३. संठाणा, ४. अद्दा, ५. पुणव्वसू, ६. पुस्सो, ७. अस्सेसा,

(ग) महादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा

१. महा, २. पुव्वाफग्गुणी, ३. उत्तराफग्गुणी, ४. हत्थो, ५. चित्ता, ६. साई, ७. विसाहा,

(घ) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा

१. अणुराहा, २. जेट्ठा, ३. मूलो, ४. पुव्वासाढा, ५. उत्तरासाढा, ६. अभीयी, ७. सवणो ।

---

१. (क) कत्तियाईया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता,
(ख) महाईया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता,
(ग) अणुराहाईया सत्त णक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता,
(घ) धणिट्ठाइया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता । — सम. स. ७, सु. ८, ९, १०, ११

ये समवायांग के जो सूत्र यहाँ दिये गये हैं वे अन्य मान्यता के सूचक हैं किन्तु इन सूत्रों में ऐसा कोई वाक्य नहीं है जिससे सामान्य पाठक इन सूत्रों को अन्य मान्यता के जान सके । यद्यपि जैनागमों में नक्षत्र-मण्डल का प्रथम नक्षत्र अभिजित् है और अन्तिम नक्षत्र उत्तराषाढा है, पर इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न कालों में परिवर्तित नक्षत्रमण्डलों के भिन्न-भिन्न क्रमों का परिज्ञान आगमों के स्वाध्याय के बिना कैसे सम्भव हो ?

४. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(क) ता अस्सिणी, आवीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एते एवमाहंसु, तंजहा—
१. अस्सिणी, २. भरणी, ३. कत्तिया, ४. रोहिणी, ५. संठाणा, ६. अद्दा, ७. पुणव्वसू,

(ख) पुस्सावीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. पुस्सो, २. अस्सेसा, ३. महा, ४. पुव्वाफग्गुणी, ५. उत्तराफग्गुणी, ६. हत्थो, ७. चित्ता,

(ग) साइयाइया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. साती, २. विसाहा, ३. अणराहा, ४. जेट्ठा, ५. मूलो, ६. पुव्वासाढा, ७. उत्तरासाढा,

(घ) अभिइयाविया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. अभिई, २. सवणो, ३. धणिट्ठा, ४. सतभिसया, ५. पुव्वभद्दवया, ६. उत्तरभद्दवया, ७. रेवई,

५. तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(क) ता भरणियावीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—
१. भरणी, २. कत्तिया, ३. रोहिणी, ४. संठाणा, ५. अद्दा, ६. पुणव्वसू, ७. पुस्सो,

(ख) अस्सेसावीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा -
१. अस्सेसा, २. महा, ३. पुव्वाफग्गुणी, ४. उत्तराफग्गुणी, ५. हत्थो, ६. चित्ता, ७. साई,

(ग) विसाहावीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. विसाहा, २. अणुराहा, ३. जेट्ठा, ४. मूलो, ५. पुव्वासाढा, ६. उत्तरासाढा, ७. अभिई,

(घ) सवणावीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा -
१. सवणो, २. धणिट्ठा, ३. सतभिसया, ४. पुव्वापोट्ठवया, ५. उत्तरापोट्ठवया, ६. रेवई, ७. अस्सिणी।

वयं पुण एवं वयामो—

(क) ता अभीइयावीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, तंजहा -
१. अभिई, २. सवणो, ३. धणिट्ठा, ४. सतभिसया, ५. पुव्वापोट्ठवया, ६. उत्तरापोट्ठवया, ७. रेवई,

(ख) अस्सिणीआवीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१. अस्सिणी, २. भरणी, ३. कत्तिया, ४. रोहिणी, ५. संठाणा, ६. अद्दा, ७. पुणव्वसू,

दशम प्राभृत

[बावीसवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं सरूवपरूवणं–

६०. प. ता कहं ते णक्खत्तविजए ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए जाव एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, सोलससहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

क. ता जंबुद्दीवे णं दीवे—

दो चंदा १. पभासेंसु वा, २. पभासेंति वा, ३. पभासिस्संति वा,

ख. दो सूरिया, १. तविंसु वा, २. तवेंति वा, ३. तविस्संति वा,

ग. छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं १. जोएंसु वा, २. जोएंति वा, ३. जोइस्संति वा, तंजहा—

१. दो अभीई, २. दो सवणा, ३. दो धणिट्ठा, ४. सतभिसया, ५. दो पुव्वापोट्ठवया, ६. दो उत्तरापोट्ठवया, ७. दो रेवई, ८. दो अस्सिणी, ९. दो भरणी, १० दो कत्तिया, ११. दो रोहिणी, १२. दो संठाणा, १३. दो अद्दा, १४. दो पुणव्वसू, १५. दो पुस्सा, १६. दो अस्सेसाओ, १७. दो महाओ, १८. दो पुव्वाफग्गुणी, १९. दो उत्तराफग्गुणी, २०. दो हत्था, २१. दो चित्ता, २२. दो साई, २३. दो विसाहा, २४. दो अणुराधा, २५. दो जेट्ठा, २६. दो मूला, २७. दो पुव्वासाढा, २८. दो उत्तरासाढा ।

ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

क. अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

ख. अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

ग. अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

घ. अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

प. क. ता एएसि छप्पण्णाए णक्खत्ताणं -

कयरे णक्खत्ता जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?

ख. कयरे णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?

ग. कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?

घ. कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?

उ. क. ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, ते णं दो अभीई,

ख. तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा—

१. दो सतभिसया, २. दो भरणी, ३. दो अद्दा, ४. दो अस्सेसा, ५. दो सातो, ६. दो जेट्ठा।

ग. तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति, ते णं तीसं, तंजहा —

१. दो सवणा, २. दो धणिट्ठा, ३. दो पुव्वाभद्दवया, ४. दो रेवई, ५. दो अस्सिणी, ६. दो कत्तीया, ७. दो संठाणा, ८. दो पुस्सा, ९. दो महा, १०. दो पुव्वाफग्गुणी, ११. दो हत्था, १२. दो चित्ता, १३. दो अणुराधा, १४. दो मूला, १५. दो पुव्वासाढा,

घ. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति ते णं बारस, तं जहा —

१. दो उत्तरापोट्ठवया, २. दो रोहिणी, ३. दो पुणव्वसू, ४. दो उत्तराफग्गुणी, ५. दो विसाहा, ६. दो उत्तरासाढा।

क. ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

अत्थि णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोगं जोएंति, ते णं दो अभीयी,

ख. अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते, एगवीसं च मुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोगं जोएंति,

ग. अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएंति,

घ. अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिन्नि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएंति।

प. क. ता एएसि णं णक्खत्ताणं—

कयरे णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोगं जोएंति ?

ख. कयरे णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एगवीसं च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोगं जोएंति ?

ग. कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोगं जोएंति ?

घ. कयरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते, तिन्नि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोगं जोएंति ?

उ. क. ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएंति, ते णं दो अभीई,

ख. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते, एगवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएंति, *ते णं बारस तंजहा*—

१. दो सतभिसया, २. दो भरणी, ३. दो अद्दा, ४. दो अस्सेसा, ५. दो साती, ६. दो जेट्ठा,

ग. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएंति, ते णं तीसं, तंजहा—

१. दो सवणा, २. दो धणिट्ठा, ३. दो पुव्वाभद्दवया, ४. दो रेवती, ५. दो अस्सिणी, ६. दो कत्तिया, ७. दो संठाणा, ८. दो पुस्सा, ९. दो महा, १०. दो पुव्वाफग्गुणी, ११. दो हत्था, १२. दो चित्ता, १३. दो अणुराधा, १४. दो मूला, १५. दो पुव्वासाढा,

घ. तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा—

१. दो उत्तराभद्दवया, २. दो रोहिणी, ३. दो पुणव्वसू, ४. दो उत्तराफग्गुणी ५. दो विसाहा, ६. दो उत्तरासाढा।

णक्खत्तमंडलाणं सीमाविक्खंभो

६१. प. ता कहं ते सीमाविक्खंभे ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. क. ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

अत्थि णक्खत्ता, जेसिं णं छ सया तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो,

ख. अत्थि णक्खत्ता, जेसिं णं सहस्सं पंचोत्तरं सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो

ग. अत्थि णक्खत्ता जेसिं णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो,

घ. अत्थि णक्खत्ता जेसिं णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो,

प. क. ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

कयरे णक्खत्ता जेसिं णं छसया, तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो ?

ख. कयरे णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचोत्तरं सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो ?

ग. कयरे णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा वसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो ?

घ. कयरे णक्खत्ता जेसि णं तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाणं सीमा-विक्खंभो ?

उ. क. ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं —

तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं छ सया तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे णं सीमा-विक्खंभो, ते णं दो अभिई ।

ख. तत्थ जे ते णक्खत्ता, जेसि णं सहस्सं पंचुत्तरं सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे णं सीमा-विक्खंभो, ते णं बारस, तंजहा—

१. दो सतभिसया, २. दो भरणी, ३. दो अद्दा, ४. दो अस्सेसा, ५. दो साती, ६. दो जेट्ठा ।

ग. तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा वसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे णं सीमाविक्खंभो, ते णं तीसं, तंजहा—

१. दो सवणा, २. दो धणिट्ठा, ३. दो पुव्वाभद्दवया, ४. दो रेवई, ५. दो अस्सिणी, ६. दो कत्तिया, ७. दो संठाणा, ८. दो पुस्सा, ९. दो महा, १०. दो पुव्वाफग्गुणी, ११. दो हत्था, १२. दो चित्ता, १३. दो अणुराहा, १४. दो मूला, १५. दो पुव्वासाढा,

घ. तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे णं सीमाविक्खंभो, ते णं बारस, तंजहा—

१. दो उत्तरापोट्ठवया, २. दो रोहिणी, ३. दो पुणव्वसू, ४. दो उत्तराफग्गुणी, ५. दो विसाहा, ६. दो उत्तरासाढा,

णक्खत्ताणं चंदेण जोगो

६२. प. क. ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

किं सया पादो चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति ?

ख. ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं —

किं सया सायं चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति ?

ग. ता एएसिणं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

किं सया दुहा पविसिय पविसिय चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति ?

उ. क. ता एएसिणं छण्णवणाए णक्खत्ताणं—
न किं पि तं जं सया पावो चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति,
ख. न सया सायं चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति,
ग. न सया दुहओ पविसित्ता पविसित्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति, णण्णत्थ दोहिं अभिईहिं ।
ता एएणं दो अभिई पायंचिय पायंचिय चोत्तालीसं चोत्तालीसं अमावासं जोएंति णो चेव णं पुण्णमासिणिं ।

चंदस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो

६३. तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासीओ बावट्ठिं अमावासाओ पण्णत्ताओ,

१. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताए तेणं पुण्णिमासिणिट्ठाणाए[1] मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता बेत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

२. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. जंसि णं देसंसि चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ताए तेणं पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

३. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. जंसि णं देसंसि चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ ताए ते णं पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

४. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. जंसि णं देसंसि चंदे तच्चं पुण्णमासिणिं जोएइ ता पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दोण्णि अट्ठासीए भागसए[2] उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

---

१. तस्मात्पूर्णमासीस्थानात्-चरमद्वाषष्टितम-
पौर्णमासीपरिसमाप्तिस्थानात् परतो मण्डलं,
चतुर्विंशत्यधिकेन शतेन छित्वा विभज्य ॥

२. "दोण्णि अट्ठासीए भागसए" त्ति,
तृतीयस्याः पौर्णमास्याः परतो द्वादशी किल पौर्णमासी नवमी भवति,
ततो नवभिर्द्वात्रिंशतो गुणने द्वे शते अष्टाशीत्यधिके भवतः ।

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि तंसि देसंसि तं तं पुण्णिमासिणिं चंदे जोएइ ।

५. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईण-पडिणायताए उदीण-दाहिणयताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सए णं छेत्ता दाहिणंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता, अट्ठावीसइ भागे वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं य कलाहिं पच्चत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थणं चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ ।[1]

सूरस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो

६४. १. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ ।

२. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दो चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

३. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं

---

१. "जंबुद्दीवस्स णमित्यादि"

जम्बूद्वीपस्य णमिति वाक्यालंकारे द्वीपस्योपरि प्राचीना प्राचीनतया,

इह प्राचीनग्रहणेनोत्तरपूर्वा (ईशान) गृह्यते, अप्राचीनग्रहणेन दक्षिणापरा, (नैऋत्य) ।

ततोऽयमर्थः पूर्वोत्तर-दक्षिणापरायतया, एवमुदीचि-दक्षिणायतया, पूर्व-दक्षिणोत्तरापरायतया जीवया प्रत्यंचया दवरिकया इत्यर्थः,

मण्डलं चतुर्विंशेन-चतुर्विंशत्यधिकेन शतेन छित्वा विभज्य भूयश्चतुर्भिर्विभज्यते,

ततो दाक्षिणात्ये चतुर्भागमण्डले एकत्रिंशद्भागप्रमाणं सप्तविंशतिभागानुपादायाष्टाविंशतितमं च भागं विंशतिधा छित्वा तद्गतानष्टादश—

भागानुपादाय शेषैस्त्रिभिर्भागैश्चतुर्थस्य भागस्य द्वाभ्यां कलाभ्यां,

पाश्चात्यं चतुर्भागमण्डलमसंप्राप्तः अस्मिन् प्रदेशे चन्द्रो द्वाषष्टितमां चरमां पौर्णिमासीं परिसमापयति ।

—टीका

चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

४. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता अट्ठछत्ताले भागसए[1] उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरिए दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता चउणवइं चउणवइं भागे उवाइणावेत्ता[2], तंसि तंसि णं देसंसि तं तं पुण्णिमासिं ण सूरे जोएइ,

५. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईण-पडिणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागं वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं सूरिए चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएइ ।

चंदस्य अमावासासु जोगो

६५. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ ताए अमावासट्ठाए मंडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएइ,

---

१. "अट्ठछत्ताले भागसए" त्ति,
तृतीयस्या पौर्णमास्याः परतो द्वादशी किल पौर्णमासी नवमी,
ततश्चतुर्नवतिर्नवभिर्गुण्यते, जातान्यष्टौ शतानि षट्चत्वारिंशदधिकानि ।

२. पाश्चात्ययुगचरमद्वाषष्टितमपौर्णमासीपरिसमाप्तिनिबन्धनात्
स्थानात् परतो मण्डलस्य चतुर्विंशत्यधिकं रातं प्रविभक्तस्य सत्कानां
चतुर्नवतिचतुर्नवतिभागानामतिक्रमे तस्याः तस्याः पौर्णमास्याः
परिसमाप्तिः, ततश्चतुर्नवतिर्द्विषष्ट्या गुण्यते, जातान्यष्टा—
पंचाशच्छतानि अष्टाविंशत्यधिकानि, तेषां चतुर्विंशत्यधिकेन शतेन भागो ह्रियते लब्धाः
सप्तचत्वारिंशत्सकलमण्डलपरावर्ताः । —टीका

एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णिमासिणीओ भणिआओ तेणेव अभिलावेणं अमावासाओ भाणियव्वाओ, तंजहा—बिइया, तइया, दुवालसमी।[1]

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए अमावासाठाणाए मंडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता बत्तीसं बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि तंसि देसंसि तं तं अमावासं चंदेण जोएइ,

प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएंति, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता सोलस भागे ओसक्कावइत्ता, एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ।

सूरस्स अमावासासु जोगो

६६. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ, ताए अमावाससंठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउइभागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे पढमं अमावासं जोएइ,

एवं जेणेव अभिलावेणं सूरियस्स पुण्णिमासिणीओ तेणेव अभिलावेणं अमावासाओ भणियव्वाओ, तंजहा—बिइया, तइया, दुवालसमी।[2]

---

१. "एवमित्यादि" एवमुक्तप्रकारेण येनैवाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्यो भणितास्तेनैवाभिलापेनामावास्या अपि भणितव्याः, तद्यथा—द्वितीया, तृतीया, द्वादशी च ताश्चैवम्।

प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि चंदे पढमं अमावासं जोएइ, ताओ णं अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउवीसेणं सएण छेत्ता, बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे दोच्च अमावासं जोएइ,

प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि ण देसंसि चंदे दोच्चं अमावासं जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता, बत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से चंदे तच्चं अमावासं जोएइ,

प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि चंदे अमावास जोएइ, ताओ ण अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता, दोण्णि अट्ठासीए भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ णं चंदे दुवालसमं अमावासं जोएइ,

२. एवमित्यादि एवमुक्तेन प्रकारेण तेनैवाभिलापेन सूर्यस्य पौर्णमास्य उक्तास्तेनैवाभिलापेनामावास्या अपि वक्तव्याः, तद्यथा—द्वितीया, तृतीया द्वादशी च ताश्चैवम्।

प. एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे पढमं अमावासं जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउवीसेणं सएणं छेत्ता चउणउई भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं सूरे दोच्चं अमावासं जोएइ,

प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएए ?

उ. ता जंसि णं देसंसि दोच्च अमावासं जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउइ भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं सूरे तच्चं अमावासं जोएइ,

प. ता एएसिणं पचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे तच्चं अमावासं जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता अट्ठ छत्ताले भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे दुवालसमं अमावासं जोएइ।

एवं खलु एएणं उवाएणं ताए ताए अमावासट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता, चउणउइं चउणउइं भागे उवाइणावेत्ता तंसि तंसि देसंसि तं तं अमावासं सूरिए जोएइ।

प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मंडलं चउव्वीसे णं सएणं छेत्ता सत्तालीसं भागे ओसक्कावइत्ता, एत्थ णं से सूरिए चरिमं बावट्ठिं अमामासं जोएइ।

पुण्णिमासिणिसु चंदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताणं जोगो

६७. १. क. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता धणिट्ठाहिं, धणिट्ठाणं तिण्णि मुहुत्ता एगूणवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता एगट्ठि चुण्णिया भागा सेसा,

ख. प. तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुव्वफग्गुणीहिं, पुव्वफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा।

२. क. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं पोट्ठवयाहिं, उत्तराणं पोट्ठवयाणं सत्तावीसं मुहुत्ता चोद्दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णिया भागासेसा,

ख. प. तं समयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराफग्गुणीणं सत्तमुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, एक्कवीसं चुण्णिया भागा सेसा।

३. क. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीणं एक्कवीसं मुहुत्ता णव य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा,

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, तीसं चुण्णियाभागा सेसा।

४. क. प. ता एएसिणं, पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं च आसाढाणं छवीसं मुहुत्ता छवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा,

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णियाभागा सेसा।

५. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुस्से णं पुस्सस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेतीसं चुण्णिया भागा सेसा।

अमावासासु चंदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताणं जोगो

६८. १. क. प. एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता अस्सेसाहिं चेव अस्सेसाणं एक्कं मुहुत्तं चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता अस्सेसाहिं चेव अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा।

२. क. प. ताएएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, पण्णट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं उत्तराणं फग्गुणीणं जहेव चंदस्स।

३. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता हत्थेणं चेव हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता हत्थेणं चेव हत्थस्स जहेव चंदस्स।

४. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

दुहओऽवि चंदा जुत्ता जोगेहिं,
दुहओऽवि सूरा जुत्ता जोगेहिं,
दुहओऽवि गहा जुत्ता जोगेहिं,
दुहओऽवि णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं ।
मंडलं तयसहस्सेणं अट्ठाणउईए सएहिं छेत्ता इच्चेस णक्खत्ते खेत्तपरिभागे,
णक्खत्तविजए पाहुडे, त्ति बेमि ।

ग्यारहवां प्राभृत

संवच्छरं संवच्छराणं, [illegible] चंद-सूराण-णक्खत्तसंजोगकालं च

७१. क. १. प. ता कहं ते संवच्छराणावी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरे पण्णत्ते तं जहा—१. चंदे, २. चंदे, ३. अभिवड्ढिए, ४. चंदे, ५. अभिवड्ढिए ।

पढमं चंदसंवच्छरं

ख. १. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ग. प. ता से णं किं पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, अणंतरपच्छाकडे समए ।

घ. प. तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता, छ वीसं च बासट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छित्ता चउप्पणं चुण्णिया भागा सेसा ।

ङ. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता, अट्ठ य बासट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

बितियं चंदसंवच्छरं

क. २. प. ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ख. प. ता से णं किं पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स आदी, से णं दोच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

ग. प. तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाणं आसाढाणं सत्त मुहुत्ता, तेवण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता इगतालीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

घ. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा ।

तत्तियं अभिवड्ढियं संवच्छरं

क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ख. प. ता से णं किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

ग. प. तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं तेरसमुहुत्ता, तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्तावीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

घ. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता, छप्पण्णं बावट्ठिभागा, मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ।

चउत्थं चंदसंवच्छरं

क. ४. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ख. प. ता से णं किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं चरिमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी, से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

ग. प. तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चत्तालीसं मुहुत्ता, चत्तालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउसट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ।

घ. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुस्स अउणतीसं मुहुत्ता, एक्कवीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सितालीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

पंचमं अभिवड्ढियं संवच्छरं

क. ५. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ख. प. सा से णं किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

ता जे णं पढमस्स संवच्छरस्स आदी से णं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

ग. प. तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए ।

घ. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुस्सेणं, पुस्सस्स णं एक्कवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

❖❖

बारहवां प्राभृत

पंचण्हं संवच्छराणं, मासाणं च राइंदिय-मुहुत्तप्पमाणं

७२. क. १ प. ता कति णं संवच्छरा ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता तं जहा—१. णक्खत्ते, २. चंदे, ३. उडू, ४. आइच्चे, ५. अभिवड्ढिए ।

पढमं णक्खत्त-संवच्छरं

ख. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स णक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसइ मुहुत्तेणं तीसइ मुहुत्तेणं अहोरत्तेणं मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता सत्तावीसं राइंदियाइं एक्कवीसं च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं, आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. ता अट्ठसए एगूणवीसे मुहुत्ताणं, सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं, आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता एएसि णं अट्ठा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिएत्ति वएज्जा ।

उ. ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसए एक्कावन्नं च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ङ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता णव मुहुत्तसहस्सा अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पन्नं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा ।

बितियं चंदसंवच्छर

२ क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स चंदे मासे तीसइमुहुत्ते णं तीसइमुहुत्ते णं अहोरत्तेणं मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एगूणतीसं राइंदियाइं बत्तीसं बासट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ख. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता अट्ठपंचासए मुहुत्ते तेत्तीसं बासट्ठिभागा मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प. ता एस णं अद्धा दुवालसमुत्तकडा चंदे संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तिन्नि चउप्पन्ने राइंदियसए दुवालस य बासट्ठिभागा राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता बसमुहुत्तसहस्साइं छच्च पणवीसे मुहुत्तसए पण्णासं च बासट्ठिभागे मुहुत्ते णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ततियं उडुसंवच्छरं

३. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसइ मुहुत्ते णं, तीसइ मुहुत्ते णं मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तीसं राइंदियाणं राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ख. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता णवमुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प. ता एस णं अद्धा दुवालसमुत्तकडा उडू संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तिण्णि सट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता बसमुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य सयाइं मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

चउत्थं आइच्चसंवच्छरं

४. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसइमुहुत्ते णं, तीसइमुहुत्ते णं अहोरत्तेणं मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तीसं राइंदियाइं अवड्ढभागं च राइंदियस्स राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ख. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प. ता एस णं अद्धा दुवालसमुत्तकडा आदिच्चे संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तिन्नि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता दसमुहुत्तस्स सहस्साइं णव असोए मुहुत्तसए मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा ।

पंचम अभिवड्ढियसंवच्छरं

५. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स अभिवड्ढिए मासे तीसइमुहुत्तेणं, तीसइमुहुत्ते णं अहोरत्ते णं भिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एगतीसं राइंदियाइं एगूणतीसं च मुहुत्ता सत्तरस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ख. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसए सत्तरस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प. ता एस णं अद्धा दुवालससुत्तकडा अभिवड्ढियसंवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तिण्णि तेसीए राइंदियसए एक्कतीसं च मुहुत्ता अट्ठारस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

घ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एक्कारसमुहुत्तसहस्साइं पंच य एक्कारसमुहुत्तसए अट्ठारस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

एगस्स जुगस्स अहोरत्त-मुहुत्तप्पमाणं

७३. क. प. ता केवइयं ते नो-जुगे राइंदियग्गेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता सत्तरस एकाणउए राइंदियसए, एगूणवीसं च मुहुत्त, सत्तावण्णं बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपन्नं चुण्णिया भागे राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा ।

ख. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता तेवण्णमुहुत्तसहस्साइं, सत्त य अउणापन्ने मुहुत्तसए, सत्तावण्णं बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपण्णं चुण्णिया भागा मुहुत्ते णं, आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प. ता केवइए णं ते जगपत्ते राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता, चत्तारि य बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठि-भागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागे राइंदियग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

घ. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसए, चत्तारि य बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागे मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

ङ. प. ता केवइयं जुगे राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता अट्ठारस तीसे राइंदियसए राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा,

च. प. ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता चउप्पण्णं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

छ. प. ता से णं केवइए बासट्ठिभागं मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता चोत्तीसं सयसहस्साइं अट्ठावीसं च बासट्ठिभागमुहुत्तसए बासट्ठिभाग मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

पंचण्हं संवच्छराणं पारंभ-पज्जवसाणकालस्स समत्तपरूवणं

७४. १ क. प. ता कया णं एए आदिच्च-चंद संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता सट्ठि एए आदिच्चमासा बासट्ठि एए य चंदमासा।

एस णं अद्धा छक्खुत्तकडा दुवालसभयिता तीसं एए आदिच्चसंवच्छरा, एक्कतीसं एए चंदसंवच्छरा,

तया णं एए आदिच्च-चंद-संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिए त्ति वएज्जा।

ख. प. ता कया णं एए आदिच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता-संवच्छरा समादीया, समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता सट्ठि एए आदिच्चा मासा, एगट्ठि एए उडुमासा, बासट्ठि एए चंदमासा, सत्तट्ठि एए णक्खत्तमासा।

एस णं अद्धा दुवालस खुत्तकडा दुवालसभयिता सट्ठि एए आइच्चा संवच्छरा, एगट्ठि एए उडु संवच्छरा, बासट्ठि एए चंदा संवच्छरा, सत्तट्ठि एए णक्खत्ता संवच्छरा।

तया णं एए आइच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समावीया, समपज्जवसिया, आहिए त्ति वएज्जा ।

ग. प. ता कया णं एए अभिवड्ढिअ-आदिच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समावीया समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता सत्तावण्णं मासा, सत्त य अहोरत्ता, एक्कारस य मुहुत्ता, तेवीसं बासट्ठि भागा-मुहुत्तस्स एए अभिवड्ढिया मासा, सट्ठि एए आइच्चामासा, एगट्ठि एए उडुमासा बासट्ठि एए चंदमासा सत्तट्ठि एए णक्खत्त मासा ।

एस णं अद्धा छप्पण्ण-सयखुत्तकडा बुद्धालस भयिता

सत्त सया चोयाला, एए णं अभिवड्ढिया संवच्छरा,

सत्तसया असीया, एए णं आइच्चा संवच्छरा,

सत्तसया तेणउया, एए णं उडु संवच्छरा,

अट्ठसत्ता छल्लुत्तरा, एए णं चंदा संवच्छरा,

एकसत्तरी अट्ठसया, एए णं णक्खत्ता संवच्छरा ।

तया णं एए अभिवड्ढिअ-आइच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समावीया समपज्ज-वसिया, आहिए त्ति वएज्जा ।

२. ता णयट्ठमाए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए, बुद्धालस य बासट्ठिभागे राइंदियस्स, आहिए त्ति वएज्जा ।

३. ता अहातच्चे णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए, पंच य मुहुत्ते पण्णासं च बासट्ठि भागे मुहुत्तस्स, आहिए त्ति वएज्जा ।

उडूणं णामाइं कालप्पमाणं च

७५. तत्थ खलु इमे छ उडू पण्णत्ता, तंजहा—१. पाउसे, २. वरिसारत्ते, ३. सरते, ४. हेमंते, ५. वसंते, ६. गिम्हे ।[1]

ता सव्वे वि णं एए चंद-उडू दुवे दुवे मासा तिचउप्पण्णसएणं तिचउप्पण्णसएणं आयाणेणं गणिज्जमाणा साइरेगाइं एगूणसट्ठि एगूणसट्ठि राइंदियाइं राइंदियग्गेणं[2] आहिए त्ति वएज्जा ।

अधम-अइरित्तरत्ताणं संखा त हेउं च

तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तंजहा—१. तइए पव्वे, २. सत्तमे पव्वे, ३. एक्कारसमे पव्वे, ४. पण्णरसमे पव्वे, ५. एगूणवीसइमे पव्वे, ६. तेवीसइमे पव्वे ।

---

१. ठाणं, ६, सु. ५२६

१. चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठि राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ता ।

तत्थ खलु इमे छ अतिरत्ता पण्णत्ता, तंजहा -

१. चउत्थे पव्वे, २. अट्ठमे पव्वे, ३. बारसमे पव्वे, ४. सोलसमे पव्वे, ५. वीसइमे पव्वे, ६. चउवीसइमे पव्वे।[1]

गाहा—

छच्चेव य अइरत्ता, आइच्चाओ हवंति माणाइं।

छच्चेव ओमरत्ता, चंदाहिं हवंति माणाइं ॥१॥

वासिक्कियासु आउट्टियासु चंदेण सूरेण य णक्खत्त जोगकालो

७६. तत्थ खलु इमाओ पंचवासिकीओ, पंच हेमंतीओ आउट्टीओ पण्णत्ताओ।

१ क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता अभिइणा अभिइस्स पढमसएणं।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा।

२. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता संठाणाहिं, संठाणाणं एक्कारस मुहुत्ते, एगूणतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेपण्णं चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पूसे णं, पूसस्स णं तं चेव, जं पढमाए।

३. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता विसाहाहिं, विसाहा णं तेरस मुहुत्ता, चउप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता, चत्तालीसं चुण्णिया भागा सेसा।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पूसे णं, पूसस्स णं तं चेव, जं पढमाए।

४. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं च चउत्थं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

---

1. क. पर्वणि-पक्षे। यहाँ पर्व-पक्ष का पर्यायवाची है।

ख. ठाणं ६, सु. ५२४

उ. ता रेवईहिं, रेवईणं पगवीसं मुहुत्ता बत्तीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुसे णं, पुसस्स णं तं चेव, जं पढमाए ।

५. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं च पंचमं वासिकं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्ते णं जोएइ ?

उ. ता पुव्वाहिं फग्गुणीहिं पुव्वाफग्गुणीणं बारसमुहुत्ता सत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेरस चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुसेणं, पुसस्स तं णं चेव, जं पढमाए ।

हेमंतियासु आवट्टियासु चंदेण सूरेण य णक्खत्तजोगकालो

७७. १. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं हेमंति-आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता हत्थेण, हत्थस्स णं पंचमुहुत्ता पण्णासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ।

२. क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता सतभिसयाहिं, सतभिसयाणं दुन्नि मुहुत्ता अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तालीसं च चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोइए ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ।

३. क. प. एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता पुसे णं, पुसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं च चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं णोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ।

४. क. प. एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता मूलेणं, मूलस्स छ मुहुत्ता, अट्ठावन्नं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं, चरिमसमए,

५ क. प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारस मुहुत्ता, छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छ चुण्णिया भागा सेसा ।

ख. प. तं समयं च सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ।

जोगाणं चंदेण सद्धिं जोग-परूवणं

७८. तत्थ खलु इमे दसविहे जाए पण्णत्ते, तंजहा

१. वसभाणु जोए, २. वेणुयाणु जोए

३. मंडे जोए, ४. मंचाइमंचे जोए

५. छत्ते जोए, ६. छत्ताइ छत्ते जोए

७. जमणद्धे जोए, ८. धणसंमद्दे जोए

९. पीणिए जोए, १०. मंडुकप्पुते जोए

१ प. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं छत्ताइच्छत्तं जोयं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ?

उ. ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स,

पाईण-पडिणोआयताए, उदीण-दाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छित्ता दाहिण-पुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागं वीसया छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहिं दाहिण-पुरत्थिमिल्लं चउभागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं से चंदे छत्ताइच्छत्तं जोयं जोइए ।

उप्पिं चंदो, मज्झे णक्खत्ते, हेट्ठा आइच्चे ।

२ प. तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ. ता चित्ताहिं चरमसमए ।

तेरहवां प्राभृत

चंदमसोवड्ढोऽवड्ढी

७९. प. ता कहं ते चंदमसो वड्ढोऽवड्ढी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता अट्ठ पंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स ।

क. ता दोसिणापक्खाओ अंधगारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायालसए, छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जइ, तंजहा

पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं,

चरिमसमए चंदे रत्ते भवइ,

अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्णं अमावासा, एत्थ णं पढमे पव्वे अमावासे ता अंधगारपक्खो,

ख. ता णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारे बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जइ, तंजहा -

पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमसमए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेससमए रत्ते य, विरत्ते य भवइ,

इयण्णं पुण्णमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी ।

एगयुगे पुण्णिमासिणीओ अमावासो

८०. तत्थ खलु इमाओ बावट्ठि पुण्णिमासिणीओ बावट्ठि अमावासाओ पण्णत्ताओ,

बावट्ठिं एते कसिणा रागा,

बावट्ठिं एते कसिणा विरागा,

एते चउव्वीसे पव्वसए,

एते चउव्वीसे कसिण-राग-विरागसए,

आवइयाणं पंचण्हं संवच्छराणं समया एगे णं चउव्वीसेणं समयसएगुणगा,

एवइया परित्ता असंखेज्जा देस-राग-विराग समा भवंतीतिमक्खाया,

ता अमावासाओ णं पुण्णिमासिणी चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ णं अमावासा चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता अमावासाओ णं अमावासा अट्ठपंचासीए मुहुत्तसए तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ णं पुण्णिमासिणी अट्ठ पंचासीए मुहुत्तसए तीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

एस णं एवइए चंदे मासे,

एस णं एवइए सगले जुगे।

चंदाइच्च अद्धमासे चंदाइच्चाणं मंडलचारं

८१. क. प. ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता चउद्दस चउब्भागमंडलाइं चरइ एगं च चउवीससयभागं मंडलस्स।

ख. प. ता आइच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता सोलस मंडलाइं चरइ, सोलसमंडलचारी तया अवराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ।

ग. प. कयराइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ ?

उ. इमाइं खलु ते दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ तं जहा

१. निक्खममाणे चेव अमावासंते णं,

२. पविसमाणे चेव पुण्णिमासिंतेणं,

एयाइं खलु दुवे अट्ठगाइं जाइं चंदे केणई असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ।

पढमे चंदायणे

ता पढमा पढमायणगए चंदे दाहिणगए भागाए पविसमाणे सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

प. कयराइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे, चारं चरइ ?

उ. इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तं जहा

१. बिइए अद्धमंडले, २. चउत्थे अद्धमंडले,
३. छट्ठे अद्धमंडले, ४. अट्ठमे अद्धमंडले,
५. दसमे अद्धमंडले, ६. बारसमे अद्धमंडले,
७. चउद्दसमे अद्धमंडले ।

एयाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

सा पढमायणगए चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ।

प. कयराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ?

उ. इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तंजहा—

१. तईए अद्धमंडले, २. पंचमे अद्धमंडले,
३. सत्तमे अद्धमंडले, ४. नवमे अद्धमंडले,
५. एक्कारसमे अद्धमंडले, ६. तेरसमे अद्धमंडले
पण्णरसमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं,

एताइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

एयावया च पढमे चंदायणे समत्ते भवइ ।

बीच्चे चंदायणे

ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चंदे अद्धमासे,
चंदे अद्धमासे नो णक्खत्ते अद्धमासे,

प. ता णक्खत्ताओ अद्धमासाओ ते चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमधियं चरइ ?

उ. ता एगं अद्धमंडलं चरइ, चत्तारि य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं एगतीसाए छेत्ता णव भागाइं,

ता दोच्चायणगए चंदे पुरच्छिमाए भागाए णिक्खममाणे सत्त चउप्पणाइं जाइं चंदे परस्स चिन्नं पडिचरइ, सत्त तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणा चिण्णं चरइ,

ता दोच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए णिक्खममाणे छ चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, छ तेरसगाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरइ,

अवरगाइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

प. कयराइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णागयाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ ?

उ. इमाइं खलु ताइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

१. सव्वब्भंतरे चेव मंडले,

२. सव्वबाहिरे चेव मंडले,

एयाणि खलु ताणि दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगयाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

एयवया दोच्चे चंदायणे समत्ते भवइ ।

तच्चे चंदायणे

ता णक्खत्ते मासे नो चंदे मासे,
चंदे मासे नो णक्खत्ते मासे,

प. ता णक्खत्ताए मासाए चंदे चंदेणं मासेणं किमधियं चरइ ?

उ. ता दो अद्धमंडलाइं चरइ, अट्ठ य सत्तट्ठि भागाइं अद्धमंडलस्स, सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं,

ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स इगयालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो, परस्स य चिन्नं पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ,

एयावया बाहिराणंतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ ।

तच्चायणगए चंदे पुरत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर तच्चस्स पुरत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स इगयालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरइ,

एयावया बाहिरतच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ,

ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर चउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स अट्ठसत्तट्ठिभागाइं, सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरइ,

एयावया बाहिर चउत्थ पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ,

एवं खलु चंदेणं मासेणं चंदे तेरस चउप्पण्णगाइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडियरइ,

तेरस तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णाइं पडियरइ,

दुवे इगयालीसगाइं दुवे तेरसगाइं, अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरइ,

अवराहं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामन्नगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

इच्चेसो चंदमासो अभिगमण-णिक्खमण-वुड्ढि-णिव्वुड्ढि-अणवट्ठिय-संठाण-संठिई-विउव्वणगिद्धिपत्ते चंदे देवे चंदे देवे, आहिए त्ति वएज्जा।

✤✤

चौदहवां प्राभृत

दोसिणा अंधयारस्स य बहुत्तकारणं

८२. क. १ प. ता कता ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

२ प. ता कहं ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. ता अंधकारपक्खाओ णं दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

३ प. ता कहं ते अंधकारपक्खाओ णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. ता अंधकारपक्खाओ णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तंजहा—
पढमाए पढमं भागं बिदियाए बिदियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसं भागं ।
एवं खलु अंधकारपक्खाओ णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

४ प. ता केवतिया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. ता परित्ता असंखेज्जा भागा ।

ख. १ प. ता कता ते अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. ता अंधकारपक्खे णं अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा,

२ प. ता कहं ते अंधकारपक्खे णं अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. ता दोसिणापक्खाओ अंधकारपक्खे णं अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

३ प. ता कहं ते दोसिणापक्खाओ अंधकारपक्खेणं अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. ता दोसिणापक्खाओ णं अंधकारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तंजहा—पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसं भागं,
एवं खलु दोसिणापक्खाओ णं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ।

४ प. ता केवतिए णं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ. परित्ते असंखेज्ज भागे ।[1]

---

१. "सूर्यप्रज्ञप्ति प्राभृत १३, सूत्र ७९ और सूर्यप्रज्ञप्ति प्रा. १४ सूत्र ८२" इन दोनों सूत्रों का फलितार्थ समान है। अन्तर इतना ही है कि सूत्र ७९ में "चन्द्र की हानि-वृद्धि" का कथन है। सूत्र ८२ में "चन्द्रिका तथा अन्धकार की अधिकता" का कथन है। किन्तु चन्द्र की हानि-वृद्धि से ही चन्द्रिका एवं अन्धकार की अधिकता होती है।

पन्द्रहवाँ प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराणं गइपरूवणं

८३. प. ता कहं ते सिग्घगई ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं—
चंदेहिंतो सूरे सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा सव्वसिग्घगई तारा ।[1]

१ प. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ?

उ. ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अडसट्ठे भागसए गच्छइ, मंडलं सयसहस्से णं अट्ठाणउइ सएहिं छेत्ता छेत्ता ।

२ प. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ?

उ. ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तस्स तस्स मंडल-परिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसए गच्छइ, मंडलं सयसहस्से णं अट्ठाणउइसएहिं छेत्ता छेत्ता ।[2]

---

१. प. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-ताराख्वाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा मंदगई वा ?
उ. ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा ।

२. ग्रहों की गति का निरूपण मूल पाठ में नहीं है ।
ग्रहों की गति के सम्बन्ध में टीकाकार का स्पष्टीकरण—
ग्रहास्तु वक्रानुवक्रादिगतिभावतोऽनियतगतिप्रस्थानास्ततो न तेषामुक्तप्रकारेण गतिप्रमाणप्ररूपणा कृता, उक्तं च गाहाभो—
'चंदेहिं सिग्घयरा, सूरा सूरेहिं होंति णक्खत्ता ।
अणिययगइपत्थाणा, हवंति सेसा गहा सव्वे ॥ १ ॥
अट्ठारस पणतीसे, भागसए गच्छइ मुहुत्तेणं ।
णक्खत्तं चंदो पुण, सत्तरससए उ अडसट्ठे ॥ २ ॥
अट्ठारस भागसए, तीसे गच्छइ रवी मुहुत्तेण ।
णक्खत्तसीमछेदो, सो चेव इहं पि णायव्वो ॥ ३ ॥

३ प. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ?

उ. ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तस्स तस्स मंडल-परिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसए गच्छइ, मंडलं सयसहस्से णं अट्ठाणउईसएहिं छेत्ता छेत्ता ।[1]

चंद-सूर-णक्खत्ताणं विसेसगइपरूवणं

८४. १ प. ता जया णं चंदं गइसमावण्णं सूरे गइसमावण्णे भवइ, से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ?

उ. बावट्ठिभागे विसेसेइ ।

२ प. ता जया णं चंदं गइसमावण्णं, णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ?

उ. ता सत्तट्ठि भागे विसेसेइ ।

३ प. ता जया णं सूरं गइसमावण्णं णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ?

उ. ता पंच भागे विसेसेइ ।

चंदस्स-णक्खत्ताण य जोगगइपरूवणं

ता जया णं चंदे गइसमावण्णं अभिई णक्खत्ते णं गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ समासाइत्ता णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ, जोगं जोएत्ता जोगं अणुपरियट्टइ, जोगं अणुपरियट्टित्ता, जोगं विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ,

ता जया णं चंदं गइसमावण्णं सवणे णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, समासाइत्ता तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ, जोगं जोएत्ता जोगं अणुपरियट्टइ जोगं अणुपरियट्टित्ता जोगं विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ ।

एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, पण्णरसमुहुत्ताइं, तीसइमुहुत्ताइं पणयालीसमुहुत्ताइं । भाणियव्वाइं जाव उत्तरासाढा,

चंदस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवणं

८४. ता जया णं चंदं गइसमावण्णं गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ, जोगं जोएत्ता जोगं अणुपरियट्टइ, जोगं अणुपरियट्टित्ता जोगं विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ ।

---

१. 'ताराओं की गति सबसे अधिक है' ऐसा मूल पाठ में कथन है किन्तु गति के प्रमाण का कथन नहीं है, टीकाकार ने भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा है ।

सूरस्स णक्खत्ताण य जोग-गइकालपरूवणं

ता जया णं सूरं गइसमावण्णं अभिइणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता, चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेणं सद्धिं जोगं जोएइ, जोगं जोएत्ता जोगं अणुपरियट्टइ, जोगं अणुपरियट्टित्ता जोगं विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ,

एवं छ अहोरत्ता एक्कवीसं मुहुत्ता य, तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य, वीसं अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भणियव्वा जाव

ता जया णं सूरं गइसमावण्णं उत्तरासाढा णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ, जोगं जोएत्ता जोगं अणुपरियट्टइ, जोगं अणुपरियट्टित्ता जोगं विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ ।

सूरस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवणं

ता जया णं सूरं गइसमावण्णं गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ, जोगं जोएत्ता जोगं अणुपरियट्टइ, जोगं अणुपरियट्टित्ता जोगं विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ ।

क—णक्खत्तमासे चंदस्स सूरस्स, णक्खत्तस्स य मंडलचारं

८५. [णक्खत्ताइसु पंचसु मासेसु चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारसंखा]

१ प. ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता तेरस मंडलाइं चरइ, तेरस य सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ।

२ प. ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता तेरस मंडलाइं चरइ चोत्तालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ।

३ प. ता णक्खत्तेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता तेरस मंडलाइं चरइ अट्ठसेतालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ।

ख—चंदमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडल चारं

१ प. ता चंदेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता चोद्दस्स चउभागाइं मंडलाइं चरइ, एगं च चउवीससयं भागं मंडलस्स ।

२ प. ता चंदेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरइ, एगं ज चउवीससयभागं मंडलस्स ।

३. प. ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरइ, छच्च चउवीससयभागे मंडलस्स ।

ग–उडुमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तमासस्स य मंडलचारं

१. प. ता उडुणा मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता चोद्दस मंडलाइं चरइ तीसं च एगट्ठिभागे मंडलस्स ।

२. प. ता उडुणा मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता पण्णरस मंडलाइं चरइ ।

३. प. ता उडुणा मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता पण्णरस मंडलाइं चरइ, पंच य बावीस सयभागे मंडलस्स ।

घ–आइच्चमासे चंदस्स, सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं

१. प. ता आइच्चेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता चोद्दस मंडलाइं चरइ, एक्कारस पण्णरस य भागे मंडलस्स ।

२. प. ता आइच्चेणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ।

उ. ता पण्णरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरइ ।

३. प. ता आइच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता पण्णरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरइ पंचतीसं च चउवीससयभाग मंडलाइं चरइ ।

ङ–अभिवड्ढियमासे चंदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मंडलचारं

१. प. ता अभिवड्ढिएणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता पण्णरस मंडलाइं चरइ, तेसीइं छलसीयभागे मंडलस्स ।

२. प. ता अभिवड्ढिएणं मासेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता सोलस मंडलाइं चरइ, तिहिं भागेहिं ऊणगाइं दोहिं अडयालेहिं सएहिं मंडलं छित्ता ।

३. प. ता अभिवड्ढिएणं मासेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता सोलस मंडलाइं चरइ सेयालीसएहिं भागेहिं अहियाहिं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं मंडलं छेत्ता ।

एगमेगे अहोरत्ते चंद-सूर-णक्खत्ताणं मंडलचारं

८६. १. प. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता एगं अद्धमंडलं चरइ, एक्कतीसेहिं भागेहिं ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं सएहिं अद्ध-मंडलं छेत्ता ।

२. प. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता एगं अद्धमंडलं चरइ ।

३. प. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता एगं अद्धमंडलं चरइ, दोहिं भागेहिं अहियं सत्तहिं बत्तीसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता ।

एगमेगे मंडले चंद-सूर-णक्खत्ताणं अहोरत्ते चारं

१. प. ता एगमेगं मंडलं चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ. ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ, एक्कतीसेहिं भाएहिं अहिएहिं चउहिं चोयालेहिं सएहिं राइंदिएहिं छेत्ता ।

२. प. ता एगमेगं मंडलं सूरे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ. ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ ।

३. प. ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ. ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ, दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं सएहिं राइंदिएहिं छेत्ता ।

एगमेगजुगे चंद-सूर-णक्खत्ताणं मंडलचारं

१. प. ता जुगे णं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता अट्ठचुल्लसीए मंडलसए चरइ ।

२. प. ता जुगे णं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता णव-एगूणरसमंडलसए चरइ ।

३. प. ता जुगे णं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ. ता अट्ठारस पणतीसे बुभागमंडलसए चरइ ।

इच्चेसा मुहुत्तगई रिक्ख-उडमास-राइंदिय-जुगमंडल-पविभत्ती सिग्घगई वत्थ आहिए त्ति बेमि ।

❖❖

सोलहवाँ प्राभृत

दोसिणाइयाण लक्खणा

८७. १ प. ता कहं ते दोसिणालक्खणा ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. ता चंदलेसाइ य दोसिणाइ य ।

२ प. दोसिणाइ य चंदलेसाइ य के अट्ठे, किंलक्खणे ?

उ. ता एगट्ठे एगलक्खणे ।

१ प. ता कहं ते सूरलेस्सालक्खणो ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. ता सूरलेस्साइ य आयवेइ य ।

२ प. ता सूरलेस्साइ य, आयवेइ य के अट्ठे किंलक्खणे ?

उ. ता एगट्ठे, एगलक्खणे

१ प. ता कहं ते छायालक्खणे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता छायाइ य, अंधकाराइ य ।

२ प. ता छायाइ य अंधकाराइ य के अट्ठे किंलक्खणे ?

उ. ता एगट्ठे एगलक्खणे ।

सत्तरहवाँ प्राभृत

चंद-सूरियाणं चवणोववाया

८८. प. ता कहं ते चवणोववाया, आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

तत्थ एगे एवमाहंसु—

१. ता अणुसमयमेव चंदिम-सूरिया अण्ण चयंति अण्णे उववज्जंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता अणुमुहुत्तमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति ।

३-२४. एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव[1]

---

१. "एवं जहा हिट्ठा तहेव आवेत्यादि··

एवं उक्तेन प्रकारेण यथा अधस्तात् षष्ठे प्राभृते पञ्चविंशतिः प्रतिपत्तयस्तथैवात्रापि वक्तव्याः यावत् अणुओसप्पिणि-उस्सप्पिणिमेवेत्यादि चरमसूत्रम् ।

तास्त्वेवं भणितव्याः—

एगे पुण एवमाहंसुः—

ता अणुराइंदियमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४. ता अणुपक्खमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५. ता अणुमासमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु ··

६. ता अणु-उउमेव

एगे पुण एवमाहंसु—

७. ता अणु-अयणमेव,

एगे पुण एवमाहंसु—

८. ता अणु-संवच्छरमेव,

एगे पुण एवमाहंसु—

९. ता अणुजुगमेव,

एगे पुण एवमाहंसु—

(शेष टिप्पणियां अगले पृष्ठ पर)

२५. एगे पुण एवमाहंसु—
ता अणुओसप्पिणी, उस्सप्पिणीमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, एगे एवमाहंसु।

---

१०. ता अणुवाससयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु --
११. ता अणुवाससहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु —
१२. ता अणु वाससयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु
१३. ता अणुपुव्वमेव,
एगे पुण एवमाहंसु--
१४. ता अणुपुव्वसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु--
१५. ता अणुपुव्वसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु —
१६. ता अणुपुव्वसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१७. ता अणुपलिओवमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१८, ता अणुपलिओवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१९. ता अणुपलिओवमसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२०. ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२१. ता अणुसागरोवमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२२. ता अणुसागरोवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२३. ता अणुसागरोवमसहस्समेव।
एगे पुण एवमाहंसु—
२४. ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव।
पंचविंशतितमं प्रतिपत्तिसूत्रं तु साक्षादेव सूत्रकृता दर्शितम् तदेवमुक्ताः परतीर्थिकप्रतिपत्तयः। —टीका.

वयं पुण एवं वयामो -

ता चंदिम-सूरियाणं देवा महिड्ढीया, महाजुईया-महाबला, महाजसा, महासोक्खा, महाणुभावा ।

वर वत्थधरा, वरमल्लधरा, वरगंधधरा, वराभरणधरा, अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए काले अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, चवणोववाया आहिए त्ति वएज्जा ।

❖❖

अठारहवाँ प्राभृत

चंदाइच्चाइणं भूमिभागाओ उड्ढत्तं

८९. प. ता कहं ते उच्चत्ते आहितेति वदेज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तिओ, पण्णत्ताओ, तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं विवड्ढं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धातिज्जाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता तिन्नि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धचुट्ठाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

४. ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

५. ता पंच जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धछट्ठाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

६. ता छ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धसत्तमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

७. ता सत्तजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धट्ठमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

८. ता अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धनवमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

९. ता नवजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धदसमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु

१०. ता दसजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धएक्कारस चंदे, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु —

११. ता एक्कारस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धबारस चंदे, एगे एवमाहंसु।

एते णं अभिलावेणं णेतव्वं —

१२. बारस सूरे, अद्धतेरस चंदे, १३. तेरससूरे अद्धचोद्दस चंदे,

१४. चोद्दस सूरे, अद्धपण्णरस चंदे, १५. पण्णरस सूरे अद्धसोलस चंदे,

१६. सोलस सूरे, अद्धसत्तरस चंदे, १७. सत्तरस सूरे अद्धअट्ठारस चंदे,

१८. अट्ठारस सूरे, अद्धएकोणवीसं चंदे, १९. एकोणवीसं सूरे अद्धवीसं चंदे,

२०. वीसं सूरे, अद्धएक्कवीसं चंदे, २१. एक्कवीसं सूरे, अद्धबावीसं चंदे,

२२. बावीसं सूरे, अद्धतेवीसं चंदे, २३. तेवीसं सूरे, अद्ध चउवीसं चंदे,

२४. चउवीसं सूरे अद्धपणवीसं चंदे,

एगे पुण एवमाहंसु—

२५. ता पणवीस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धछव्वीसं चंदे, एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वदामो—

ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउइ जोयणसए उड्ढं उप्पतित्ता हेट्ठिल्ले ताराविमाणे चारं चरति जाव ता चंदविमाणातो णं वीसं जोयणाइं उड्ढं उप्पतित्ता उवरिल्लते तारारूवे चारं चरति।

एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरं जोयणसतं बाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोतिसविसए जोतिस-चारं चरति आहितेति वदेज्जा।

ताराणं अणुत्ते तुल्लत्ते कारणाइं

९०. ता अत्थि णं चंदिम-सूरियाणं देवाणं --

हिट्ठंपि[1] ताराख्वा अणुंपि, तुल्ला वि,

समंपि[2] ताराख्वा अणुंपि तुल्ला वि,

उप्पिंपि[3] ताराख्वा अणुंपि, तुल्ला वि[4]।

---

१. जंबु. वक्ख. ७ सु. १६२

हिट्ठं पि त्ति—क्षेत्रापेक्षया अधस्तना अपि ताराख्यविमानाधिष्ठातारो देवास्तेऽपि चन्द्र-सूर्याणां देवानां द्युति-विभवादिकमपेक्ष्य केचिदणवोऽपि भवंति, केचित्तुल्या अपि।

२. "समभवि त्ति—चंद्रविमानैः सूर्यविमानैश्च क्षेत्रापेक्षया समश्रेण्यापि।"

३. "उप्पि पि त्ति चंद्रविमानानां सूर्यविमानानां चोपर्यपि।"

४. ता जहन्नहेत्यादि....यैः प्राग्भवे तपोनियम —ब्रह्मचर्यादि मंदानि कृतानि ते ताराख्यविमानाधिष्ठातृ-देवभव-मनुप्राप्ताश्चन्द्र-सूर्यदेवेभ्यो द्युति-विभवादिकमपेक्ष्य हीना भवंति। (शेष अगले पृष्ठ पर)

प. ता कहं ते चंदिम-सूरियाणं देवाणं—
हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
समंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्ला वि ?

उ. ता जहा जहा णं तेसिं णं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं उस्सियाइं भवंति तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं भवंति, तंजहा अणुत्ते वा, तुल्लत्ते वा।
ता एवं खलु चंदिम-सूरियाणं देवाणं
हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
समंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि,
उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि, तुल्ला वि।

चंदस्स गह-णक्खत्त-ताराणं परिवारो

९१. प. क. ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स केवइया गहा परिवारो पण्णत्तो ?
ख. केवइया णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो ?
ग. केवइया तारा परिवारो पण्णत्तो ?

उ. क. ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स अट्ठासीइगहा परिवारो पण्णत्तो,
ख. अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो,
ग. गाहा—
छावट्ठि सहस्साइं, णव चेव सयाइं पंचुत्तराइं।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं[1] ॥
परिवारो पण्णत्तो[2]।

यैस्तु भवान्तरे तपोनियम-ब्रह्मचर्याणि अत्युत्कटान्यासेवितानि ते ताराख्यविमानाधिष्ठातृरूपदेवत्वमनुप्राप्ता द्युतिविभवादिकमपेक्ष्य चंद्र-सूर्यैर्देवैः सह समाना भवन्ति न चैतदनुपपन्नम्।
दृश्यन्ते हि मनुष्यलोकेऽपि केचिज्जन्मान्तरोपचिततथाविधपुण्यप्राग्भारा राजत्वमनुप्राप्ता अपि राज्ञा सह तुल्य-विभवा इति।

१. जम्बू. वक्ख. ७, सु. १६३
२. क. "एगमेगस्स णं चंदिम-सूरियस्स अट्ठासीए अट्ठासीए महग्गहा परिवारो पण्णत्तो। - सम. ८८, सु. १
ख. प. एगमेगस्स णं चंदिम-सूरियस्स....
उ. गाहाओ— अट्ठासीति च गहा, अट्ठावीसं च होइ णक्खत्ता।
एगससीपरिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ॥

(शेष टिप्पणियां अगले पृष्ठ पर)

मंदरपव्वयाओ लोइतचारं

९२. १ प. ता मंदरस्स णं पव्वयस्स णं केवइयं अबाहाए जोइसे चारं चरइ ?

उ. ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अबाहाए जोइसे चारं चरइ ।[1]

लोअंताओ जोइसठाणं

प. ता लोअंताओ णं केवइयं अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ?

उ. ता एक्कारस एक्कारे जोयणसए अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ।[2]

णक्खत्ताणं अब्भंतराइं चारं

९३. १ प. ता जंबुद्दीवे णं दीवे

कयरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरइ ?

२ प. कयरे णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ ?

३ प. कयरे णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ ?

४ प. कयरे णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं चारं चरइ ?

१ उ. अभिई णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरइ ।[3]

छावट्ठीसहस्साइं, णव चेव सयाइं पंचसयराइं ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं ॥

—जीवा. प. ३, उ. २, सु. १९४

ग. जीवाभिगम प्रति. ३, उ. २, सू. १९४ में—"चन्द्र और सूर्य दोनों के संयुक्त प्रश्नोत्तर हैं। मूल में प्रश्नसूत्र का केवल प्रतीक है और उत्तर के रूप में दो गाथाएँ हैं।

टीका में "प्रश्नसूत्र का यह प्रतीक है– "एगमेगस्स णं भंते ! चंदिम-सूरियस्सेत्यादि इस प्रतीक के सम्बन्ध में टीकाकार का स्पष्टीकरण यह है—

"एकैकस्य भदन्त ! चंद्र-सूर्यस्य" अनेन च पदेन यथा नक्षत्रादीनां चंद्रः स्वामी तथा सूर्योऽपि, तस्यापीन्द्रत्वात्....

....इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेदो गलितानि च सूत्राणि बहुषु पुस्तकेषु ततो यथावस्थित-वाचनाभेदप्रतिपत्त्यर्थं गलितसूत्रोद्धरणार्थं चैवं सुगमान्यपि विव्रियन्ते....

१. सम. स. ११, सु. ३

२. क. सम. स. ११, सु. २

ख. जम्बु. वक्ष. ७, सु. १५४

३. "सर्वाभ्यन्तरं सर्वेभ्यो मण्डलेभ्योऽभ्यन्तरः सर्वाभ्यन्तरः अनेन द्वितीयादि-मण्डलचारव्युदासः"

"यद्यपि सर्वाभ्यन्तरमण्डलचारीण्यभिजिदादिद्वादशनक्षत्राण्यभिहितानि, तथापीदं मेषैकादशनक्षत्रापेक्षया मेरु-दिशि स्थितं सत् चारं चरतीति सर्वाभ्यन्तरचारीत्युक्तम्" ।

२ उ. मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ।[1]

३ उ. साई णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ।[2]

४ उ. भरणी णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं चारं चरइ।

चंद-सूर-गह-णक्खत्तविमाणाणं संठाणाइं

९४. प. ता चंदविमाणे णं किंसंठिए पण्णत्ते ?

उ. ता अद्धकविट्ठग-संठाणसंठिए[3] सव्वफालियामए अब्भुग्गयमूसियपहसिए विविह-मणि-रयण-भत्तिचित्ते, वाउद्धुय-विजय-वेजयंतीपडागा छत्ताइछत्तकलिए, तुंगे गगणतलमणुलिहंत-सिहरे, जालंतररयण-पंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागे, वियसिय-सयवत्त-पुंडरीय-तिलयरयणद्धचंदचित्ते, अंतो बहिं च सण्हे, तवणिज्जवालुगापत्थडे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

एवं सूरविमाणे, गहविमाणे, णक्खत्तविमाणे ताराविमाणे।[4]

---

१. "सर्वबाह्यं-सर्वतो नक्षत्रमण्डलिकाया बहिश्चारं चरति"।
"यद्यपि पंचदशमण्डलाद्बहिश्चारीणि मृगशिरःप्रभृतीनि षड् नक्षत्राणि, पूर्वाषाढोत्तराषाढयोश्चतुर्णां तारकाणां मध्ये द्वे द्वे च तारे उक्तानि, तथाप्येतदपरबहिश्चारिनक्षत्रापेक्षया लवणदिशि स्थितं सच्चारं चरतीति सर्वबहिश्चारीत्युक्तम्"।

२. क. "दशोत्तरशतयोजनरूपे ज्योतिश्चक्रबाहल्ये यो नक्षत्राणां क्षेत्रविभागश्चतुर्योजनप्रमाणस्तदपेक्षयोक्तनक्षत्रयोः क्रमेणाधस्तनोपरितनभागौ ज्ञेयौ।" इस टिप्पण में उद्धृत उद्धरण जम्बू. वक्ख. ७, सू. १६५ टीका के हैं।
ख' जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सूत्र १६५ के समान यह सूर्यप्रज्ञप्ति का सूत्र भी है।

३. गाहाओ—
अद्धकविट्ठागारा उवयत्थमणंमि कहं न दीसंति,
ससि-सूराण विमाणा, तिरियक्खेत्तट्ठियाणं च ?
उत्ताणद्धकविट्ठागारं, पीढं तदुवरि च पासाओ[1]
वट्टालेखेण तओ, समवट्टं दूरभावाओ॥
जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणेन विशेषणावत्यामाक्षेपपुरस्सरमुक्तम्॥
"यदि चन्द्रविमानमुत्तानीकृतार्द्धमात्रकपित्थफलसंस्थानसंस्थितं तत्र उदयकाले अस्तमयकाले वा,
यदि वा तिर्यक् परिभ्रमत् पौर्णमास्यां कस्मात्तदर्धकपित्थफलाकारं नोपलभ्यन्ते ?
कामं शिरस उपरि वर्तमानं वर्तुलमुपलभ्यते अर्धकपित्थस्य उपरि दूरमवस्थापितस्य परभागादर्शनतो वर्तुलतया दृश्यमानत्वात् उच्यते।
इहार्द्धकपित्थफलाकारं चन्द्रविमानं न सामस्त्येन प्रतिपत्तव्यं, किन्तु तस्य चन्द्रविमानस्य पीठं, तस्य च पीठस्योपरि चन्द्रदेवस्य ज्योतिश्चक्रराजस्य प्रासादः स च प्रासादस्तथा कथंचनापि व्यवस्थितो यथा पीठेन सह भूयान् वर्तुलाकारो भवति, स च दूरभावादेकान्ततः समवृत्ततया जनानां प्रतिभासते, ततो न कश्चिद्दोषः॥
—सूर्य. टीका,

४. जंबु. वक्ख. ७, सु. १२५

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराविमाणाणं आयाम-विक्खंभ-परिक्खेव-बाहल्लाइं

प. क. ता चंदविमाणे णं---
केवइयं आयाम-विक्खंभेण ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ. क. ता छप्पण्णं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं ।
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।
ग. अट्ठावीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।[1]

प. क. ता सूरविमाणे णं केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ. क. ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।
ग. चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।

प. क. ता गहविमाणे णं केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ. क. ता अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं ।
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।
ग. कोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।

---

१. प. क. चंदमंडले णं भंते ।
केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?
उ. क. गोयमा ! छप्पन्न एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,
ग. अट्ठावीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स बाहल्लेणं, पण्णत्ते । —जंबु. वक्ख. ७, सु. १४५
चंदमंडले णं एगसट्ठिविभाग-विभाइए समंसे पण्णत्ते । —सम. ६१, सु. ३
इस सूत्र से यह स्पष्ट है कि चन्द्रविमान और चन्द्रमण्डल एक ही है ।

प. क. ता [illegible] णं केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?

ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?

ग. केवइयं बाहल्लेणं ?

उ. क. ता कोसं आयाम-विक्खंभेणं ।

ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।

ग. अद्धकोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।

प. क. ता ताराविमाणे णं केवइयं आयामविक्खंभेणं ?

ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?

ग. केवइयं बाहल्लेणं ?

उ. क. ता अद्धकोसं आयामविक्खंभेणं ।

ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं ।

ग. पंचधणुसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।[1]

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराणं विमाणपरिवहणं

प. ता चंदविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?

उ. सोलस देवसाहस्सीओ परिवहन्ति, तंजहा—

पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,

---

१. क. प. चंदविमाणे णं भंते ! केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ? केवइयं बाहल्लेणं ?

उ. गाहाओ—

छप्पण्णं खलु भाए-विच्छिण्णं चंदमंडलं होइ ।
अट्ठावीसं भाए बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥ १ ॥
अडयालीसं भाए, विच्छिण्णं सूरमंडलं होइ ।
चउवीसं खलु भाए, बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥ २ ॥
दो कोसे य गहाणं, णक्खत्ताणं तुहवइ तस्सद्धं ।
तस्सद्धं ताराणं, तस्सद्धं चेव बाहल्ले ॥ ३ ॥ —जंबु. वक्ष. ७, सु. १६५

"एकस्य प्रमाणाङ्गुलयोजनस्यैकषष्टिभागीकृतस्य षट्पंचाशता भागैः समुदितैर्यावत्प्रमाणं भवति, तावत्प्रमाणोऽस्य विस्तारः"

"वृत्तवस्तुनः सदृशायाम-विष्कम्भात्"

परिक्षेपस्तु स्वयमभ्यूह्यः वृत्तस्य सविशेषस्त्रिगुणः परिधिरिति प्रसिद्धेः ।

यह स्पष्टीकरण जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति के वृत्तिकार ने ऊपर लिखित सूत्र का दिया है ।

ख. यद्यपि जीवा. प. ३, उ. २, सू. १९७ प्रश्नोत्तरात्मक सूत्र हैं किन्तु उसमें "भंते" और "गोयमा" का प्रयोग अधिक है ।

दाहिणेणं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,
पच्चत्थिमेणं वसभरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति ।
एवं सूरविमाणं पि,

प. ता गहविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?

उ. ता अट्ठ देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—
पुरत्थिमेणं सिंहरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति,
एवं जाव—
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति ।

प. ता णक्खत्तविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?

उ. ता चत्तारि देवसासहस्सीओ परिवहंति, तंजहा
पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहइ,
एवं जाव—
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहइ ।

प. ता ताराविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?

उ. ता दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा
पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंचदेवसया परिवहंति,
एवं जाव—
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं पंचदेवसया परिवहंति ।[1]

---

१. प. चंदविमाणे णं भंते ! कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
गोयमा ! सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति ।
उ. चंदविमाणस्स णं पुरत्थिमेणं,
सेयाणं, सुभगाणं, सुप्पभाणं, संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रयणणिगरप्पभासाणं, थिर-लट्ठ-पउट्ठ वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढा-विडंबिय-मुहाणं,
रत्तुप्पलपत्त-मउय-सुमालसालु-जीहाणं,
महु-गुलिय-पिंगलक्खाणं,
पीवरवरोरु-पडिपुण्ण-विउल-खंधाणं,
मित्त-विसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ-वरवण्ण-केसरसटोवसोहियाणं,
ऊसिय-सुनमिय-सुजाय-अप्फोडिय-लंगूलाणं,
वइरामय-नक्खाणं, वइरामय-दाढाणं, वइरामय-दंताणं,

तवणिज्ज-जीहाणं, तवणिज्ज-तालुआणं, तवणिज्ज-जुत्त-जोत्तगसुजोइआणं कामगमाणं, पीइगमाणं, मणोगमाणं, मणोरमाणं, अभिजिअगईणं,
अमिअ-बल-वीरिअ-पुरिसक्कार-परक्कमाणं,
महया अप्फोडिअ-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं, दिसाओ य सोभयंता,
चत्तारि देवसाहस्सीओ सीहरूवधारीणं पुरित्थिमिल्लं बाहं वहंति,
चंदविमाणस्स णं दाहिणेणं,
सेआणं, सुभगाणं, सुप्पभाणं, संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रयय-णिगरप्पगासगाणं,
वइरामय-कुंभयुगल-सुट्ठिअ-पीवर-वरवइरसोंड-वट्टिअ-दित्त-सुरत्त, पउमप्पगासाणं, अब्भुन्नय-मुहाणं,
तवणिज्ज-विसाल-कण्णचंचल-चलंत-विमलुज्जलाणं,
महुवण्ण-मिसंत-णिद्ध-पत्तल-णिम्मल-तिवण्ण-मणि-रयण-लोयणाणं,
अब्भुग्गय-मउल-मल्लिआधवलसरिससंठिय-णिव्वणदंत-कमिण-फालिआमय-सुजाय-दंतमुसलोवसोभिआणं,
कंचणकोसी-पविट्ठ-दंतग्ग-विमल-मणि-रयण-रुइल-पेरंत-चित्तरूवग-विराइआणं,
तवणिज्ज-विसाल-तिलगप्पमुह-परिमण्डियाणं,
णाणामणि-रयण-मुत्त-गेविज्ज-बद्ध-गलयवरभूसणाणं,
वेरुलिय-विचित्त-दण्ड-निम्मल-वइरामय-तिक्खलट्ठ-अंकुस कुंभजुयलपयंतरोडिआणं,
तवणिज्ज-सुबद्ध-कच्छ-दप्पिअ-वलुद्धराणं,
विमल-घण-मंडल-वइरामय-लालालसियतालणं,
णाणामणि-रयण-घंट-पासग-रजतमय-बद्ध-रज्जु-लंबिअ-घंटाजुयल-महुरसरमणहराणं,
अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिअ-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-रमणिज्ज-वालगत्तपरिपुंछणाणं,
उवचिअ-पडिपुण्ण-कुम्म-चलण-सहुविक्कमाणं,
अंकामयणक्खाणं, तवणिज्ज-जीहाणं, तवणिज्जतालुआणं, तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइआणं,
कामगाणं, पीइगाणं, मणोगमाणं, मनोरमाणं, अभियगईणं, अमिय-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमाणं,
महया-गंभीर-गुलगुलाइतरवेणं महुरेणं मणहरेणं, पूरेंता अंबरं, दिसाओ य सोभयंता,
चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरूवधारीणं देवाणं दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति,
चंदविमाणस्स णं पच्चत्थिमेणं,
सेआणं, सुभगाणं सुप्पभाणं, चल-चवल-ककुह-सालीणं, घण-निचिअ-सुबद्ध-लक्खणुण्णयईसिआणय-वसभोट्ठाणं, चंकमिअ-ललिअ-पुलिअ-चलचवल-गव्विअ-गईणं, सन्नतपासाणं संगतपासाणं सुजायपासाणं,
पीवरवट्टिअ-सुसंठिअ-कडीणं,
ओलंब-पलंब-लक्खण-पमाणजुत्त-रमणिज्ज-वालगंडाणं
समखुरवालिधाणाणं,
समलिहिअ-तिक्ख-तिक्खग्ग-संगयाणं,
तणु-सुहुम-सुजाय-णिद्ध-लोमच्छवीणं,
उवचिअ-मंसल-विसाल-पडिपुण्ण-खंध-पएस-सुंदराणं, वेरुलिअ-मिसंत-कडक्ख-सुनिरिक्खणाणं,

जुत्तप्पमाण-पहाणलक्खण-पसत्थ-रमणिज्ज-गग्गर-गल्ल-सोभियाणं,
घरघरग-सुसद्द-बद्ध-कंठ-परिमंडियाणं,
णाणामणि-कणग-रयणघंटिया-वेगच्छिग-सुकयमालियाणं,
वरघंटा-गलय-मालुज्जल-सिरिघराणं,
पउमुप्पल-सगल-सुरभि-माला-विभूसियाणं,
वइरखुराणं, विविहखुराणं,
फालियामय-दंताणं, तवणिज्ज-जीहाणं, तवणिज्जतालुयाणं,
तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइयाणं,
कामगमाणं, पीइगमाणं, मणोगमाणं मणोरमाणं,
अमिअगईणं अमिअ-बलवीरिअ-पुरिसक्कारपरक्कमाणं महया गज्जिअ-गंभीर-रवेण, महुरेण, मणहरणं,
पूरेंता अंबरं, दिसाओ य सोभंता,
चत्तारि देवसाहस्सीओ वसहरूवधारीणं देवाणं पच्चत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति,
चंदविमाणस्स णं उत्तरेणं--
सेयाणं, सुभगाणं, सुप्पभाणं, तरमल्लिहायणाणं तरमल्लिअच्छाणं चंचुच्चिय-सेयाणं,
ललिअ-पुलिअ-चलचवल-चंचलगईणं, ललंतलाम-गललाय-वरभूसणाणं,
सन्नयपासाणं संगयपासाणं, सुजायपासाणं,
पीवर-वट्टिअ-सुसंठिअ-कडीणं,
ओलंब, पलंब-लक्खण-पमाण-जुत्त-रमणिज्ज-वालपुच्छाणं,
तणुसुहुम-सुजाय-णिद्ध-लोमच्छविहराणं,
मिउविसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ-विचित्तण्ण-केसरवालिहराणं,
ललंत-थासग-ललाड-वरभूसणाणं,
सुहुमण्हग-ओचूलग-चामर-थासग-परिमण्डिअ-कडीणं,
तवणिज्ज-खुराणं, तवणिज्ज-जीहाणं, तवणिज्ज-तालुयाणं, तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइयाणं,
कामगमाणं पीइगमाणं, मणोगमाणं, मणोरमाणं,
अमिअगईणं, अमिअ-बलवीरिअ-पुरिसक्कारपरक्कमाणं,
महया गज्जिअ महुरेणंरवेणं, गंभीर-मणहरेणं पूरेंता अंबरं, दिसाओ य सोभयंता,
चत्तारि देवसाहस्सीओवस हरूवधारीणं देवाणं पच्चत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति,
चन्दविमाणस्स णं उत्तरेणं —
सेयाणं सुभगाणं, सुप्पभाणं तरमल्लिअच्छाणं चंचुच्चिअ-सेयाणं, ललिअ-पुलिअ-चलचवल-चंचलगईणं,
ललंतलाम-गललाय-वरभूसणाणं, — जंबु. वक्ख. ७, सु. १६८

जोइसियाणं सिग्घ-मंदगइपरूवणं

९५. प. सा एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारा-रूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा, मंदगई वा ?

उ. ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा ।[1]

जोइसियाणं अप्प-महिड्ढियपरूवणं

प. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढिया वा महिड्ढिया वा ?

उ. ता ताराहिंतो महिड्ढिया णक्खत्ता,
णक्खत्तेहिंतो महिड्ढिया गहा ।
गहेहिंतो महिड्ढिया सूरा,
सूरेहिंतो महिड्ढिया चंदा,
सव्वप्पड्ढिया तारा, सव्वमहिड्ढिया चंदा ।[2]

ताराणं अबाहा अंतरपरूवणं

९६. प. ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स तारारूवस्स य एस णं केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?

उ. दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तंजहा
१. वाघाइमे य, २. निव्वाघाइमे य ।

क. तत्थ णं जे से वाघाइमे, से णं जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसए ।
उक्कोसेणं, बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बायाले जोयणसए तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

ख. तत्थ णं जे से णिव्वाघाइमे से णं जहण्णेणं पंच धणुसयाइं,
उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।[3]

---

१. क. सूत्र ८३ और इस सूत्र में साम्य है ।
ख. जंबू. वक्ख. ७, सु. १६९
२. जंबू. वक्ख. ७, सु. १७०
३. जंबु. वक्ख. ७, सु. १७१

चंदस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवारविउव्वणा य

९७. प. ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ. ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा —

१. चंदप्पभा, २. दोसिणाभा, ३. अच्चिमाली, ४. पभंकरा ।

तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्सीपरिवारो पण्णत्तो ।

प. पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं चत्तारि चत्तारि देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए ?

उ. पभू णं ताओ एगमेगा देवी देवीसाहस्सीपरिवारं विउव्वित्तए ।
एवामेव सपुव्वावरेणं सोलसदेवीसहस्सा पण्णत्ता, से त्तं तुडिए ।

प. ता पभू णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

उ. णो इणट्ठे समट्ठे ।

प. ता कहं ते णो पभू जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

उ. क. ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए माणवएसु चेइयखंभेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसकहाओ संणिक्खित्ताओ चिट्ठंति ।

ताओ णं चंदस्स जोइसिंदस्स जोइसरण्णो अण्णेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाण य, देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ ।

एवं खलु णो पभू चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ।

ख. पभू णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं, अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं, अण्णेहिं य बहूहिं जोइसिएहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे, महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइय-रवेणं, दिव्वाइं भोग-

भोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परिवारणिड्ढीए ।
णो चेव णं मेहुणवत्तियाए ।

सूरस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवारविउव्वणा य

प. ता सूरस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ. ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-

१. सूरप्पभा, २. आतवा, ३. अच्चिमाली, ४. पभंकरा ।

सेसं जहा चंदस्स,

णवरं सूरवडेंसए विमाणे जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियाए ।

जोइसियाणं देवाणं ठिई

९८. प. ता जोइसियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेणं पलिओवमं, वाससयसहस्समब्भहियं ।

प. ता जोइसिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ।

प. ता चंदविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ।

प. ता चंदविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ।

प. ता सूरविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ।

प. ता सूरविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं अद्ध पलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं ।

प. ता गहविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं पलिओवमं ।

प. ता गहविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।

प. ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं चउब्भागपलिओवमं,
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।

प. ता णक्खत्तविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं ।

प. ता ताराविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं ।

प. ता ताराविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ. ता जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं,
उक्कोसेणं साइरेगअट्ठभागपलिओवमं ।[1]

जोइसियाणं अप्प-बहुत्तं

९९. प. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-ताराणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

उ. ता चंदा य, सूरा य, एएणं दोवि तुल्ला,
सव्वत्थोवा णक्खत्ता,
संखिज्जगुणा गहा,
संखिज्जगुणा तारा ।[2]

१. जंबु. वक्ख. ७, सु. १७३
२. जंबु. वक्ख. ७, सु. १७४

उन्नीसवाँ प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराणं परिमाणं

१००. प. ता कइ णं चंदिम-सूरिया सव्वलोयं ओभासंति, उज्जोएंति, तवेंति, पभासेंति ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. तत्थ खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१. ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोयं ओभासइ, उज्जोएइ, तवेइ, पभासइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२. ता तिण्णि चंदा, तिण्णि सूरा सव्वलोयं ओभासेंति उज्जोएंति, तवेंति, पभासेंति, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३. ता अद्धट्ठ चंदा अद्धट्ठ सूरा सव्वलोयं ओभासेंति जाव पभासेंति, एगे एवमाहंसु ।

एएणं अभिलावेणं णेयव्वं,

४. सत्त चंदा, सत्त सूरा,

५. दस चंदा, दस सूरा,

६. बारस चंदा, बारस सूरा,

७. बायालीसं चंदा, बायालीसं सूरा,

८. बावत्तरीं चंदा, बावत्तरीं सूरा,

९. बायालीसं चंदसयं बायालीसं सूरसयं,

१०. बावत्तरं चंदसयं बावत्तरं सूरसयं,

११. बायालीसं चंदसहस्सं बायालीसं सूरसहस्सं,

१२. बावत्तरं चंदसहस्सं, बावत्तरं सूरसहस्सं, सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति, पभासेंति एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो -

जम्बूद्दीवो-जंबुद्दीवे जोइसियपरिमाणं

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए जाव एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, सोलस सहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

१ प. ता जंबुद्दीवे दीवे—
केवइया चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प. केवइया सूरा तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ?

३ प. केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोयं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागणकोडि-कोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ. ता जंबुद्दीवे दीवे—

दो चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा।

२ उ. दो सूरिया तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा।

३ उ. छावत्तरं गहसयं चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा।

४ उ. छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा।

५ उ. एगं सयसहस्सं तेत्तीसं च सहस्सा णव सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा।

गाहाओ—

दो चंदा दो सूरा, णक्खत्ता खलु हवंति, छप्पण्णा।
छावत्तरं गहसयं, जंबुद्दीवे विचारीणं॥
एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं।
णव य सया पण्णासा, तारागणकोडिकोडीणं॥

लवणसमुद्दो

ता जंबुद्दीवं दीवं लवणे नामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ।

प. ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए।

प. ता लवणसमुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, पण्णरस जोयणसयसहस्साइं एक्कासीयं च सहस्साइं सयं च एगूणचत्तीसं किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं । गाहा –

पण्णरस सयसहस्सा, एक्कासीयं सयं च ऊतालं ।

किंचि विसेसेणूणो, लवणोदहिणो परिक्खेवो ।।

१ प. ता लवणसमुद्दे –

केवइया चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प. केवइया सूरा तविंसु वा, तविंति वा, तविस्संति वा ?

३ प. केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा चरिस्संति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागण कोडाकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ?

१ उ. ता लवणसमुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ।

२ उ. चत्तारि सूरिया तविंसु वा, तविंति वा, तविस्संति वा ।

३ उ. तिण्णि बावण्णा महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ. बारस णक्खत्तसयं जोगं जोएंसु वा जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. दो सयसहस्सा सत्तट्ठि च सहस्सा णव य सया तारागणकोडाकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा, सोभिस्संति वा ।

गाहाओ

चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ।

बारस णक्खत्तसयं, गहाण तिण्णेव बावण्णा ।।

दोच्चेव सयसहस्सा, सत्तट्ठि खलु भवे सहस्साइं ।

णव य सया लवणजले, तारागणकोडिकोडीणं ।।

धायईसंडदीवे

ता लवणसमुद्दं धायईसंडे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ।

प. ता धायईसंडे णामं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता धायईसंडे णामं दीवे समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प. धायईसंडे णं दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं ?
आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, ईयालीसं जोयणसयसहस्साइं दस य सहस्साइं णव य एगट्ठे जोयणसए किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा

गाहा—
धायइसंड परिरओ, ईयाल दसुत्तरा सयसहस्सा ।
णव य सया एगट्ठा, किंचि विसेसेण परिहीणा ।।

१ प. धायईसंडे दीवे --
केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प. केवइया सूरिया तवेंसु वा, तविंति वा, तविसिस्संति वा ?

३ प. केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा चरिस्संति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागणकोडाकोडीओ, सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ. बारस चंदा पभासेंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा ।

२ उ. बारस सूरिया तवेंसु वा, तविंति वा, तविसिस्संति वा ।

३ उ. एगं छप्पण्णं महग्गहसहस्सं चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ. तिण्णि छत्तीसा णक्खत्तसया जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. गाहाओ-
अट्ठेव सय सहस्सा, तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं ।।

चउवीसं ससि-रविणो, णक्खत्तसया य तिण्णि छत्तीसा ।
एगं च गहसहस्सं, छप्पणं धायईसंडे ।।

अट्ठेव सयसहस्सा, तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं ।
धायइसंडे दीवे, तारागण कोडिकोडीणं ।।

कालोए समुद्दे

ता धायईसंडं णं दीवं कालोए णामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ।

प. ता कालोए णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए, विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता कालोए णं समुद्दे समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प. ता कालोए णं समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता कालोए णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ।

एक्काणउइं जोयणसयसहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पंचुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा । गाहा—

एक्काणउई सयसहस्सं, सत्तरिं सहस्साइं परिरओ तस्स ।

अहियाइं छच्च पंचुत्तराइं, कालोदधि वरस्स ॥

१ प. ता कालोये णं समुद्दे—

केवइया चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प. केवइया सूरा तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ?

३ प. केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ. ता कालोये णं समुद्दे बायालीसं चंदा पभासेंसु वा पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ।

२ उ. बायालीसं सूरा तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ।

३ उ. तिन्नि सहस्सा छच्च छन्नउया महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ. एक्कारस छावत्तरा णक्खत्तसया जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. अट्ठावीसं सयसहस्साइं, बारस सहस्साइं नव य सयाइं पण्णासा तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ।

गाहाओ—

बायालीसं चंदा, बायालीसं च दिणकरा वित्ता ।

कालोदहिंमि एए, चरंति संबद्धलेसागा ॥

णक्खत्तसहस्सं, एगमि छावत्तरं च संतमण्णे ।

छच्चसया छण्णउया, महग्गह, तिण्णि य सहस्सा ॥

अट्ठावीसं सयसहस्सं, बारस य सहस्साइं ।
णवसया पण्णासा, तारागण कोडिकोडीणं ॥

पुक्खरवरदीवे

ता कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ।

प. ता पुक्खरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता पुक्खरवरे णं दीवे समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प. ता पुक्खरवरे णं दीवे केवइयं समचक्कवालविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं ?

उ. ता सोलस जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं ।

एगा जोयणकोडी बाणउइं च सयसहस्साइं अउणावन्नं च सहस्साइं अट्ठ चउणउए जोयणसए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा । गाहा—

कोडी बाणउई खलु, अउणाणउइं भवे सहस्साइं ।
अट्ठसया चउणउया, परिरओ पोक्खरवरस्स ॥

१ प. ता पुक्खरवरे णं दीवे -

केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प. केवइया सूरा तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ?

३ प. केवइया गाहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागण कोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा सोभिस्संति वा ?

१ उ. ता बोयालं चंदसयं पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा

२ उ. बोयालं सूरियाणं सयं तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ।

३ उ. बारस सहस्साइं छच्च बावत्तरा महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ. चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं च णक्खत्ता जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. छण्णउइसयसहस्साइं चोयालीसं सहस्साइं चत्तारि य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा, सोभेंति वा, सोभिस्संति वा ।

गाहाओ

चत्तालं चंदसयं, चत्तालं चेव सूरियाण सयं।
पोक्खरवरदीवम्मि य, चरंति एए पभासंता ॥

चत्तारि सहस्साइं, बत्तीसं चेव होंति णक्खत्ता।
छच्च सया बावत्तरं, महग्गहा बारह सहस्सा ॥

छण्णउइ सयसहस्सा, चोयालीसं खलु भवे सहस्साइं।
चत्तारि य सया खलु, तारागण कोडि कोडी णं ॥

माणुसुत्तरे पव्वए

ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स बहुमज्झदेसभाए माणुसुत्तरे णामं पव्वए पण्णत्ते, वट्टे वलयाकार-संठाणसंठिए जे णं पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे विभयमाणे चिट्ठइ, तंजहा—

१. अब्भिंतरपुक्खरद्धं च, २. बाहिरपुक्खरद्धं च।

अब्भिंतर-पुक्खरद्धे

प. ता अब्भिंतर-पुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिए, विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए।

प. ता अब्भिंतर-पुक्खरद्धे णं केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं ?

आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभे णं,

एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दो अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा,

"अट्ठेव सयसहस्सा अब्भिंतरपुक्खरस्स विक्खंभो।"[1]

१ प. ता अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प. केवइया सूरा तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ?

३ प. केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ. बावत्तरिं चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा।

---

१. ये गाथा के प्रारम्भ के दो पद हैं।

२ उ. बावत्तरिं सूरिया तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ।

३ उ. छ महग्गहसहस्सा तिन्नि सए य छत्तीसा चारं चरेंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ. दोण्णि लोला णक्खत्तसहस्सा जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. अडयालीसं सयसहस्सा, बावीसं च सहस्सा दोण्णि य सया तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ।

गाहाओ -

बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिणकराहिंता ।
पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एए पभासेंता ।।

तिण्णि सया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु ।
णक्खत्ताणं तु भवे, सोलाइं दुवे सहस्साइं ।।

अडयालसयसहस्सा, बावीसं खलु भवे सहस्साइं ।
दो य सय पुक्खरद्धे, तारागणकोडिकोडीणं ।।

समयखेत्ते

प. ता समयखेत्ते णं केवइयं आयाम-विक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं—
एगा जोयणकोडी, बायालीसं च सयसहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं-आहिए त्ति वएज्जा,

गाहा -

पणयाल सय सहस्सा, समयखेत्तस्स विक्खंभो ।[1]
कोडी बायालीसं, सहस्स दुसया य अउणपण्णासा ।
समयखेत्तस्स परिरओ, एमेव य पुक्खरद्धस्स ।।

१ प. ता समयक्खेत्ते णं केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प. केवइया सूरा तवेंसु वा, तवंति वा, तवस्संति वा ?

३ प. केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ?

४ प. केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोइंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प. केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

---

१. ये गाथा के उत्तरार्ध के दो पद हैं ।

१ उ. ता बत्तीसं चंदसयं पभासेंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा ।

२ उ. ता बत्तीसं सूरसयं तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ।

३. उ. ता एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ. ता तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया णक्खत्तसया जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ. ता अट्ठासीइं सयसहस्साइं चत्तालीसं च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ।

गाहाओ—

बत्तीसं चंदसयं, बत्तीसं चेव सूरियाण सयं ।
सयलं माणुसलोयं चरंति एए पभासेंता ।।

एक्कारस य सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाणं तु ।
छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा ।।

अट्ठासीइ चत्ताइं, सय सहस्साइं मणुयलोगंमि ।
सत्त य सया अणूणा, तारागणकोडिकोडीणं ।।

एसो तारापिंडो, सव्वसमासेण मणुयलोगंमि ।
बहिया पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ।।

एवइयं तारग्गं, जं भणियं माणुसंसि लोगंमि ।
चारं कलंबुया-पुप्फसंठियं जोइसं चरइ ।।

रवि ससि गह णक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए ।
जेसिं णामागोत्तं, न पागया, पण्णवेहिंति ।।

जोइसियाणं पिडगाइं -

छावट्ठि पिडगाइं, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि ।
दो चंदा दो सूरा, य हुंति एक्केकए पिडए ।।

छावट्ठि पिडगाइं, महागहाणं मणुयलोगंमि ।
छावत्तरं गहसयं, होइ एक्केकए पिडए ।।

छावट्ठि पिडगाइं णक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि ।
छप्पण्णं णक्खत्ता हुंति एक्केक्कए पिडए ।।

जोइसियाणं पंतीओ—

गाहाओ—

चत्तारि य पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि च, हवइ एक्केक्किया पंती ।।

छावत्तरं गहाणं, पंतिसयं हवंति मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि च हवइ एक्केक्किया पंती ।।

छप्पन्नं पंतीओ, णक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि हवइ एक्केक्किया पंती ।।

जोइसियाणं मंडला—

गाहाओ—

ते मेरुमणुचरंता, पदाहिणावत्त मंडला सव्वे ।
अणवट्ठिय जोगेहिं, चंदा सूरा गहगणा य ।।

णक्खत्त-तारगाणं, अवट्ठिया, मंडला मुणेयव्वा ।
तेऽवि य पदाहिणावत्तमेव मेरुं अणुचरंति ।।

जोइसियाणं मंडलसंकमणं—

रयणिकर-दिणकराणं, उड्ढं च अहेव संकमो नत्थि ।
मंडलसंकमणं पुण, सब्भंतर-बाहिरं तिरिए ।।

जोइसाणं चारं सुह-दुहस्स निमित्तकारणं—

रयणिकर-दिणकराणं, णक्खत्ताणं महग्गहाणं च ।
चारविसेसेण भवे, सुह-दुक्खविही मणुस्साणं ।।

जोइसाणं तावक्खेत्तं—

तेसिं पविसंताणं तावक्खेत्तं तु वड्ढए नियमं ।
तेणेव कमेण पुणो, परिहायइ निक्खमाणाणं ।।

तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया हुंति तावक्खेत्तपहा ।
अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंद-सूराणं ।।

चंदस्स परिवड्ढि-परिहाणी—

गाहाओ—

केणइ वड्ढइ चंदो ? परिहाणी केण हुंति चंदस्स ?
कालो वा जोण्हो वा ? केणऽणुभावेण चंदस्स ?

किण्हं राहुविमाणं णिच्चं चंदेण होइ अविरहियं।
चउरंगुलमसंपत्तं, हिच्चा चंदस्स तं चरइ॥

बावट्ठिं बावट्ठिं, दिवसे दिवसे तु सुक्कपक्खस्स।
जं परिवड्ढइ चंदो, खवेइ तं चेव काले णं॥

पण्णरसइ भागेण य चंदं पण्णरसमेव तं वरइ।
पण्णरसइ भागेण य, पुणोऽवि तं चेव वक्कमइ॥

एवं वड्ढइ चंदो, परिहाणी एव होइ चंदस्स।
कालो वा जोण्हो वा, एवऽणुभावेण चंदस्स॥

अणवट्ठिया अवट्ठिया वा जोइसिया

गाहाओ—

अंतोमणुस्स खेत्ते, हवंति चारोवगा उ उववण्णा।
पंचविहा जोइसिया, चंदा सूरा गहगणा य॥

तेण परं जे सेसा, चंदाइच्च-गह-तार-णक्खत्ता।
णत्थि गई णवि चारो, अवट्ठिया ते मुणेयव्वा॥

अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु जोइसियाणं पमाणं—

गाहाओ—

एवं जंबुद्दीवे, दुगुणा, लवणे चउग्गुणा हुंति।
लवणगा य तिगुणिया, ससि-सूरा धायइसंडे॥

दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य लायरे लवणतोए।
धायइसंडे दीवे, बारस चंदा य सूरा य॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाणं पमाणं

गाहाओ

धायइसंडप्पभिइस्स, उद्दिट्ठा तिगुणिया भवे चंदा।
आइल्लचंद सहिया, अणंतराणंतरे खेत्ते॥

रिक्खग्गह-तारागग्गं, बीव-समुद्दे जहिच्छसो णाउं ।
तस्ससीहिं तग्गुणियं, रिक्ख-ग्गह-तारग्गं तु ।।

बहिया उ माणुसणगस्स चंद-सूराणऽवट्ठिया जोण्हा ।
चंदा अभिईजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ।।

माणुसनगस्स बहिया जोइसियाणं अंतरं—

गाहाओ -

चंदाओ सूरस्स य, सूरा चंदस्स अंतरं होइ ।
पण्णाससहस्साइं तु जोयणाणं अणूणाइं ।।

सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अंतरं होई ।
बाहिं तु माणुसनगस्स जोयणाणं सयसहस्सं ।।

सूरंतरिया चंदा, चंदंतरिया य दिणयरा दित्ता ।
दिवंतरलेसागा, सुहलेसा मंदलेसा य ।।

माणुसनगस्स बहिया एगससीपरिवारो –

गाहाओ –

अट्ठासीइं च गहा, अट्ठावीसं च हुंति णक्खत्ता णं ।
एगससी परिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ।।

छावट्ठि सहस्साइं, णव चेव सयाइंपंचसयराइं ।
एगससी परिवारो, तारागण कोडिकोडीणं ।।

अंतोमणुस्सखेत्ते जोइसियाणं उड्ढोववण्णगाइपरूवणं

प. अंतो मणुस्सखेत्ते जे चंदिम-सूरिया गह-णक्खत्त-तारारूवा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा, कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठितिया, गतिरतिया गतिसमावण्णगा ?

उ. ता ते णं देवा नो उड्ढोववण्णगा नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारट्ठितिया गइरइया गइसमावण्णा ।

उड्ढामुह-कलंबुयापुप्फसंठाणसंठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिएहिं बाहिराहिं य वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहयणट्टगीयवाइय-तंती तल-ताल-तुडिय-

घणमुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं, महया उक्किट्ठ सीहणादबोलकलकलरवेणं, अच्छं पव्वयरायं पयाहिणावत्तमंडलचारं मेरुं अणुपरियट्टंति ।

पुव्वइंदस्स चवणाणंतरं अण्णइंदस्स उववज्जणं

प. ता तेसिं णं देवाणं आहे इंदे चयइ से कयमिदाणिं पकरेइ ?

उ. ता चत्तारि पंच सामाणिया देवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव अण्णे इत्थ इंदे उववण्णे भवइ ।

प. ता इंदठाणे णं केवइएणं कालेणं विरहियं पण्णत्तं ?

उ. ता जहण्णेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे ।

माणुसखेत्तस्स बहियाजोइसियाणंउड्ढोववण्णगाइपरूवणं

प. ता बहिया णं माणुसखेत्तस्स जे चंदिमसूरिया गहगण-णक्खत्त-तारारूवा, ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठिइया, गइरईया गइसमावण्णगा ?

उ. ता ते णं देवा नो उड्ढोववण्णगा, नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, नो चारोववण्णगा, चारट्ठिइया नो गइरइया, नो गइसमावण्णगा ।

पगिट्ठगसंठाणसंठिएहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाहस्सिएहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंग-पडुप्प-वाइयरवेणं, महया उक्किट्ठसीहणाद-बोलकलकलरवेणं, दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।

सुहलेसा मंदलेसा मंदायवलेसा, चित्तंतरलेसा, अण्णोऽण्ण सभोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिया ते पदेसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ।

प. ता तेसिं णं देवाणं आहे इंदे चयइ, से कहमिदाणिं पकरेइ ?

उ. ता चत्तारि पंच सामाणिया देवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जाव अण्णे इत्थ इंदे उववण्णे भवइ ।

प. ता इंदठाणे णं केवइएणं कालेणं विरहियं पण्णत्ते ।

उ. ता जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासे ।

सेसाणं दीव-समुद्दाणं आयामाइ

१०१. ता पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ।

प. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. ता संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,
संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा ।

प. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवइया चंदा पभासेंसु वा, जाव केवइया तारागण-कोडिकोडीओ सोभं सोभिस्संति वा ।

उ. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव संखेज्जाओ तारागणकोडिकोडिओ सोभं सोभिस्संति वा ।

एवं एएणं अभिलावेणं --

१. वरुणवरे दीवे, २. वरुणोदे समुद्दे,

१. खीरवरे दीवे, २. खीरोदे समुद्दे,

१. घयवरे दीवे, २. घयोदे समुद्दे,

१. खोयवरे दीवे, २. खोयोदे समुद्दे,

१. नंदीसरवरे दीवे, २. नंदीसरे समुद्दे,

१. अरुणे दीवे, २. अरुणोदे समुद्दे,

१. अरुणवरे दीवे, २. अरुणवरोदे समुद्दे

१. अरुणवरोभासे दीवे, २. अरुणवरभासोदे समुद्दे,

१. कुंडले दीवे, २. कुंडलोदे समुद्दे,

१. कुंडलवरे दीवे, कुंडलवरोदे समुद्दे,

१. कुंडलवरोभासे दीवे, २. कुंडलवरभासोदे समुद्दे ।

सव्वेसिं विक्खंभ-परिक्खेवो जोइसाइं च पुक्खरोदसागरसरिसाइं ।

ता कुंडलवरभासोदं समुद्दं रुयए दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए, सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ।

प. ता रुयए णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प. ता रुयए णं दीवे केवइयं समचक्कवालविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं ?

उ. ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं,

असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा।

प. ता रुयगे णं दीवे केवइया चंदा पभासेंसु वा जाव केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु सोभिस्संति वा ?

उ. ता रुयगे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव असंखेज्जाओ तारागण-कोडि-कोडीओ सोभं सोभिस्संति वा।

एवं रुयगोदे समुद्दे,

१. रुयगवरे दीवे, २. रुयगवरोदे समुद्दे।

१. रुयगवरोभासे दीवे, २. रुयगवरभासोदे समुद्दे।

एवं तिपडोयारा दीव-समुद्दा णायव्वा,

जाव, १. सूरे दीवे, २. सूरोदे समुद्दे,

१. सुरवरे दीवे, २. सूरवरोदे समुद्दे,

१. सूरवरोभासे दीवे, २. सूरवरभासोदे समुद्दे।

सव्वेसिं विक्खंभ-परिक्खेवो जोइसाइं रुयगवरदीवसरिसाइं।

ता सूरवरोभासोदं णं समुद्दं देवे णामं दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ।

प. ता देवे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए, विसमचक्कवालसंठिए ?

उ. ता समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए।

प. ता देवे णं दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा।

प. ता देवे णं दीवे केवइया चंदा पभासेंसु वा जाव केवइया तारागण-कोडिकोडीओ सोभं सोभिस्संति वा ?

उ. ता देवे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभिस्संति वा।

एवं देवोदे समुद्दे —

१. णागे दीवे, २. णागोदे समुद्दे,

१. जक्खे दीवे, २. जक्खोदे समुद्दे,

१. भूए दीवे, २. भूओदे समुद्दे,

१. सयंभूरमणे दीवे, २. सयंभूरमणे समुद्दे ।

सव्वेसिं विक्खंभ-परिक्खेवे जोइसाइं देवदीवसरिसाइं ।

❖❖

बीसवाँ प्राभृत

चंदिम-सूरियाणं अणुभावो

१०२. प. ता कहं ते अणुभावे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

१. तत्थेगे एवमाहंसु—

ता चंदिम-सूरिया णं
नो जीवा, अजीवा,
नो घणा, झुसिरा,
नो बादरबोंदिधरा कलेवरा ।

नत्थि णं तेसिं १. उट्ठाणेइ वा, २ कम्मेइ वा, ३. बलेइ वा, ४. वीरिएइ वा, ५. पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।

नो विज्जुं लवंति, नो असणिं लवंति, नो थणियं लवंति ।

अहे य णं बादरे वाउकाए संमुच्छइ, संमुच्छित्ता विज्जुं पि लवंति, असणिं पि लवंति, थणियं पि लवंति "एगे एवमाहंसु" ।

१. एगे पुण एवमाहंसु—

ता चंदिम-सूरिया णं—
जीवा, नो अजीवा,
घणा, नो झुसिरा,
बादरबोंदिधरा, नो कलेवरा ।

अत्थि णं तेसिं १. उट्ठाणेइ वा, २. कम्मेइ वा, ३. बलेइ वा, ४. वीरिएइ वा, ५. पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।

ते विज्जुं पि लवंति, असणिं पि लवंति, थणियं पि लवंति, "एगे एवमाहंसु" ।

वयं पुण एवं वयामो

ता चंदिम-सूरिया णं देवाणं महिड्ढिया, महज्जुइया, महब्बला, महाजसा, महासोक्खा, महाणुभागा वरवत्थधरा, वरमल्लधरा, वराभरणधरा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति ।

राहु-कम्मपरूवणं

१०३. प. ता कहं ते राहुकम्मे ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा –

एक्केके एवमाहंसु—

१. अत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिण्हइ, "एगे एवमाहंसु" ।

एगे पुण एवमाहंसु

२. नत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिण्हइ, "एगे एवमाहंसु" ।

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

ता अत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिण्हइ, से एवमाहंसु –

ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे—

१. बुद्धंतेणं गिण्हित्ता, बुद्धंतेणंमुयइ,

२. बुद्धंतेणं गिण्हित्ता, मुद्धंतेणंमुयइ,

३. मुद्धंतेणं गिण्हित्ता, बुद्धंतेणंमुयइ,

४. मुद्धंतेणं गिण्हित्ता, मुद्धंतेणंमुयइ,

१. वामभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयइ,

२. वामभुयंतेणं गिण्हित्ता, दाहिणभुयंतेणं मुयइ,

३. दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयइ,

४. दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयइ ।।

तत्थ जे ते एवमाहंसु –

ता नत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा, सूरं वा गेण्हइ, ते एवमाहंसु—

तत्थ णं इमे पण्णरसकसिणपोग्गला, पण्णत्ता, तंजहा—१. सिंघाणए, २. जडिलए, ३. खरए, ४. खतए, ५. अंजणे, ६. खंजणे, ७. सीतले, ८. हिमसीतले, ९. केलासे, १०. अरुणाभे, ११. परिज्जए, १२. णभसूरए, १३. रुविलिए, १४. पिंगलए, १५. राहू ।

ता जया णं एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति, तया णं माणुसलोयंसि माणुसा एवं वयंति—"एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हइ" ।

एवं ता जया णं एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला णो सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति, णो खलु तया माणुसलोयंसि माणुसा एवं वयंति—"एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हइ, ते एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वयामो--

ता राहू णं देवे महिड्ढीए महज्जुइए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभावे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे वराभरणधारी।

राहुस्स णव णामाइं

ता राहुस्स णं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—१. सिंघाडए, २. जडिलए, ३. खरए, ४. खेत्तए, ५. दद्दुरे, ६. मगरे, ७. मच्छे, ८. कक्कडे, ९. कण्णसप्पे।

राहुस्स विमाणा पंचवण्णा

ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता, तंजहा—१. किण्हा, २. नीला, ३. लोहिया, ४. हालिद्दा, ५. सुक्किल्ला।

अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठावण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि हालिद्दए राहुविमाणे हालिद्दावण्णाभे पण्णत्ते।

अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा, सूरस्स वा लेस्सं पुरत्थिमेणं आवरित्ता पच्चत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं पुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ पच्चत्थिमेणं राहू।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणेणं आवरित्ता उत्तरेणं वीईवयइ, तया णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ, उत्तरेणं राहू।

एएणं अभिलावेणं पच्चत्थिमेणं आवरित्ता पुरत्थिमेणं वीईवयइ, उत्तरेणं आवरित्ता दाहिणेणं वीईवयई।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपुरत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं दाहिण-पुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ, उत्तरपच्चत्थिमेणं राहू।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा चंदस्स

वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपुरत्थिमेणं वीईवयइ, तया णं दाहिणपच्चत्थिमेणं चंदे वा, सूरे वा उवदंसेइ उत्तरपुरत्थिमेणं राहू ।

एएणं अभिलावेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपुरत्थिमेणं वीईवयई, उत्तरपुरत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीईवयइ ।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेस्सं आवरेत्ता वीईवयइ तया णं माणुसलोयंसि मणुस्सा एवं वयंति "राहुणा चंदे वा, सूरे वा गहिए ।"

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पासेण वीईवयइ, तया णं माणुसलोयंसि मणुस्सा एवं वयंति "चंदेण वा, सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा ।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा, सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पच्चोसक्कइ तया णं माणुसलोयंसि मणुस्सा एवं वयंति "राहुणा चंदे वा सूरे वा वंते ।"

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा, सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता मज्झं मज्झेणं वीईवयइ, तया णं माणुसलोयंसि मणुस्सा एवं वयंति "राहुणा चंदे वा, सूरे वा विइयरिए ।"

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता अहे अपच्चिम तपडिदिसिं चिट्ठइ, तया णं माणुसलोयंसि मणुस्सा एवं वयंति "राहुणा चंदे वा सूरे वा घत्थे ।"

राहुस्स दुविहत्तं

प. कइविहे णं राहू पण्णत्ते ?

उ. दुविहे पण्णत्ते, तंजहा ता ध्रुवराहू य पव्वराहू य ।

क. तत्थ णं जे से ध्रुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पण्णरसइ भागेणं भागं चंदस्स लेसं आवरेमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ, तंजहा—पढमाए पढमं भागं, जाव पण्णरसमीए पण्णरसमं भागं ।

चरमे समए चंदे रत्ते भवइ,

अवसेसे समए चंदे रत्ते य, विरत्ते य भवइ ।

तमेव सुक्कपक्खे उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठइ, तंजहा पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसमीए पण्णरसमं भागं ।

चरमे समए चंदे विरत्ते य भवइ,

अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ ।

ख. तत्थ णं जे ते पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं,
उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ।

चंदस्स ससी-अभिहाणं

१०४. प. ता कहं ते चंदे ससी चंदे ससी आहिए ? ति वएज्जा ।

उ. ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंड-मत्तोवगरणाइं ।

अप्पणा वि णं चंदे देवे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभे पियदंसणे सुरूवे ।
ता एवं खलु चंदे ससी, चंदे ससी आहिए त्ति वएज्जा ।

सूरस्स आइच्चाभिहाणं

प. ता कहं ते सूरिए आइच्चे सूरिए आइच्चे आहिए ? ति वएज्जा ।

उ. ता सूरादीया समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूइ वा थोवेइ वा, जाव उस्सप्पिणी, ओसप्पिणीइ वा । ता एवं खलु सूरे आइच्चे सूरे आइच्चे आहिए त्ति वएज्जा ।

चंद-सूराईणं काम-भोगपरूवणं

१०५. प. ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ. ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा – १. चंदप्पभा, २. दोसिणाभा, ३. अच्चिमाली, ४. पभंकरा ।

जहा हेट्ठा तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं ।
एवं सूरस्स वि णेयव्वं ।

प. ता चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ?

उ. ता से जहाणामए केई पुरिसे,

पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थे,
पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थाए भारियाए सद्धिं,
अचिरवत्तविवाहे,

अत्थत्थी अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवसिए,

से णं ततो लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियगघरं हव्वमागए,

पहाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पवेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए,

अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे,

मणुण्णं थालीपाकसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे,

तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अतो सोवत्तकम्मे,

बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोअ-चिल्लियतले बहुसमसुविभत्तभूमिभाए, मणि-रयण-पण्णासियंधयारे ।

कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क धूव-मघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए, गंधवट्टिभूए,

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि दुहओ उण्णए मज्झे णयगंभीरे उभओ सालिंगणवट्टिए, उभओ पण्णत्तगंडविब्बोयणे,

सुरम्मे गंगापुलिण-वालुआ-उद्दाल-सालिसए सुविरइयरयत्ताणे, ओयविय-खोमिय-खोमदुगूलपट्टपडिच्छायणे, रत्तंसुयसंवुडे,

सुरम्मे आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूलफासे, सुगंधवर-कुसुमचुण्ण-सयणोवयारकलिए,

ताए तारिसाए भारियाए सद्धिं सिंगारागारचारुवेसाए संगत-हसित-भणित-चिट्ठित संलाव-विलास-णिउणजुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्ताविरत्ताए मणोऽणुकूलाए सद्धिं एगंतरतिपसत्ते अण्णत्थ कत्थई मणं अकुव्वमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरिज्जा ।

प. ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसए सायासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उ. उरालं समणाउसो ।

ता तस्स णं पुरिसस्स कामभोगेहिंतो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव वाणमंतराणं देवाणं कामभोगा,

वाणमंतराणं देवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगा,

असुरिंदवज्जियाणं देवाणं काम-भोगेहिंतो एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा,

असुरकुमाराणं देवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव गहगण-णक्खत्त-तारा-रूवाणं कामभोगा,

गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव चंदिम-सूरियाणं देवाणं कामभोगा,

ता एरिसए णं चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो काममोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ।

अट्ठासीई महग्गहा

१०६. तत्थ खलु इमे अट्ठासीई महग्गहा पण्णत्ता, तंजहा—

१. इंगालए, २. वियालए, ३. लोहियक्खे, ४. सणिच्छरे, ५. आहुणिए, ६. पाहुणिए, ७. कणे, ८. कणए, ९. कणकणए, १०. कणविताणए, ११. कणसताणए।

१२. सोमे, १३. सहिए, १४. अस्सासणे, १५. कज्जोयए, १६. कव्वडए, १७. अयकरए, १८. दुंदुभए, १९. संखे, २०. संखवण्णे, २१. संखवण्णाभे, २२. कंसे।

२३. कंसवण्णे, २४. कंसवण्णाभे, २५. णीले, २६. णीलोभासे, २७. रुप्पी, २८. रुप्पोभासे, २९. भासे, ३०. भासरासी, ३१. तिले, ३२. तिलपुप्फवण्णे, ३३. दगे।

३४. दगपंचवण्णे, ३५. काले, ३६. काकंधे, ३७. इंदग्गी, ३८. धूमकेऊ, ३९. हरी, ४०. पिंगले, ४१. बुहे, ४२. सुक्के, ४३. बहस्सई, ४४. राहू।

४५. अगत्थी, ४६. माणवगे, ४७. कासे, ४८. फासे, ४९. धूरे, ५०. पमूहे, ५१. वियडे, ५२. विसंधी, ५३. णियल्ले, ५४. पयल्ले, ५५. जडियाइल्ले।

५६. अरुणे, ५७. अग्गिल्लए, ५८. काले, ५९. महाकाले, ६०. सोत्थिए, ६१. सोवत्थिए, ६२. वद्धमाणगे, ६३. पलंबे, ६४. णिच्चालोए, ६५. णिच्चुज्जोए, ६६. सयंपभे।

६७. ओभासे, ६८. सेयंकरे, ६९. खेमंकरे, ७०. आभंकरे, ७१. पभंकरे, ७२. अपराजिए, ७३. अरए, ७४. असोगे, ७५. वीयसोगे, ७६. विमले, ७७. वियत्ते।

७८. वितथे, ७९. विसाले, ८०. साले, ८१. सुव्वए, ८२. अनियट्टी, ८३. एगजडी, ८४. दुजडी, ८५. करकरिए, ८६. रायग्गले, ८७. पुप्फकेऊ, ८८. भावकेऊ[1]।

---

१. स्थानांग अ. २, उ. ३, सू. ९५ में जंबूद्वीप के दो चन्द्रों वो सूर्यों के ८८ ग्रहों की संख्या दो दो की दी गई है।

संगहणीगाहाओ

१. इंगालए, २. वियालए, ३. लोहियक्खे, ४. सणिच्छरे चेव ।
५. आहुणिए, ६. पाहुणिए, ७-११. कणगसनामा उ पंचेव ।।

२. १२. सोमे, १३. सहिए, १४. आसासणे य, १५. कज्जोवए य, १६. कव्वडए ।
१७. अयकरए, १८. दुंदुहए, १९-२१. संखसनामाओ तिन्नेव ।।

३. २२-२४. तिन्नेव कंसनामा, २५-२६. णीला, २७-२८. रुप्पो य होंति चत्तारि ।
२९-३०. भास, ३१-३२. तिलपुप्फवण्णे, ३३-३४. वग-पणवण्णे य, ३५. काय, ३६. कागंधे ।।

४. ३७. इंदग्गि, ३८. धूमकेऊ, ३९. हरि, ४०. पिंगलए, ४१. बुहे य, ४२. सुक्के य ।
४३. बहस्सई, ४४. राहू, ४५. अगत्थी, ४६. माणवए, ४७. कास, ४८. फासे य ।।

५. ४९. धूरे, ५०. पमुहे, ५१. विवडे, ५२. विसंधि, ५३. णियले, ५४. तहा पयल्ले य ।
५५. जडियाइलए, ५६. अरुणे, ५७. अग्गिल्ल, ५८. काले, ५९. महाकाले य ।।

६. ६०. सोत्थिय, ६१. सोवत्थिय, ६२. वद्धमाणगे, ६३. तहा पलंबे य ।
६४. णिच्चालोए, ६५. णिच्चुज्जोए, ६६. सयंपभे, ६७. चेव ओभासे ।।

७. ६८. सेयंकर, ६९. खेमंकर, ७०. आभंकर, ७१. पभंकरे व बोद्धव्वे ।
७२. अरए, ७३. विरए य तहा, ७४. असोगे, ७४. वीयसोगे य ।।

८. ७६. विमल, ७७. वितत्त, ७८. वितये, ७९. विसाल, ८०. तह साल, ८१. सुव्वए चेव ।
८२. अनियट्टी, ८३. एगजडी य, ८४. होइ बिजडी य बोद्धव्वे ।।

९. ८५. करकरए, ८६. रायग्गल, ८७. बोद्धव्वे पुप्फ, ८८. भावकेऊ य ।
अट्ठासीई गहा खलु णेयव्वा आणुपुव्वीए ।।

उवसंहारो

१०७. इह एस पाहुडत्था, अभव्वजणहियमदुल्लाहा इणमो ।
उक्कित्तिया भगवई, जोइसरायस्स पण्णत्ती ।।

एस गहियाऽवि संता, यद्धे गारविय माणि-पडिणीए ।
अबहुस्सए ण देया, तव्विवरीए भवे देया ।।

सद्धा-धिति-उट्ठाणुच्छाह-कम्म-बल-विरिय-पुरिसकारेहिं ।
जो सिक्खिओऽवि संतो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ।।

सो पवयण-कुल-गण-संघबाहिरो णाण-विणय-परिहीणो ।
अरहंत-थेर-गणहरमेरं किर होइ वोलीणो ।।

तम्हा धितिउट्ठाणुच्छाह कम्म-बल-विरियसिक्खिअं णाणं ।
धारेयव्वं णियमा ण य अविणएसु दायव्वं ।।

वीरवरस्स भगवओ, जर-मरण-किलेस-दोसरहियस्स ।
वंदामि विणयपणओ, सोक्खुप्पाए सया पाए ।।

।। सूरियपण्णत्ती समत्ता ।।

सुयथविरपणीयं चंदपण्णत्तिसुत्तं

नमो अरिहंताणं ॥

जयइ नव-नलिण-कुवलय-विगसिय-सयवत्त-पत्तलदलच्छो ।
वीरो गइंद-मयगल-ललिय-गयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥
नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयग-परिवंदिए गयकिलेसे ।
अरिहे सिद्धायरिय-उवज्झाए सव्वसाहू य ॥ २ ॥
फुड-वियड-पागडत्थं, वुच्छं पुव्व-सुय-सार-नीसंदं ।
सुहुमं गणिणोवइट्ठं, जोइस-गणरायपण्णत्ति ॥ ३ ॥
नामेण इंदभूइत्ति गोयमो वंदिऊण तिविहेणं ।
पुच्छइ जिणवर-वसहं, जोइसरायस्स पण्णत्तिं ॥ ४ ॥
कइ मंडलाइ वच्चइ १, तिरिच्छा किं च गच्छई २ ।
ओभासइ केवइयं ३, सेयाइ किं ते संठिई ४ ॥ ५ ॥
कहिं पडिहया लेसा ५, कहं ते ओयसंठिई ६ ।
के सूरियं वरयते ७, कहं ते उदयसंठिई ८ ॥ ६ ॥
कइकट्ठा पोरिसीछाया ९, जोगेसि किं ते आहिए १० ।
किं ते सवच्छराणाई ११, कइ संवच्छराइ य १२ ॥ ७ ॥
कहं चंदमसो वुड्ढी १३, कया ते दो (जो) सिणा बहू १४ ।
के सिग्घगई वुत्ते १५, किं ते दो (जो) सिणलक्खणं १६ ॥ ८ ॥
चयणोववाय १७, उच्चत्ते १८, सूरिया कइ आहिया १९ ।
अणुभावे केरिसे वुत्ते २०, एवमेयाइं वीसई ॥ ९ ॥ सूत्र १ ॥
वड्ढोवड्ढी १, भुहुत्ताण-मद्धमंडलसंठिई २ ।
के ते चिण्णं परियरइ ३, अंतरं किं चरंति य ४ ॥ १० ॥
ओगाहइ केवइयं ५, केवइयं च विकंपइ ६ ।
मंडलाण य संठाणे ७, विक्खंभो ८, अट्ठ पाहुडा ॥ ११ ॥ सूत्र २ ॥
छप्पंच य सत्तेव य, अट्ठ य तिन्नि य हवंति पडिवत्ती ।
पढमस्स पाहुडस्स उ, हवंति एयाओ पडिवत्ती ॥ १२ ॥ सूत्र ३ ॥

पडिवत्तीओ उवए, अदुव अत्थमणेसु य ।
भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ।। १३ ।।

निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य ।
चुलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ।। १४ ।।

उदयम्मि अट्ठ भणिया, भेयग्घाए दुवे च पडिवत्ती ।
चत्तारि मुहुत्तगईए, होंति सइयम्मि पडिवत्ती ।। १५ ।। सूत्र ४

आवलिय १, मुहुत्तग्गे २, एवंभागा ३ य, जोगस्सा ४ ।
कुलाइं ५, पुण्णमासी ६ य, संनिवाए ७ य संठिई ८ ।। १६ ।।

तारग्गं ९, च णेता य, १०, चंदमग्गसि ११ यावरे ।
देवताणं य अज्झयणा १२, मुहुत्ताणं नामया १३ इय ।। १७ ।।

दिवसा राई य वुत्ता १४ य, तिहि १५, गोत्ता १६ भोयणाणि य १७ ।
आइच्चवार १८, मासा १९ य, पंच संवच्छरा २० इय ।। १८ ।।

जोइसस्स य दाराइं २१, नक्खत्तविचए २२ विय ।
दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुड-पाहुडा ।। १९ ।। सूत्र ५ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव पासादीया, वण्णओ ।। १ ।।

तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं माणिभद्दे णामं चेइए होत्था चिराईए, वण्णओ ।। २ ।।

तीसे णं मिहिलाए णयरीए जियसत्तूणामं राया, धारिणी देवी, वण्णओ ।। ३ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं तंमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया जाव राया जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।। ४ ।। सूत्र ६ ।।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमगोत्ते णं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी ।। सूत्र ७ ।।

प. ता कहं ते वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणं आहितेत्ति वदेज्जा ?

उ. गोयमा ! ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागो मुहुत्तस्स आहितेत्ति वदेज्जा ।। सूत्र ८ ।।

जाव ....

इय एस पागडत्था, अभव्वजणहियय-दुल्लभा इणमो ।
उक्कित्तिया भगवती जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥ १ ॥

एस गहियावि संतो, यद्धे गारवियमाणपडिणीए ।
अबहुस्सुए य देया, तव्विवरीए भवे देया ॥ २ ॥

(सद्धा) धिइउट्ठाणुच्छाह-कम्मबलविरिय-पुरिसकारेहिं ।
जो लिक्खिओवि संतो, अभायणे पक्खिविज्जाहि ॥ ३ ॥

सो पवयण-कुल-गण-संघबाहिरो णाणविणय-परिहीणो ।
अरहंत-थेरगणहरमेरं किर होइ वोलीणो ॥ ४ ॥

तम्हा धिइउट्ठाणुच्छाह-कम्मबलवीरियसिक्खियं नाणं ।
धारेयव्वं णियमा, य य अविणएसु दायव्वं ॥ ५ ॥

वीरवरस्स भगवतो, जरमरण-किलेस-दोसरहियस्स ।
वंदामि विणयपणतो सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ सूत्र १०७ ॥

॥ वीसइमं पाहुडं समत्तं ॥

॥ चंदपन्नत्ती समत्ता ॥

परिशिष्ट

श्री सूर्य-चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का गणित विभाग

सूत्रसंख्या ८

मुहूर्त के परिमाण की हानि-वृद्धि : नक्षत्रमास के मुहूर्त का परिमाण

एक युग के अहोरात्र १८३० होते हैं। एक युग के नक्षत्रमास की संख्या ६७ है। एक नक्षत्रमास के दिवस १८३०÷६७ करने से २७ दिन २१/६७ मुहूर्त प्रमाण होता है। वह इस प्रकार

```
६७)१८३०(२७
    १३४
    ----
    ४९०
    ४६९
    ----
      २१
```

२१/६७ के मुहूर्त करने के लिए ३० से गुणा करने पर २१ × ३० = ६३० होते हैं। उनको ६७ से भाग देने पर (६३०÷६७) ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होते हैं। अर्थात् नक्षत्रमास २७ दिवस ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होता है। उसके मुहूर्त करने पर २७ × ३० = ८१० होते हैं। उनमें ९ जोड़ने से ८१९ होते हैं। अतएव नक्षत्रमास के मुहूर्तों की संख्या ८१९। २७/६७ होती है।

सूर्यमास के मुहूर्तों की संख्या

एक युग के दिवस १८३० हैं और एक युग के सूर्यमास ६० हैं। सूर्यमास के दिवस करने के लिए १८३० को ६० से भाग देने पर ३० दिन और ३०/६० होंगे। उनके मुहूर्त करने के लिए सूर्यमास के दिनों को ३० से गुणा करने पर ३० × ३० = ९०० होते हैं और ३०/६० को ३० से गुणा करने पर ३० × ३०÷६० करने पर १५ मुहूर्त होते हैं। इनको ९०० में जोड़ने पर ९१५ मुहूर्त होते हैं। अर्थात् सूर्यमास के मुहूर्तों की संख्या ९१५ होती है।

चन्द्रमास के मुहूर्तों की संख्या

एक युग के चन्द्रमास ६२ होते हैं और एक युग के दिवस १८३० हैं। चन्द्रमास के दिन बनाने के लिए १८३०÷६२ करने से २९ दिन ३२/६२ प्राप्त होते हैं। इनके मुहूर्त बनाने के लिए ३० से गुणा करने पर २९ × ३० = ८७० होंगे और ३२/६२ × ३० करने पर ९६०/६२ होंगे एवं मुहूर्त के

रूप में १५ मुहूर्त ३०/६२ होंगे। इस संख्या को पूर्वोक्त ८७० में मिलाने पर ८८५ मुहूर्त पूर्ण एवं ३०/६२ मुहूर्त की संख्या होगी।

कर्ममास के मुहूर्तों की संख्या

एक युग में ३० दिन का एक कर्ममास होता है। उसके मुहूर्त बनाने के लिए ३० से गुणा करने पर ३० × ३० = ९०० होते हैं। यह कर्ममास के मुहूर्तों की संख्या है।

मास	मुहूर्तों की संख्या
१ नक्षत्रमास	८१९ × २७/६७ मु.
२ सूर्यमास	९१५ मु.
३ चन्द्रमास	८८५। ३०/६२ मु.
४ कर्ममास	९०० मु.

॥ प्रथम प्राभृत का आठवां सूत्र समाप्त ॥

सूत्रसंख्या ९, १०, ११

३६६ रात्रि-दिवस का प्रमाण

सर्वाभ्यंतरमंडल के सर्वबाह्य मंडल में गमन करने पर एवं सर्वबाह्य मंडल के सर्वाभ्यंतर मंडल में गमन करने पर सूर्य को (३६६ रात्रि दिवस) लगते हैं। —सूत्र सं. ९

सूर्य ३६६ दिवस में १८४ मंडल में संचार करता है। —सूत्र सं. १०

रात्रि-दिवस की हानि-वृद्धि का प्रमाण

सूर्य ३६६ दिवस में सर्वाभ्यन्तर मंडल में से सर्वबाह्य मंडल में, सर्वबाह्य मंडल में से सर्वाभ्यन्तर मंडल में परिक्रमा करता है। सर्वाभ्यन्तर मंडल में से सर्वबाह्य मंडल तक १८३ दिवस में परिक्रमा करता है। जब सूर्य सर्वाभ्यन्तर मंडल में होता है तब १८ मुहूर्त का दिन एवं १२ मुहूर्त की रात्रि होती है। सर्वाभ्यन्तर मंडल में से सर्वबाह्य मंडल तक जाने में १८३ दिन होते हैं और उस समय में ६ मुहूर्त की हानि-वृद्धि होती है।

एक दिवस में मुहूर्त के २/६१ भाग की वृद्धि-हानि होती है। अर्थात् दिवस के परिमाण में मुहूर्त के २/६१ भाग की हानि होती है और रात्रि के परिमाण में मुहूर्त के २/६१ भाग की वृद्धि होती है।

सूर्य जैसे-जैसे बाह्यमंडल की ओर गमन करता है। वैसे-वैसे दिवस के परिमाण में हानि और रात्रि के परिमाण में वृद्धि होती है।

सूर्य जब सर्वबाह्यमंडल में वर्तमान होता है तब १२ मुहूर्त का दिन और १८ मुहूर्त की रात्रि होती है। सूर्य जैसे-जैसे सर्वाभ्यन्तरमंडल की तरफ गमन करता है वैसे-वैसे दिन में वृद्धि और रात्रि में हानि होती है।

प्रथम ६ मास में दिवस घटता है और रात्रि बढ़ती है। दूसरे ६ मास में दिवस बढ़ता है और रात्रि घटती है।

हानि-वृद्धि का प्रमाण मुहूर्त के २/६१ भाग जितना होता है।—सूत्र ११

।। प्रथम प्राभृत का प्रथम प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।।

तृतीय प्राभृत-प्राभृत में 'सयमेगं चोयालं' गाथा अपूर्ण होने से अर्थ नहीं कर सकते हैं। शेष व्यवच्छेद है। इस प्रकार श्री अमोलक ऋषिजी ने सूर्यप्रज्ञप्ति की भाषा में लिखा है तथा टीकाकार मलयगिरिकृत टीका से भी यथार्थ गणित १४४ आता नहीं है। जिनके ध्यान में गणित की प्रक्रिया हो, यदि वे बताने की कृपा करेंगे तो श्रुतसेवा मानी जायेगी।

।। प्रथम प्राभृत का तृतीय प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।।

सूत्र १५

दो सूर्यों के (भरत और ऐरवत के) संचरण समय में परस्पर अन्तर

संचरण करते समय दोनों सूर्यों के बीच प्रत्येक मंडल में ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर होता है। जब दोनों सूर्य सर्वाभ्यन्तरमंडल में वर्तमान हों तब दोनों सूर्यों के बीच ९९६४० योजन अन्तर होता है।

जम्बूद्वीप क्षेत्र एक लाख योजन के विष्कम्भ वाला है। प्रत्येक सूर्य १८० योजन अवगाहन करके संचार करता है।

१००००० योजन में से दोनों सूर्य का अवगाहन क्षेत्र १८० और १८० योजन कुल मिलाकर ३६० योजन कम करने पर ९९६४० योजन शेष रहते हैं। जो सर्वाभ्यन्तरमंडल में वर्तमान दोनों सूर्यों का अन्तर होता है।

१८४ सूर्यमंडल के १८३ अन्तर होते हैं और एक मंडल का दूसरे मंडल तक २ योजन ४८/६१ भाग का अन्तर होता है। अतः जब सूर्य एक मंडल से दूसरे मंडल में जाता है तब दोनों ओर के मंडल के अन्तर २ योजन ४८/६१ और २ योजन ४८/६७ का जोड़ करने पर ५ योजन ३५/६१ भाग होता है।

सर्वबाह्यमंडल में वर्तमान दोनों सूर्यों का परस्पर अन्तर

दोनों सूर्यों की अपेक्षा प्रतिमंडल ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर पूर्व में बताया है। सर्वाभ्यन्तर मंडल से सर्वबाह्यमंडल १८३ वां होता है। १८३ को ५ योजन ३५/६१ से गुणा करने पर $\frac{३ \times ३४०}{६१}$ इस प्रकार १०२० योजन अन्तर आता है। इस १०२० योजन अन्तर को ९९६/४० में मिलाने पर १००६६० योजन होता है। जो सर्वबाह्यमंडल में वर्तमान दो सूर्यों का परस्पर अन्तर है।—सूत्र १५

।। प्रथम प्राभृत का चौथा प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।।

एक अहोरात्र में सूर्य का संचरण-क्षेत्र

सूर्य एक अहोरात्र में २ योजन ४८/६१ भाग संचरण करता है। सूर्य १८३ दिवस में ५१० योजन संचरण करता है, जिससे एक दिवस में २ योजन ४८/६१ भाग संचरण करता है।

१८३ मंडल का १८३ दिवस में सूर्य संचरण करता है। एक दिवस में एक मंडल में संचार करता है। सूर्य के सर्वमंडलों का संचरण क्षेत्र ५१० योजन का है। एक मंडल का एक दिवस का संचरण २ योजन ४८/६१ भाग होता है। —सूत्र १८

॥ प्रथम प्राभृत का छठा प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र २०

प्रत्येक मंडल का विष्कम्भ-आयाम

जब सूर्य सर्वाभ्यन्तरमंडल में हो तब १ लाख योजन का ४८/६१ भाग बाहल्य से ९९६४० योजन आयाम-विष्कम्भ से ३१५०८९ योजना परिक्षेप से संक्रमण करता है तब १८ मुहूर्त का उत्कृष्ट दिवस और जघन्य १२ मुहूर्त की रात्रि होती है।

जब सूर्य सर्वाभ्यन्तरमंडल के अनन्तरवर्ती मंडल में संक्रमण करता है तब १ योजन का ४८/६१ भाग बाहल्य से ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग आयाम विष्कम्भ से, ३१५१०७ योजन किंचित् विशेष न्यून परिक्षेप से चार (गति) करता है। तब दिवस और रात्रि का प्रमाण सर्वाभ्यन्तर-मंडल के समान ही होता है।

सर्वाभ्यन्तरमंडल में आयाम-विष्कम्भ का प्रमाण

एक सूर्य १८० योजन अवगाहन करके गति करता है। जम्बूद्वीप के दोनों सूर्य की अपेक्षा ३६० योजन अवगाहना जम्बूद्वीप क्षेत्र के १ लाख योजन प्रमाण में से कम करने पर ९९६४० योजन रहते हैं। जो सर्वाभ्यन्तरमंडल का आयाम-विष्कम्भ है।

सूत्र २०

सर्वाभ्यन्तरमंडल का परिक्षेप

सर्वाभ्यन्तरमंडल का परिक्षेप (३१५०८९) योजन है। वह इस प्रकार है—

(सर्वाभ्यन्तरमंडल का विष्कम्भ)^{२} × १० इस सूत्र से परिक्षेप का विचार करने पर निम्न प्रकार से होगा।

) (९९६४०)^{२} × १०

) ९९२८१२९६०० × १०

) ९९२८१२९६०००

```
          )| | | | | | |
           ९९२८१२९६०००
           ३१५०८९ योजन परिक्षेप
          )| | | | | | |
       ३   ९२२८१२९६०००
     +३    ९
     ——    —
     ६१    ०
     +१    ६१
     ——    ——
     ६२५   ३१८१
     +५    ३१२५
     ———   ————————
    ६३००८  ००५६२९६०
      +८     ५०४०६४
    ———    ————————
    ६३०१६९    ०५६८९६००
      +९       ५६७१५२१
    ———    ————————
    ६३०१७८     ००१८०७९
```

उक्त प्रकार से गणित करने पर सर्वाभ्यंतरमंडल का परिक्षेप ३१५०८९ योजन होता है और १८०७९ शेष रहते हैं।

प्रत्येक मंडल का परिक्षेप

प्रत्येक मंडल में ५ योजन ३५/६१ भाग आयाम-विष्कंभ में वृद्धि होती है। तदनुसार सर्वाभ्यंतरमंडल के अनन्तरवर्ती मंडल का आयाम विष्कंभ ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग है। प्रत्येक मंडल का परिक्षेप निकालने के लिए (जानने के लिए) ५ योजन के इकसठिया भाग करने पर ५ × ६१ = ३०५ आते हैं। उनमें ३५ भाग और मिलाने पर ३४० होते हैं।

परिक्षेप निकालने की विधि—

```
(विष्कंभ का)² × १०
) (३४०)² × १०
) ११५६०० × १०
) ११५६०००
```

```
        १०७५
        | | | |
    १  )११५६०००
    १   १
 ------------------
  २०७   ०१५६०
    ७    १४४९
 ------------------
 २१४५   ०१११००
    ५    १०७२५
 ------------------
 [illegible]   ०[illegible]३५
```

१०७५ के योजन बनाने के लिए ६१ से भाग देने पर [१०७५÷६१] १७ योजन ३८/६१ आएंगे। प्रत्येक मंडल में १७ योजन ३८/६१ भाग परिक्षेप बढ़ता है।

प्रत्येक परिमंडल का परिक्षेप व्यवहार से १८ योजन और निश्चय से १७ योजन ३८/६१ भाग है। प्रत्येक मंडल का परिक्षेप में १८ योजन मिलाने पर दूसरे मंडल का परिक्षेप होता है। ऐसा करने पर सूर्य संक्रमण करता-करता सर्वबाह्य मंडल में आता है तब आयाम विष्कंभ १००६६० होता है।

सर्वबाह्य मंडल का परिक्षेप ३१८३१४.८६९ है।

व्यवहार से ६१८३१५ योजन होता है।

सर्वबाह्य मंडल का आयाम-विष्कंभ-परिक्षेप निकालने की विधि

प्रत्येक मंडल में ५ योजन ३५/६१ भाग बढ़ता है जिससे सर्वबाह्यमंडल में कितनी वृद्धि होगी ?

परिमंडल १८३ होने से ५ योजन ३५/६१ भाग से गुणा करने पर १८३ मंडल × ५ योजन = ९१५ योजन होते हैं।

३५ भाग × १८३ मंडल = ६४०५ होते हैं। इनके योजन बनाने के लिए ६४०५ को ६१ से भाग देने पर १०५ योजन आते हैं। पूर्वोक्त ९१५ योजन में १०५ योजन मिलाने से १०२० योजन होते हैं। सर्वाभ्यंतरमंडल के आयाम ९९६४० योजन में १०२० योजन जोड़ने से सर्वबाह्यमंडल का १००६६० योजन आयाम होता है।

सर्वबाह्य मंडल का परिक्षेप ३१८३१५ योजन है। जिसको प्राप्त करने की विधि इस प्रकार है—

सर्वबाह्यमंडल का परिक्षेप निकालने की विधि

परिक्षेप निकालने के लिए।

) (आयाम)^{२} × १०

) (१००६००)^{२} × १०

) १०१३२४३५६०० × १०

३१८३१४ . ८६९ योजन परिक्षेप

) | | | |

३	१०१३२४३५६०००
३	९
६१	११३
१	६१
६२८	५२२४
८	५०२४
६३६३	०२००३५
३	१९०८९
६३६६१	००९४६६०
१	६३६६१
६३६६२४	३०९९९००
४	२५४६४९६
६३६६२७८	०५५३४०४००
८	५०९३०३०४
६३६६२९६६	०४४१००९६००
६	३८१९७५७९६
६३६६२९७२९	५९०३३८०४००
९	५६२९६६७५६१

इस प्रकार ८६९ हजार से कम हैं, परन्तु 'अर्धादूर्ध्वमेकं ग्राह्यम्' इस न्याय से ३१४ के स्थान पर ३१५ ग्रहण किये हैं। इस प्रकार सर्वबाह्यमंडल का परिक्षेप ३१८३१५ योजन (व्यवहार से) होता है।

सर्वाभ्यंतरमंडल का परिक्षेप ३१५०८९ योजन है। पूर्व में बताई गई रीति से प्रत्येक मंडल के परिक्षेप में १७ योजन ३८/६१ भाग की वृद्धि होती है तो १८३ मंडल में कितने योजन परिक्षेप की वृद्धि होती है ?

१८३ मंडल × १७ योजन = ३१११ योजन होते हैं।

१८३ मंडल × ३८ (योजन का भाग) करने पर ६९५४ भाग आयेंगे।

६९५४ भाग के योजन करने के लिये ६१ से भाग देने पर ११४ योजन होंगे।

३१११ योजन में ११४ योजन मिलाने पर ३२२५ योजन १८३ परिमंडल की परिक्षेप वृद्धि होती है।

सर्वाभ्यंतरमंडल के परिक्षेप ३१५०८९ योजन में ३२२५ योजन के मिलाने पर सर्वबाह्य मंडल का परिक्षेप ३१८३१४ होगा।

इस सूत्र के मूल पाठ में ३१८३१५ योजन सर्वबाह्यमंडल का परिक्षेप कहा है। वह व्यवहार से समझना चाहिये। क्योंकि पूर्व में प्रत्येक मंडल का परिक्षेप निकालने पर ३७५ शेष बढ़ते हैं। उनको १८३ मंडल से गुणा करने पर ६८६२५ आते है। इस संख्या को २१५० से भाग देने पर ३१ आते हैं। जो ६१ के अर्धभाग की अपेक्षा विशेष होने से व्यवहार से पूर्ण मानकर ३१८३१५ कहे हैं।

प्रत्येक मंडल का अंतर २ योजन ४८।६१ भाग है। दोनों सूर्य के मंडल का अन्तर ५ योजन ३५/६१ भाग है। सर्वमंडल का क्षेत्र ५१० योजन है। — सूत्र २०

।। प्रथम प्राभृत का अष्टम प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।।

सूत्र २३

सूर्य की प्रत्येक मंडल में प्रतिमुहूर्त्त की गति

सूर्य जब मंडल में संक्रमण करता है तब अपनी एक विशेष गति से संक्रमण करता है। भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र के दोनों सूर्य अपनी विशिष्टगति से संक्रमण करके ६० मुहूर्त्त में १ मंडल की परिक्रमा पूर्ण करते हैं।

अर्थात् २ अहोरात्र में दोनों सूर्य १ मंडल की परिक्रमा पूर्ण करते हैं।
प्रत्येक मुहूर्त्त की सूर्य की विशेष गति इस सूत्र से ज्ञात की जा सकती है—
१ मुहूर्त्त की गति = मंडल की परिधि ÷ २ अहोरात्र के मुहूर्त्त
१ अहोरात्र के ३० मुहूर्त्त के अनुसार २ अहोरात्र के ६० मुहूर्त्त होते हैं।
सर्वाभ्यंतरमंडल की परिधि ३१५०८९ योजन है।
सर्वाभ्यंतरमंडल की परिक्रमा दोनों सूर्य ६० मुहूर्त्त में पूर्ण करते हैं।

सर्वाभ्यंतरमंडल में सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति

सर्वाभ्यंतरमंडल की परिधि ÷ ६० मुहूर्त्त = १ मुहूर्त्त की गति।

३१५०८९ योजन ÷ ६० मुहूर्त्त = ५२५१ योजन २९/६० भाग सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति है।

प्रत्येक मंडल की परिधि में व्यवहार से १८ योजन का अंतर होता है। अर्थात् सर्वाभ्यंतर मंडल की परिधि में १८ योजन मिलाने पर सर्वाभ्यंतरमंडल के अनन्तरवर्ती दूसरे में उसकी परिधि आती है। तदनुसार दूसरे मंडल की परिधि में १८ योजन मिलाने पर तीसरे मंडल की परिधि आती है।

इस प्रकार प्रत्येक मंडल की परिधि ज्ञात की जा सकती है।

प्रत्येक मंडल में सूर्य की एक मुहूर्त्त में कितनी गतिवृद्धि होती है, यह जानने के लिये इस सूत्र का उपयोग करना चाहिये-

प्रत्येक मंडल में परिधि की वृद्धि ÷ ६० मुहूर्त्त।

प्रत्येक मंडल में १८ योजन परिधि में वृद्धि होती है। उसे ६० मुहूर्त्त से भाग देने पर १ मुहूर्त्त में होने वाली गतिवृद्धि प्राप्त होगी।

१८ योजन प्रत्येक मंडल की परिधि में होने वाली वृद्धि ÷ ६० मुहूर्त्त = १८।६० योजन १ मुहूर्त्त में गति में वृद्धि होती है।

सूर्य के दृष्टिपथ क्षेत्र का अंतर ज्ञात करने की विधि

उस-उस मंडल में विद्यमान सूर्य दृष्टिपथ के क्षेत्र का अंतर ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिए -

सूर्य की उस-उस मंडल में एक मुहूर्त्त की गति × दिनमान का अर्धभाग।

सर्वाभ्यन्तर मंडल में सूर्य के दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण ४७२६३ योजन २१।६० भाग है। उसको जानने के लिये उपर्युक्त सूत्र का उपयोग करने पर - ५२५१ योजन २९।६० भाग।

(सर्वाभ्यंतरमंडल में सूर्य की एक मुहूर्त्त की गति) × ९ मुहूर्त्त (दिनमान का अर्धभाग)

$$= \frac{३१५०८९ \times ९}{६०} \qquad = \frac{२८३५८०१}{६०}$$

= ४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यंतर मंडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र है।

सर्वाभ्यंतर मंडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण जानने की दूसरी विधि

$$\frac{\text{उस-उस मंडल की परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$\frac{\text{सर्वाभ्यंतरमंडल की परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$\frac{३१५०८९ \times ९}{६०}$$

$= \frac{२८३५८०१}{६०}$

= ४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यंतरमंडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र है।

सर्वबाह्यमंडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण

सर्वबाह्यमंडल में सूर्य की एक मुहूर्त्त की गति

सर्वबाह्यमंडल की परिधि

मंडल की परिक्रमा करते हुए लगता समय $= \frac{३१८३१५ \text{ योजन}}{६० \text{ मुहूर्त्त}}$

= ५३०५ योजन १५।६० भाग १ मुहूर्त्त में सूर्य की गति।

सर्वबाह्यमंडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

सर्वबाह्यमंडल में सूर्य की १ मुहूर्त्त में गति × दिनमान का अर्धभाग

$= \frac{३१८३१५ \times ६ \text{ मुहूर्त्त दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$

$= \frac{१९०९८९०}{६०}$

= ३१८३१ योजन ३०।६० भाग सर्वबाह्यमंडल में दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण।

द्वितीय विधि—

$\frac{\text{परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$

$= \frac{३१८३१५ \times ६}{६०}$

$= \frac{१९०९८९०}{६०}$

= ३१८३१ योजन ३०।६० भाग सर्वबाह्यमंडल में दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण

१—उस-उस मंडल में सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति निकालने के लिये उस-उस मंडल की परिधि को ६० से भाग देने पर १ मुहूर्त्त की गति प्राप्त होती है।

२—दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण निकालने के लिये १ मुहूर्त्त को गति को (सूर्य की) दिनमान के अर्धभाग से गुणा करने पर जो लब्धि आये वह दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण जानना चाहिये। – सूत्र २३

।। दूसरा प्राभृत समाप्त ।।

सूत्र २४

सूर्य द्वारा प्रकाशमान क्षेत्र का प्रमाण

जब सूर्य सर्वाभ्यंतरमंडल में वर्तमान होता है तब जंबूद्वीप के कल्पित पाँच चक्रवाल में से डेढ भाग प्रकाशित करता है और एक भाग अप्रकाशित होता है।

जम्बूद्वीप में वर्तमान दोनों सूर्य की अपेक्षा पाँच चक्रवाल में से तीन भाग प्रकाशित करते हैं और दो भाग अप्रकाशित होते हैं। अर्थात् जम्बूद्वीप के कल्पित पाँच भाग में से तीन भाग दिन होता है और दो भाग रात्रि होती है।

जम्बूद्वीप के ३६६ भाग की कल्पना करने पर १ भाग (चक्रवाल) के ७३२ भाग होते हैं, ३ चक्रवाल के २१९६ भाग होते हैं। अर्थात् ३६६० भाग में से २१९६ भाग का दिवस होता है १४६४ भाग रात्रि होती है, अथवा दोनों सूर्य ६० मुहूर्त्त में १ मंडल की परिक्रमा पूर्ण करते हैं। जम्बूद्वीप के पाँच चक्रवाल की कल्पना करने पर १ चक्रवाल १२ मुहूर्त्तात्मक होता है। १२ मुहूर्त्त का काल जम्बूद्वीप के ३६६० भाग की कल्पना में ७३२ भागात्मक होता है।

सर्वाभ्यंतर मंडल से सूर्य जब सर्वबाह्यमंडल की ओर गमन करता है तब प्रतिमंडल में अहोरात्र में २।६१ भाग हानि-वृद्धि होती है।

सर्वाभ्यन्तर मंडल को कम करने पर सर्वबाह्य मंडल १८३ वां आता है। जिससे १८३ × २ करने पर ३६६/६१ भाग की हानि-वृद्धि अहोरात्र में होती है। अर्थात् ६ मुहूर्त्त दिवस में हानि और रात्रि में वृद्धि होती है। दोनों सूर्य की अपेक्षा १२ मुहूर्त्त की हानि-वृद्धि होती है। सर्वबाह्यमंडल में सूर्य १ भाग प्रकाशित करता है और डेढ़ भाग अप्रकाशित रहता है।

पूर्व में बताये गये अनुसार एक-एक सूर्य की अपेक्षा १ भाग दिवस और डेढ़ भाग रात्रि रहती है। दोनों सूर्य की अपेक्षा २ भाग दिवस और तीन भाग रात्रि होती है।

सर्वाभ्यन्तरमंडल में ३ भाग दिवस और २ भाग रात्रि होती है।

सर्वबाह्यमंडल में २ भाग दिवस और ३ भाग रात्रि होती है।

१ भाग १२ मुहूर्त्तात्मक जानना चाहिए।

जम्बूद्वीप के ५ चक्रवाल की परिकल्पना करने पर १ चक्रवाल १२ मुहूर्त्तात्मक होता है। क्योंकि दोनों सूर्य की अपेक्षा ६० मुहूर्त्त का काल ५ भागात्मक होता है।

।। तीसरा प्राभृत समाप्त ।—सूत्र २४ समाप्त ।।

सूत्र २५

तापक्षेत्र की संस्थिति

तापक्षेत्र की संस्थिति की आभ्यन्तर-बाह्य का परिक्षेप

९४८६ योजन ९/१० भाग है।

उसका गणित निम्न प्रकार है—

परिक्षेप =) (आयाम)^{२} × १०

=) (विष्कम्भ)^{२} × १० (उसका विष्कम्भ)^{२} × १०

= (१००००)^{२} × १०

=) १००००००००० × १०

=) १०००००००००

३ १ ६ २ २ ० ७ ७ ६

३ =) १०००००००००

३ ९

६१ १००

१ ६१

६२६ ३९००

६ ३७५६

६३२२ ०१४४००

२ १२६४४

६३२४२ ०१७५६००

२ १२६४८४

६३२४४७ ०४९११६००

७ ४४२७१२९

६३२४५४७ ०४८४४७१००

७ ४४२७१८२९

६३२४५५४६	०४२७५२७१००
६	३७९४७३२७६
६३२४५५५२	४८०५३८२४

७७६ एक हजार के अर्धभाग (५००) की अपेक्षा अधिक है। 'अर्द्धादूर्ध्वमेकं ग्राह्यम्' के विधान से पूर्व संख्या गिन कर व्यवहार से ३१६२३ योजन बतलाये हैं।

उनके तिगुने करने से ९४८६९ होते हैं। उनको १० से भाजित करने पर ९४८६ योजन ९/१० भाग सर्वाभ्यन्तर तापक्षेत्र संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर-बाहा का परिमाण है।

जम्बूद्वीप के परिक्षेप से सर्वबाह्य बाहा का परिमाण

परिक्षेप = (विष्कम्भ)^{2} × १०

जम्बूद्वीप का परिक्षेप प्रसिद्ध है। उसे ३ से गुणा करके १० से भाग देने पर ९४८६८ योजन ४/१० होते हैं।

जम्बूद्वीप का परिक्षेप ३१६२२७ योजन, ३ गव्यूति १२८ योजन और १३½ अंगुल है। परन्तु व्यवहार से ३१६२२८ योजन मानकर इसे गुणा करने पर ९४८६८४ योजन होते हैं। उनको १० से भाग देने पर ९४८६८ योजन ४/१० भाग सर्वबाह्य बाहा का परिमाण होता है।

उत्तर-दक्षिण दिशा से तापक्षेत्र का आयाम

आयाम = उत्तर-दक्षिण दिशा का अन्तर
विष्कम्भ = पूर्व-पश्चिम दिशा का अन्तर
तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३ योजन १/३ भाग है।
मेरुपर्वत में जम्बूद्वीपपर्यन्त ४५००० योजन है।

लवणसमुद्र के विस्तार का छठा भाग ३३३३३.३३३ योजन है। दोनों का जोड़ करने पर तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३.३३३ योजन होता है।

अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा का परिमाण

अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा का परिमाण ६३२४ योजन ६/१० भाग है।

मेरुपर्वत के परिक्षेप को २ से गुणा कर १० से भाजित करने पर आभ्यन्तर बाहा का परिमाण ज्ञात होता है।

मेरुपर्वत की परिधि ३१६२३ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४६ योजन होते हैं। उन्हें १० से भाग देने पर ६३२४ योजन ६/१० अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा आती है।

लवणसमुद्र की निकटवर्ती जम्बूद्वीप तक की अन्धकार संस्थिति की सर्वबाह्य बाहा

जम्बूद्वीप की परिधि के २ से गुणा कर १० से भाग देने पर सर्वबाह्य बाहा का परिमाण

प्राप्त होता है। जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२८ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४५६ योजन होते हैं। जिन्हें १०६३२४५ योजन ६/१० भाग सर्वबाह्य बाहा का परिमाण होता है।

अन्धकार संस्थिति की लम्बाई तापमान की लम्बाई जितनी जाननी चाहिए।

सर्वाभ्यन्तरमंडल में जो तापमान की स्थिति है वह सर्वबाह्य मंडल में अन्धकार की स्थिति जानना चाहिये।

सर्वाभ्यन्तरमंडल में जो अन्धकार की स्थिति है वह सर्वबाह्यमंडल में ताप की स्थिति जानना चाहिए। अर्थात् सर्वबाह्यमंडल में तापमान की आभ्यान्तर बाहा ६३२४ योजन ६/१० भाग है। सर्वबाह्य बाहा ६३२४५ योजन ६/१० भाग है। तापमान की लम्बाई ७८३३३.३३३ योजन है।

अन्धकार की संस्थिति सर्वबाह्य मंडल में आभ्यान्तर बाहा ९४८६ योजन ९/१० भाग है। शेष बाहा ९४८६८ योजन ४/१० भाग है। अन्धकार संस्थिति की लम्बाई ७८३३३.३३३ योजन है।

—सूत्र २५ समाप्त

॥ चतुर्थ प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र ३३

दसवें प्राभृत का दूसरा प्राभृत-प्राभृत

अहोरात्र के ६७ भाग की कल्पना करनी चाहिये।

अहोरात्र के ६७ भाग में से भाग संख्या	नक्षत्र संख्या	चन्द्र के साथ योग मुहूर्त	नक्षत्रनाम
२१	१	९ मु. २७/६७	अभिजित
३३ भाग १/२	६	१५ मु.	शतभिषा, भरणी, आर्द्रा आश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा
६७	१५	३० मु.	श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा भा० रेवती, अश्विनी, कृतिका मृगशिर, पुष्य, मघा, पू० फा० हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढा
१०० भाग १/२	६	४५ मु.	उ० भा० रोहिणी पुन० उ. फा. विशाखा. उत्तराषाढा०

उपर्युक्त कोष्ठक नक्षत्र का चंद्र के साथ कितने मुहूर्त का योग होता है, यह बतलाने के लिये हैं।

नक्षत्रों का सूर्य के साथ योग

नक्षत्र संख्या	सूर्य के साथ योग दिवस	मुहूर्त	नक्षत्रों का नाम
१	४	६	अभिजित
६	६	२१	शतभिषा, भरणी, आर्द्रा आश्लेषा, स्वाति, जेष्ठा
१५	१३	१२	श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा भा. रेवती, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मघा, पू. फा., हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल० पूर्वाषाढा
६	२०	३	उ. भा., रोहिणी, पुनर्वसु उ. फा., विशाखा, उ. षाढा।

जो नक्षत्र चन्द्रमा के साथ १ दिवस के ६७ भाग में से अथवा उससे विशेष जितने भाग गमन करता है, उसके पाँचवें भाग प्रमाण सूर्य के साथ दिवस और मुहूर्त के परिमाण से गमन करता है।

जैसे कि अभिजित नक्षत्र चन्द्र के साथ २१।६७ भाग गमन करता है तो सूर्य के साथ कितना गमन करता है? यह जानने के लिये २१ भाग को ५ से भाग देने पर ४ दिवस १।५ भाग मुहूर्त आते हैं। १।५ के मुहूर्त निकालने के लिये ३० से गुणा करने पर ६ मुहूर्त आते हैं। जिसका आशय यह हुआ कि अभिजित नक्षत्र सूर्य के साथ ४ दिवस ६ मुहूर्त योग करता है। इस प्रकार अन्य स्थान पर भी समझना चाहिये।

१५ मुहूर्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

शतभिषा नक्षत्र चन्द्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग में से ३३½ भाग योग करता है, तो सूर्य के साथ कितने दिवस और कितने मुहूर्त योग करता है?

$$\frac{६७}{२} \div ५ = \frac{६७}{२} \times \frac{१}{५} = \frac{६७}{१०}$$

अतः ६ दिवस ७।१० मुहूर्त्त सूर्य के साथ योग करता है।

.७ के मुहूर्त्त जानने के लिए ३० से गुणा करने पर २१ मुहूर्त्त आते हैं। अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का सूर्य के साथ ६ दिवस और २१ मुहूर्त्त योग होता है।

इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों के लिये जानना चाहिये।

३० मुहूर्त्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

श्रवण नक्षत्र चन्द्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग योग करता है तो सूर्य के साथ कितने समय योग करता है ?

सूर्य के साथ होने वाले योग का समय जानने के लिये चन्द्र के साथ होने वाले योग के समय को ५ से भाग देने पर जो भाज्य-भाजक भाव से उपलब्ध होता है वह नक्षत्र का सूर्य के साथ का योगकाल समझना चाहिये।

६७ ÷ ५ = १३$\frac{२}{५}$ दिवस

२।५ के मुहूर्त्त निकालने के लिये ३० से गुणा करने पर १२ मुहूर्त्त होते हैं। अतएव उस प्रकार से १३ दिवस १२ मुहूर्त्त अन्य नक्षत्र के साथ भी सूर्य का योगकाल जानना चाहिये।

४५ मुहूर्त्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

उत्तर भाद्रपद नक्षत्र चन्द्र के साथ $\frac{१०१}{६}$ भाग योग करता है। उसका सूर्य के साथ कितने समय योग होता है, यह समझने के लिये ५ से भाग देने पर $\frac{१०१}{६}$ × $\frac{१}{५}$ करने पर $\frac{१०१}{३०}$ आयेगा। उनके दिवस बनाने पर २० दिवस और ३ मुहूर्त्त समय होंगे। जो उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल है। —सूत्र ३४ समाप्त

।। दसवें प्राभृत का दूसरा प्राभृत-प्राभृत समाप्त ।।

सूत्र ४०

पूर्णिमा और अमावस्या का चन्द्र योग को अधिकार कर सन्निपात

पूर्णिमा	अमावस्या	कुल नक्षत्र	उपकुल नक्षत्र	कुलोपकुल नक्षत्र
१. श्रावणी	माघ	धनिष्ठा	श्रवण	अभिजित
२. भाद्रपदी	फाल्गुनी	उ. भाद्रपद	पू. भाद्रपद	शतभिषा
३. अश्विनी	चैत्री	अश्विनी	रेवती	
४. कार्तिक	वैशाखी	कृत्तिका	भरणी	
५. मार्गशीर्षी	जेष्ठा	मृगशिर	रोहिणी	

६. पौषी	आषाढ़ी	पुष्य	पुनर्वसु	आर्द्रा
७. माघी	श्रावणी	मघा	आश्लेषा	
८. फाल्गुनी	भाद्रपदी	उ. फाल्गुनी	पू. फाल्गुनी	
९. चैत्री	अश्विनी	चित्रा	हस्त	
१०. वैशाखी	कार्तिकी	विशाखा	स्वाति	
११. ज्येष्ठा	मार्गशीर्षी	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा
१२. आषाढ़ी	पौषी	उ. षाढा	पू. षाढा	

—सूत्र ४० समाप्त

॥ दशम प्राभृत का सातवाँ प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

दशम प्राभृत का दसवाँ प्राभृत-प्राभृत

सूत्र ४३

दक्षिणायन

मास	पौरुषी	वृद्धि
१. श्रावण	२ पाद ४ अंगुल	४ अंगुल
२. भाद्रपद	२ पाद ८ अंगुल	८ अंगुल
३. आसौज	३ पाद	१ पाद
४. कार्तिक	३ पाद ४ अंगुल	१ पाद ४ अंगुल
५. मार्गशीर्ष	३ पाद ८ अंगुल	१ पाद ८ अंगुल
६. पौष	४ पाद	२ पाद

उत्तरायण

मास	पौरुषी	हानि
१. माघ	३ पाद ८ अंगुल	४ अंगुल
२. फाल्गुन	३ पाद ४ अंगुल	८ अंगुल
३. चैत्र	३ पाद	१ पाद
४. वैशाख	२ पाद ८ अंगुल	१ पाद ४ अंगुल
५. जेष्ठ	२ पाद ४ अंगुल	१ पाद ८ अंगुल
६. आषाढ़	२ पाद	२ पाद

—सूत्र ४३ समाप्त

॥ दशम प्राभृत का दसवाँ प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

दसवें प्राभृत का २२ (बाईसवाँ) प्राभृत-प्राभृत

सूत्र ६२

नक्षत्रसंख्या		सीमाविष्कंभ भाग	नक्षत्र का नाम
	२	६३०	दो अभिजित
अर्धक्षेत्र नक्षत्र	१२	१००५	दो शतभिष यावत् दो ज्येष्ठा
समक्षेत्र नक्षत्र	३०	२०१०	दो श्रवण यावत् दो पूर्वाषाढ़ा
द्व्यर्धक्षेत्र नक्षत्र	१२	३०१५	दो उत्तराभाद्रपद यावत् दो उत्तराषाढ़ा

५६ (नक्षत्र के नाम दसवें प्राभृत के दूसरे प्राभृत-प्राभृत में देखें)
१ अहोरात्र के ६७ भाग की कल्पना करना चाहिये।

—सूत्र ६२ समाप्त।

सूत्र ७२ : बारहवाँ प्राभृत

संवत्सरों का प्रमाण

संवत्सर ५ प्रकार के कहे गये हैं—

१. नक्षत्र संवत्सर, २. चन्द्र संवत्सर, ३. ऋतु संवत्सर, ४. आदित्य संवत्सर, ५. अभिवर्धित संवत्सर।

१ नक्षत्र संवत्सर—नक्षत्र मास में २७ दिवस २१/६७ मुहूर्त होते हैं। नक्षत्रमास ११९ मुहूर्त २७/६७ भागात्मक है।

नक्षत्र संवत्सर के दिवस कितने ?—३२७ दिवस ५१/६७ भाग होते हैं। नक्षत्र संवत्सर ९८३२ मुहूर्त ५५/६७ भागात्मक है।

१ युग के ६७ नक्षत्र होते हैं।

१ युग के १८३० दिवस होते हैं।

नक्षत्रमास के दिवस ज्ञात करने के लिये १८३० को ६७ से भाग देने पर २७ दिवस २१/६७ भाग आते हैं।

नक्षत्रमास के मुहूर्त जानने के लिये १ दिवस के ३० मुहूर्त से नक्षत्रमास के दिवसों को गुणा करने पर मुहूर्तों की संख्या प्राप्त होगी—

$$\frac{१८३० \times ३०}{६७} = \frac{५४९००}{६७} = ८१९ \text{ मुहूर्त } २७/६७ \text{ भाग}$$

नक्षत्रसंवत्सर के दिवस ज्ञात करने के लिये नक्षत्रमास के दिवसों को १२ से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{१८३० \times १२}{६७} = \frac{२१९६०}{६७} = ३२७ \text{ दिवस } ५१/६७ \text{ मुहूर्त}$$

नक्षत्रसंवत्सर के दिवस होते हैं।

नक्षत्रसंवत्सर के मुहूर्त बनाने के लिये नक्षत्रसंवत्सर के दिवसों को ३० से गुणा करना चाहिये।

ऐसा करने पर $\frac{२१९६०}{६७} \times \frac{३०}{} = \frac{६५८८००}{६७} = ९८३२$ मुहूर्त ५६/६७ भाग नक्षत्रसंवत्सर के मुहूर्त हैं।

२. चन्द्रसंवत्सर

चन्द्रमास के २९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त हैं।
चन्द्रमास ८८५ मुहूर्त ३०/६० भागात्मक है।
चन्द्रसंवत्सर ३५४ दिवस १२/६२ मुहूर्तात्मक है।
चन्द्रसंवत्सर १०६२५ मुहूर्त ५०/६२ भागात्मक है।
१ युग के चन्द्रमास ६२ हैं।
१ युग के दिवस १८३० हैं।
१ चन्द्रमास के दिवस जानने के लिये १८३० को ६२ से भाग देना चाहिये।
१८३० ÷ ६२ = २९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त होते हैं।

चन्द्रमास के मुहूर्त जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसों की संख्या को ३० से गुणा करना चाहिये—

$$\frac{१८३० \times ३०}{} = \frac{५४९००}{६२} = ८८५ \text{ मुहूर्त } ३०/६२ \text{ भाग होते हैं।}$$

चन्द्रसंवत्सर के दिवस जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसों को १२ से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{१८३० \times १२}{६२} = \frac{२१९६०}{६२} = ३५४ \text{ दिवस } १२/६२ \text{ मुहूर्तात्मक चन्द्रसंवत्सर होता है।}$$

चन्द्रसंवत्सर के मुहूर्त जानने के लिये वर्ष के दिवसों को ३० से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{२१९६० \times ३०}{६२} = \frac{६५८८००}{६२} = १०६२५ \text{ मुहूर्त } ५०/६२ \text{ भाग होते हैं।}$$

३. ऋतुसंवत्सर

१ युग के ऋतुमास ६१ हैं।
१ ऋतुमास के दिवस ३० हैं।

१ ऋतुमास के मुहूर्त ९०० हैं।
१ ऋतुवर्ष के दिवस ३६० हैं।
१ ऋतुवर्ष के मुहूर्त १०८०० हैं।

४. आदित्यसंवत्सर

१ युग के आदित्यमास ६० हैं।
१ आदित्यमास के ३०$\frac{3}{5}$ दिवस हैं।
१ आदित्यमास के ९१५ मुहूर्त होते हैं।
१ आदित्यसंवत्सर के ३६६ दिवस होते हैं।
१ आदित्यसंवत्सर के १०९८० मुहूर्त होते हैं।

५. अभिवर्धितसंवत्सर

१ अभिवर्धित मास के ३१ दिवस २९ मुहूर्त १७/६२ भाग होते है।
१ अभिवर्धित मास के ९५९ मुहूर्त १७/६२ भाग।
१ अभिवर्धित संवत्सर के ३८३ दिवस २१ मुहूर्त १८/६२ भाग होते हैं।
१ अभिवर्धित संवत्सर के ११५११ मुहूर्त १८/६२ भाग होते हैं। —सूत्र ७२ समाप्त।

सूत्र ७३

नो युग के अहोरात्र का प्रमाण

	दिवस	मुहूर्त	बासठिया भाग	चूर्णित भाग
१. नक्षत्रसंवत्सर	३२७	२२	५१	५५/६७
२. चन्द्रसंवत्सर	३५४	५	५०	×
३. ऋतुसंवत्सर	३६०	×	×	×
४. आदित्यसंवत्सर	३६६	×	×	×
५. अभिवर्धितसंवत्सर	३८३	२१	१८	×
	१७९१	१९	५७	५५/६७

नो युग के मुहूर्त

१७९१ × ३० = ५३७३० + १९ = ५३७४९$\frac{1}{2}$ ५५/६७ चूर्णित भाग।
नो युग में कितने दिवस मिलाने पर युग पूर्ण होता है? —
३८ दिवस १० मुहूर्त $\frac{5}{2}$ भाग १२/६७ चूर्णित भाग मिलाने से युग पूर्ण होता है।
कितने मुहूर्त मिलाने से युग के मुहूर्त पूर्ण होते हैं?
३८ × ३० = १०४० + १० = ११ मुहूर्त
११५० मुहूर्त $\frac{5}{2}$ भाग १२/६७ चूर्णित भाग मिलाने पर युग के मुहूर्त पूर्ण होते हैं।

युग के दिवस कितने ?
१८३० दिवस ।
युग के मुहूर्त कितने ?
१८३० × ३० = ५४९०० मुहूर्त ।
५४९०० मुहूर्त के कितने बासठिया भाग होते हैं ?
५४९०० × ६२ = ३४०३८०० बासठिया भाग । — सूत्र ७३ समाप्त ।

।। बारहवाँ प्राभृत समाप्त ।।

सूत्र ७९

तेरहवाँ प्राभृत

चन्द्रमा की हानि-वृद्धि

शुक्लपक्ष में वृद्धि होती है और कृष्णपक्ष में हानि होती है ।
शुक्लपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की वृद्धि होती है ।
कृष्णपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की हानि होती है ।
चन्द्रमास का प्रमाण एवं चन्द्रमास के मुहूर्तों का प्रमाण सूत्र ७२ के अनुसार जानना चाहिये ।
शुक्लपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग हैं ।
कृष्णपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग हैं ।
एकपक्ष १४ दिवस ४७/६२ भागात्मक है । — सूत्र ७९ समाप्त ।

सूत्र ८०

१ युग में ६२ पूर्णिमा और ६२ अमावस्या होती हैं ।
अमावस्या और पूर्णिमा तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हैं ।
पूर्णिमा से अमावस्या तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हैं ।
पूर्णिमा से पूर्णिमा तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हैं ।
अमावस्या से अमावस्या तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हैं । — सूत्र ८० समाप्त ।

।। तेरहवाँ प्राभृत समाप्त ।।

सूत्र ८३

पन्द्रहवाँ प्राभृत

एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

एक मुहूर्त में चन्द्र उस-उस मंडल के १७६८ भाग गति करता है ।
१ युग के अर्धमंडल १७६८ हैं । १ युग के १८३० दिवस हैं ।
दो अर्धमंडल अर्थात् एक मंडल की परिक्रमा चन्द्र कितने रात्रि-दिवस में पूर्ण करता है ? यह ज्ञात करने के लिये —

$$\frac{१८३० \text{ दिवस} \times २ \text{ अर्धमंडल}}{१७६८ \text{ भाग}} = \frac{३६६०}{१७६८}$$

= २ दिवस १२४/१७६८ भाग आते हैं।

१२४/१७६८ भाग के मुहूर्त बनाने के लिये उन्हें ३० से गुणा करने पर--

$$\frac{१२४ \times ३०}{१७६८} = \frac{३७२०}{१७६८} = \frac{४६५}{२२१}$$

= २ दिवस २ मुहूर्त २३/२२१ भाग में चन्द्र एक मंडल पूर्ण करता है।

एक मुहूर्त की गति कितनी ?

६२ मुहूर्त २३/२२१ भाग में चन्द्र १०९८०० भाग (मंडल का परिक्षेप) गति करता है तो एक मुहूर्त की गति जानने के लिये -

$$\frac{२२१ \times १०९८००}{१३७२५} = \frac{२४२६५८००}{१३७२५}$$

१७६८ भाग
चन्द्र एक मुहूर्त में १७६८ भाग गमन करता है।
सूर्य एक मुहूर्त में १८३० भाग गति करता है।
सूर्य दो दिवस में एक मंडल पूर्ण करता है।
अर्थात् ६० मुहूर्त में १०९८०० भाग गमन करता है।
एक मुहूर्त में कितने भाग गमन करता है ?

$$\frac{१०९८००}{६०} = १८३०$$

सूर्य एक भाग में १८३० भाग गमन करता है।
नक्षत्र एक मुहूर्त में १८३५ भाग गमन करता है।
मुहूर्त जानने के लिये एक मंडल का संक्रमण काल निकालना जरूरी है।
१८३५ अर्धमंडल पूर्ण करने में १८३० दिवस लगते हैं।
दो अर्धमंडल पूर्ण करने में कितने दिवस लगते हैं ?

$$\frac{२ \times १८३०}{१८३५} = १ \text{ दिवस } १८२५/१८३५ \text{ मुहूर्त}$$

१८२५ भाग के मुहूर्त बनाने के लिये $\frac{१८२५ \times ३०}{१८३५}$

$$= \frac{५४७५०}{१८३५} = २९ \text{ मुहूर्त } ३०७/३६७ \text{ आते हैं।}$$

अर्थात् नक्षत्र को एक मंडल पूर्ण करने में १ दिवस २९ मुहूर्त ३०७/३६७ भाग समय लगता है।
अर्थात् ५९ मुहूर्त में ३०७/३६७ भाग समय लगता है।
अर्थात् ५९ मुहूर्त में १०९८०० भाग परिक्षेप करता है।
एक मुहूर्त में कितने भाग परिक्षेप करेगा ?

$$५९\frac{३०७}{३६७}$$

$$=\frac{२१९६०}{३६७}$$

$$\frac{३६७ \times १०९८००}{२१९६०}$$

= १८३५ भाग एक मुहूर्त में गमन करता है।

सूर्य-चन्द्र की गति में क्या विशेषता है ?
सूर्य-चन्द्र की अपेक्षा ६२ भाग विशेष गमन करता है।
सूर्य १८३० —चन्द्र १७६८ = ६२ भाग

जब चन्द्र गति समापन्न हो गया नक्षत्र की गति में क्या विशेष है ?
नक्षत्र ६७ भाग विशेष गति करता है। क्योंकि नक्षत्र १८३५ भाग गमन करता है।
चन्द्र १७६८ भाग गमन करता है।
नक्षत्र १८३५—चन्द्र १७६८ = ६७ भाग अधिक गमन करता है।

सूत्र ८५

नक्षत्रमास में चन्द्र कितने मंडल गति करता है ?

चन्द्र एक नक्षत्रमास में १३ मंडल १३/६७ भाग गति करता है। इसका कारण यह है कि एक युग के नक्षत्रमास ६७ हैं। चन्द्र मंडल ८८४ है। ६७ नक्षत्रमास में ८८४ चन्द्रमंडल चन्द्र गति करता है। एक नक्षत्रमास में कितने मंडल गति करता है ?

८८४ ÷ ६७ = १३ मंडल १३/६७ भाग गति करता है।
नक्षत्रमास में सूर्य कितने मंडल गति करता है ?
१३ मंडल ४४/६७ भाग गति करता है।
एक युग के ६७ नक्षत्रमास में ९१५ सूर्यमंडल की गति करे तो एक मास में कितने मंडल गति करता है ?

$$\frac{९१५}{६७} = १३ \text{ मंडल } ४४/६७ \text{ भाग गति करता है।}$$

नक्षत्रमास में नक्षत्र कितने मंडल गति करता है ?

एक युग के ६७ नक्षत्रमास में १८३५ अर्धमंडल गति करता है।

$\frac{१८३५}{६७}$ = २७ अर्धमंडल २६/६७ भाग

उनके मंडल बनाने के लिये २ से भाग देने पर

$\frac{१८३५}{६७} \div २ = १३ \frac{४६॥}{६७}$ मंडल

चन्द्रमास में चन्द्र कितने मंडल गति करता है ?
१२४ पर्व में ८८४ मंडल गति करता है।
२ पर्व में कितने मंडल गति करता है ?

$\frac{२ \times ८८४}{१२४} = \frac{१७६८}{१२४} = १४ \frac{३२}{१२४}$

१४ मंडल तथा पन्द्रहवें मंडल के ३२/१२४ भाग।
चन्द्रमास में सूर्य कितने मंडल गति करता है ?
१५ मंडल में चौथा भाग न्यून तथा १२४ भाग का एक अंश।
१४ मंडल तथा पन्द्रहवें मंडल के ९४/१२४ भाग।
वह किस प्रकार से ?
१२४ पर्व में ९१५ सूर्यमंडल गति करता है तो २ पर्व में कितने सूर्यमंडल गति करता है ?

$\frac{२ \times ९१५}{१२४} = \frac{१८३०}{१२४} = १४ \frac{९४}{१२४}$ मंडल गति करता है।

चन्द्रमास में नक्षत्र कितने मंडल गति करता है ?

१४ मंडल तथा १५ वें मंडल के $\frac{९४}{१२४}$ भाग।

१२४ पर्व में १८३५ नक्षत्र अर्धमंडल गति करता है।
तो २ पर्व में कितने नक्षत्र अर्धमंडल गति करता है ?

$\frac{२ \times १८३५}{१२४} = \frac{३६७०}{१२४} = २९ \frac{७४}{१२४}$

दो अर्धमंडल का एक मंडल होता है तो दो से भाग देने पर -

$\frac{३६७० \div २}{१२४}$ = १४ मंडल तथा ९९/१२४ भाग।

ऋतुमास में चन्द्र कितने मंडल गति करता है ?
६१ कर्ममास में ८८४ चन्द्रमंडल गति करता है।

तो कर्ममास में कितने चन्द्रमंडल गति करेगा ?

$\frac{८८४}{६१} = १४\frac{३०}{६१}$

१४ मंडल तथा पन्द्रहवें मंडल के ३०/६१ भाग ।
ऋतुमास में सूर्य कितने मंडल की गति करता है ?
६१ कर्ममास में ९१५ सूर्यमंडल गति करता है ।
१ कर्ममास में कितने सूर्यमंडल गति करेगा ?

$\frac{९१५}{६१} = १५$ मंडल गति करता है ।

ऋतुमास में नक्षत्र कितने मंडल गति करता है ?
१२२ ऋतुमास में १८३५ नक्षत्रमंडल गति करता है ।
तो १ ऋतुमास में कितने नक्षत्रमंडल गति करेगा ?

$\frac{१८३५}{१२२} = १५\frac{५}{१२२}$ मण्डल गमन करता है ।

सूर्यमास में चन्द्र कितने मण्डल गमन करता है ?
६० सूर्यमास में ८८४ चन्द्रमण्डल गति करता है ।
तो १ सूर्यमास में कितने चन्द्रमण्डल गति करेगा ?

$\frac{८८४}{६०} = १४\frac{११}{१५}$

१४ मण्डल पन्द्रहवें मण्डल का ११/१५ भाग ।

सूर्यमास में सूर्य कितने मण्डल गमन करता है ?
६० सूर्यमास से ९१५ सूर्यमण्डल गमन करता है ।
तो एक सूर्यमास में कितने सूर्यमण्डल गमन करेगा ?

$\frac{९१५}{६०} = १५\frac{१५}{६०}$

१५ मण्डल १/४ भाग ।

सूर्यमास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करता है ।
१२० सूर्यमास में १८३५ नक्षत्रमण्डल गमन करता है ।
तो १ सूर्यमास कितने नक्षत्रमण्डल गमन करेगा ?

$\frac{१८३५}{१२०} = १५\frac{३५}{१२०}$ मण्डल

१५ मण्डल १६वें के ३५/१२० भाग

अभिवर्धित मास में चन्द्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग के अभिवर्धित मास ५७$\frac{३}{१३}$ हैं।

क्योंकि एक अभिवर्धित मास के मुहूर्त पूर्व में बताये गये अनुसार—

९५९ $\frac{१७}{६२}$ मुहूर्त का एक मास।

$९५९ \times ६२ + १७ = \frac{५९४७५}{६२}$

युग के मुहूर्त १८३० × ३० = ५४९०० मुहूर्त। उनके ६२ भाग करना चाहिये
५४९०० × ६२ = ३४०३८०० भाग।
५९४७५/६२ मुहूर्त का १ अभिवर्धित मास होता है।
५४९०० मुहूर्त के कितने मास होंगे ?

$\frac{५४९०० \times ६२}{५९४७५} = \frac{३४०३८००}{५९४७५}$

५७ $\frac{१३७२५}{५९४७५}$ ५७ $\frac{३}{१३}$ (४५७५ से छेद चलता है।)

५७ अभिवर्धित मास ३/१३ भाग।

५७ $\frac{३}{१३}$ अभिवर्धित मास में ८८४ चन्द्रमण्डल गमन करता है।

तो १ अभिवर्धित मास में कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

५७ $\frac{३}{१३}$ = ७४४/१३ होते हैं।

७४४/१३ अभिवर्धित मास में कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

$\frac{८८४ \times १३}{७४४} = \frac{११४९२}{७४४} = १५ \frac{८३}{१८६}$

१५ मण्डल चन्द्र गति करता है। ८३/१८६ भाग।
अभिवर्धित मास में सूर्य कितने मण्डल गमन करता है।
एक युग के अभिवर्धित मास ७४४/१३ हैं, उनमें ९१५ सूर्यमण्डल गति करता है तो एक अभिवर्धित मास में सूर्य कितने मण्डल गमन करेगा ?

$\frac{९१५ \times १३}{७४४} = \frac{११८९५}{७४४} = १५ \frac{२४५}{२४८}$

१५ मण्डल तथा १६वें मण्डल में ३ भाग न्यून ।

अभिवर्धित मास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग के ७४४/१३ अभिवर्धित मास हैं । उसमें $\frac{१८३५}{२}$ मण्डल गमन करता है ।

तो एक अभिवर्धित मास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करेगा ?

$\frac{१३ \times १८३५}{२ \times ७४४} = \frac{२३८२५}{१४८८} = १६ \frac{[illegible]}{१४८८}$ मण्डल परिभ्रमण करेगा ।

—सूत्र ८५ समाप्त ।

सूत्र ८६

प्राभृत १५

चन्द्र रात्रि में कितने मण्डल परिभ्रमण करता है ?

एक युग के अहोरात्र १८३० हैं । उनमें १७६८ अर्धमण्डल गति करता है ।

तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमंडल गति करेगा ?

$\frac{१७६८}{१८३०} = \frac{८८४}{९१५}$ एक अर्धमण्डल के ३१ भाग न्यून गति करता है ।

सूर्य एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० हैं, उनमें १८३० अर्धमण्डल गति करता है । तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$\frac{१८३०}{१८३०} = १$ अर्धमण्डल गति करेगा ।

नक्षत्र कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० हैं । उनमें १८३५ अर्धमण्डल गति करता है । तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$\frac{१८३५}{१८३०} = १$ अर्धमण्डल ५/१८३० भाग गति करता है ।

एक मण्डल गति करने पर चन्द्र को कितना समय लगता है ?

८८४ मण्डल गति करने पर चन्द्र को १८३० दिवस लगते हैं तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगेंगे ?

$\frac{१८३०}{८८४} = २\frac{३१}{४४२}$ = दो दिवस और ३१/४४२ भाग में एक मण्डल गति करता है।

एक मण्डल सूर्य कितने रात्रि-दिवस में गमन करता है।

९१५ मण्डल गति करने पर सूर्य को १८३० दिवस लगते हैं, तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगते हैं ?

$\frac{१८३०}{९१५} = २$ अहोरात्र

नक्षत्र कितने दिवस में एक मण्डल गति करता है ?

१८३५/२ मण्डल गति करने पर नक्षत्र को १८३० दिवस लगते हैं तो एक मण्डल की गति करने पर नक्षत्र को कितने दिवस लगेंगे ?

$\frac{१८३०}{१८३५} \times २ = \frac{७३२}{३६७} = १\ \frac{३६५}{३६८}$

दो अहोरात्र में दो भाग कम
एक अहोरात्र के ३६७ भाग।

युग में चन्द्र कितने मण्डल गति करता है ?

चन्द्र एक मुहूर्त में मण्डल के १०९८०० भाग में से १७६८ भाग गति करता है। युग के मुहूर्त ५४९०० हैं।

एक मुहूर्त में १७६८/१०९८०० गति करता है। तो ५४९०० मुहूर्त में कितनी गति करेगा ?

$\frac{५४९००}{१०९८००} \times १७६८ = \frac{९७०६३२००}{१०९८००} = ८८४$

= ८८४ मण्डल गति करता है।

युग में सूर्य के मण्डलों की संख्या ?

अर्थात् एक युग में सूर्य कितने मण्डल गति करता है ?

सूर्य एक मुहूर्त में १८३०/१०९८०० भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूर्त में कितनी गति करेगा ?

$\frac{५४९०० \times १८३०}{१०९८००} = ९१५$ मण्डल गति करता है।

युग में नक्षत्रों की संख्या ?

अर्थात् एक युग में नक्षत्र कितने मण्डल गति करता है ?

नक्षत्र एक मुहूर्त में १८३५/१०९८०० भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूर्त में कितनी गति करेगा ?

$$\frac{५४९०० \times १८३५}{१०९८००} = \frac{१८३५}{२} = ९१७\frac{१}{२}$$ मंडल

९१७ मण्डल १/२ भाग गति करेगा ।

परिशिष्ट-२

सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
सूत्र २० व २४

सूरमंडलस्स आयाम-विक्खंभो परिक्खेवो बाहल्लं च

प. सूरमंडले णं भंते ! केवइयं आयाम-विक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ. गोयमा ! सूरमंडले अडयालीसं एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं[1] तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं चउवीसं एगसट्ठिभाए जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।

—जंबू. वक्ख. ७, सु. १३०

जंबुद्दीवे सूरिया पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति

प. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, अणागयं खेत्तं ओभासंति ?

उ. गोयमा ! नो तीयं खेत्तं ओभासेंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासेंति, नो अणागयं खेत्तं ओभासेंति ।

प. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेंति, अपुट्ठं ओभासेंति ?

उ. गोयमा ! पुट्ठं ओभासेंति, नो अपुट्ठं ओभासेंति जाव ।[2]

प. तं भंते ! किं एगदिसिं ओभासेंति, छद्दिसिं ओभासेंति ?

---

१. (क) सूरमंडले णं अडयालीसं एगसट्ठिभाए जोयणस्स विक्खंभेणं पण्णत्ते, —सम. ४८, सु. ३
(ख) सूरमंडलं जोयणे णं तेरसहिं एगट्ठिभाएहिं जोयणस्स ऊणं पण्णत्तं, —सम. १३, सु. ८

२. यावत् पद से संग्रहीत सूत्र
प. तं भंते ! किं ओगाढं ओभासेंति, अणोगाढं ओभासेंति ?
उ. गोयमा ! ओगाढं ओभासेंति, नो अणोगाढं ओभासेंति,
प. तं भंते ! किं अणंतरोगाढं ओभासेंति, परंपरोगाढं ओभासेंति ?
उ. गोयमा ! अणंतरोगाढं ओभासेंति, नो परंपरोगाढं ओभासेंति,
प. तं भंते ! किं अणुं ओभासेंति, बायरं ओभासेंति ?
उ. गोयमा ! अणुं पि ओभासेंति, बायरं पि ओभासेंति,
प. तं भंते ! किं उड्ढं ओभासेंति, तिरियं ओभासेंति अहे ओभासेंति ?
उ. गोयमा ! उड्ढं पि, तिरियं पि, अहे वि ओभासेंति ।

(क्रमशः)

उ. गोयमा ! नो एगदिसिं ओभासेंति, नियमा छद्दिसिं ओभासेंति ।[1]—विया. स. ८, उ. ८, सु. ३९, ४०

जंबुद्दीवे सूरिया पडुप्पन्नं खेत्तं उज्जोवेंति

प. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं उज्जोवेंति, पडुप्पन्नं खेत्तं उज्जोवेंति, अणागयं खेत्तं उज्जोवेंति ?

उ. गोयमा ! नो तीयं खेत्तं उज्जोवेंति, पडुप्पन्नं खेत्तं उज्जोवेंति, नो अणागयं खेत्तं उज्जोवेंति, एवं तवेंति, एवं भासंति जाव नियमा छद्दिसिं भासंति ।[2]

जंबुद्दीवे सूरियाणं ताव खेत्त पमाणं — विया. स. ८, उ. ८, सु. ४१-४२

प. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया केवइयं खेत्तं उड्ढं तवंति ? केवइयं खेत्तं अहे तवंति ? केवइयं खेत्तं तिरियं तवंति ?

उ. गोयमा ! एगं जोयणसयं उड्ढं तवंति,[3] अट्ठारसजोयणसयाइं अहे तवंति,[4] सीयालीसं जोयणसह-

---

प. तं भंते ! किं आइं ओभासेंति, मज्झे ओभासेंति, अंते ओभासेंति ?

उ. गोयमा ! आइं पि, मज्झे वि, अंते वि ओभासेंति,

प. तं भंते ! किं सविसए ओभासेंति, अविसए ओभासेंति ?

उ. गोयमा ! सविसए ओभासेंति, नो अविसए ओभासेंति,

प. तं भंते ! किं आणुपुव्विं ओभासेंति, नो अणाणुपुव्विं ओभासेंति,

उ. गोयमा ! आणुपुव्विं ओभासेंति, नो अणाणुपुव्विं ओभासेंति,

प. तं भंते ! कइ दिसिं ओभासेंति ?

उ. गोयमा ! नियमा छद्दिसिं ओभासेंति, विया. स. ८, उ. ८, सु. ३९ टिप्पण

[प. तं भंते ! किं एगदिसिं ओभासेंति, छद्दिसिं ओभासेंति ?

उ. गोयमा ! नो एगदिसिं ओभासेंति, नियमा छद्दिसिं ओभासेंति ।] (पाठान्तर)

१. जंबु. वक्ख. ७, सु. १३७

२. जंबु वक्ख. ७, सु. १३७

३. (क) जंबु. वक्ख. ७, सु. १३९

(ख) सूरिय. पा. ४. सु. २५

सूर्य के विमान से सौ योजन ऊपर शनैश्चर ग्रह का विमान है और वहीं तक ज्योतिष चक्र की सीमा है, अतः इससे ऊपर सूर्य का तापक्षेत्र नहीं है ।

४. जंबुद्वीप के पश्चिम महाविदेह से जयंतद्वार की ओर लवणसमुद्र के समीप क्रमशः एक हजार योजन पर्यन्त भूमि नीचे है, इस अपेक्षा से एक हजार योजन तथा मेरु के समीप की समभूमि से ८०० योजन ऊँचा सूर्य का विमान है, ये आठ सौ योजन संयुक्त करने पर अठारह सौ योजन सूर्य विमान से नीचे की ओर का तापक्षेत्र है, अन्य द्वीपों में भूमि सम रहती है । इसलिए वहाँ सूर्य का नीचे का तापक्षेत्र केवल आठ सौ योजन का है । अठारह सौ योजन नीचे की ओर के तापक्षेत्र के और सौ योजन ऊपर की ओर के तापक्षेत्र के, इन दोनों संख्याओं के संयुक्त करने पर १९०० योजन का सूर्य का तापक्षेत्र है ।

एसाइं दोण्णि तेवट्ठे जोयणसए एक्कक्कोसं च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरियं तवंति ।[1]

--विया. स. ८, उ. ८, सु. ४५

१, यहाँ तिरछे तापक्षेत्र का कथन पूर्व-पश्चिम दिशा की अपेक्षा से कहा गया है, अर्थात् उत्कृष्ट इतनी दूरी पर स्थित सूर्य मानव चक्षु से देखा जा सकता है ।

उत्तर में १८० योजन न्यून पैंतालीस हजार योजन तथा दक्षिणदिशा में द्वीप में १८० योजन और लवणसमुद्र में तेतीस हजार तीन सौ तेतीस योजन तथा एक योजन के तृतीय भाग संयुक्त दूरी से सूर्य देखा जा सकता है ।

अनध्यायकाल

[स्व० आचार्यप्रवर श्री आत्मारामजी म० द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत]

स्वाध्याय के लिए आगमों में जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल में स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियों में भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायों का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वरविद्या संयुक्त होने के कारण, इनका भी आगमों में अनध्यायकाल वर्णित किया गया है, जैसे कि—

दसविधे अंतलिक्खते असज्झाए पण्णत्ते, तं जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, निग्घाते, जुवते, जक्खालित्ते, धूमिता, महिता, रयउग्घाते।

दसविहे ओरालिते असज्झातिते, तं जहा—अट्ठी, मंस, सोणिते, असुतिसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराते, सूरोवराते, पडने, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे।

—स्थानाङ्ग सूत्र, स्थान १०

नो कप्पति निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करित्तए, तं जहा—आसाढपाडिवए, इंदमहापाडिवए, कत्तअपाडिवए सुगिम्हपाडिवए। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा, चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पडिमाते, पच्छिमाते मज्झण्हे, अडढरत्ते। कप्पइ निग्गंथाणं वा, निग्गंथीण वा, चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पुव्वण्हे अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।

—स्थानाङ्ग सूत्र, स्थान ४, उद्देशक २

उपर्युक्त सूत्रपाठ के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या, इस प्रकार बत्तीस अनध्याय माने गए हैं, जिनका संक्षेप में निम्न प्रकार से वर्णन है, जैसे—

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१. उल्कापात-तारापतन—यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

२. दिग्दाह—जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पड़े कि दिशा में आग सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

३. गर्जित—बादलों के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४. विद्युत—बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास में नहीं मानना चाहिए। क्योंकि वह

गर्जन और विद्युत् प्रायः ऋतु-स्वभाव से ही होता है। अतः आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नहीं माना जाता।

५. निर्घात—बिना बादल के आकाश में व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर, या बादलों सहित आकाश में कड़कने पर दो प्रहर तक अस्वाध्याय काल है।

६. यूपक—शुक्लपक्ष में प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनों प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

७. यक्षादीप्त—कभी किसी दिशा में बिजली चमकने जैसा, थोड़े-थोड़े समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अतः आकाश में जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

८. धूमिका-कृष्ण—कार्तिक से लेकर माघ तक का समय मेघों का गर्भमास होता है। इसमें धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध पड़ती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक यह धुंध पड़ती रहे, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

९. मिहिकाश्वेत—शीतकाल में श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्याय काल है।

१०. रज-उद्घात—वायु के कारण आकाश में चारों ओर धूलि छा जाती है। जब तक यह धूलि फैली रहती है, स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

उपरोक्त दस कारण आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय के हैं।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११-१२-१३. हड्डी, मांस और रुधिर—पंचेन्द्रिय तिर्यंच की हड्डी, मांस और रुधिर यदि सामने दिखाई दें, तो जब तक वहां से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आस-पास के ६० हाथ तक इन वस्तुओं के होने पर अस्वाध्याय मानते हैं।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, मांस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन-रात का होता है। स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक। बालक एवं बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमशः सात एवं आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४. अशुचि—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५. श्मशान—श्मशानभूमि के चारों ओर सौ-सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६. चन्द्रग्रहण—चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

१७. सूर्यग्रहण—सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमशः आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८. पतन—किसी बड़े मान्य राजा अथवा राष्ट्रपुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाहसंस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ न हो, तब तक शनः शनैः स्वाध्याय करना चाहिए।

१९. राजव्युद्ग्रह—समीपस्थ राजाओं में परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नहीं करें।

२०. औदारिक शरीर—उपाश्रय के भीतर पंचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पड़ा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पड़ा हो तो स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

अस्वाध्याय के उपरोक्त १० कारण औदारिकशरीर सम्बन्धी कहे गये हैं।

२१-२८. चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा—आषाढ-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव हैं। इन पूर्णिमाओं के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते हैं। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२. प्रातः, सायं, मध्याह्न और अर्धरात्रि—प्रातः सूर्य उगने से एक घड़ी पहिले तथा एक घड़ी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे। मध्याह्न अर्थात् दोपहर में एक घड़ी आगे और एक घड़ी पीछे एवं अर्धरात्रि में भी एक घड़ी आगे तथा एक घड़ी पीछे स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।